



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १२० म अंक १५ दिसम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ६० अंक १२०)



ई अंकमे अछि:-

१. संपादकीय सदेशे

२. गद्य



२.१. आशीष खनचिन्हार-माहिया

—



२.२. जगदीश प्रसाद मशडर-वशुकथा-अमानदार घुसखोब



२.३. प्रमोद बंशिन- प्रचल प्रयोग कअरथि नया कथिबाब- मधेसी मोर्चा
रौरररर ररर ररर ररर ररर ररर ररर

—

—



२.४.१. रामक्रिशास साहू -एकठुा रिहनि कथा- घुसहा घब २ कैलास दास-
नघुकथा-वाँज



२.३. सजौर कुमार शिमा- महाकरि प. वावदासक १३.७म जयती समारोह



२.७. सन्दीप कुमार साहनी- थामेकथा



२.१. उमेशि मल्लन- दोसब चवणक पहिन सगब बाति दीप जवय
दबलंगामे सम्पन्न- डिजिटल वर्कममे ३१ ठा पौथीक लोकार्पण

अ कनापब अपन मतर ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिद- की जेठैव आ की हेवा गेव (आमे गीत)- (आगा)



३.२. सन्दीप कुमार सांकी-करिता-कातिकक पूर्णिमा/ गामक अनाव



३.३. जगदानन्द प्रसा मनु



३.४. हेमनाबायण साह- हम छी नीमक गाछ



३.५. सुमनी कामत केव दुख गेष्ट करिता-सिया तरेर काका/ ठिठैबैत जाड



VIDEHA



३.७.१. बाजुदेर मण्डक तीन गोष्ट करिता-चिब प्रतीक्षा/ हाथ/ ठकं. मिहिर
मा- रिदागवी



३.१. पंकज चौधरी (नरेश)- चाकिण गजव



३.४. रिन्दुशिव ठाकुर- गीत-गजव-करिता



विदेह मैथिली पोथी डाउनलोड सागुठ



VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

विदेह अ-पत्रिकाक सबुष्ठा प्रवान अंक (ब्रैल, तिवहुता आ देरनागवी मे) पी.डी.एफ.
डाउनलोडक लेल नीचाक लिंकपर उपरल्लु अछि । All the old issues of
Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari
versions) are available for pdf download at the
following link.


विदेह अ-पत्रिकाक सबुष्ठा प्रवान अंक ब्रैल, तिवहुता आ देरनागवी कपमे Videha
e journal's all old issues in Braille Tirhuta and
Devanagari versions





VIDEHA


बिदेह ३-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक


बिदेह ३-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

 बिदेह आब.एस.एस.होड एनीमेटेबकेँ अपन साँघठ/ ब्रॉगपब लगाडु ।

 ब्रॉग "लेखाडुष्ट" पब "एड गाडजेष्ट" मे "होड" सेलेक्ट कए "होड यू.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप केनासँ सेहो बिदेह होड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडबमे पठरौ लेन <http://reader.google.com> पब जा क२ Add a Subscription ब्रँन किक कक आ खारी स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कक आ Add ब्रँन दरोड ।

 Join official Videha facebook group.

 Join Videha google groups

 बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साँघठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरबमे नहि देखि/ लिखि पारि बहन छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाड । संगहि बिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagari.net/>



<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रौंअमे ऑनलाइन देरनागरी
शेअप कक, रौंअसँ कापी कक आ रड डाकूमेन्टमे पेश्ट कए रड हाअनकेँ सेर
कक । विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क
कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/
Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best
view of 'Videha' Maitthili e-journal at
<http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA
Maitthili e magazine in .pdf format and Maitthili Audio/
Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/
रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हाअन सभ (उचावण, रड सुथ साव आ
दुरासकत मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउ ।

VI DEHA ARCHIVE रिदेह आर्काइव



जातिबन्धुन पुरी महकरि रिद्यापति । भावत आ नेपालक माष्टमे पसबन मिथिलाक
धवती प्राचीन कातिसँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक
महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैकबक पातरशि कातक मुर्ति, एहिमे मिथिलासकबमे (१२०० बरष पुरीक) अतिनेथ
अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माष्टमे पसबन एहि तबहक अग्याय प्राचीन
आ नर स्थापन, चित्र, अतिनेथ आ मुर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, खल्लेषण सर्गति रिदेहक सर्च-अंजन आ नूज सर्सिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसँसागठ सभक समग्र सर्कनक लेल देखु -रिदेह सूचना सर्पक खल्लेषण

रिदेह जानबुक्त डिस्कसन फोवमपव जाड ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुक्त) पव जाड ।

1. सर्पादकीय

१

रिदेह भाषा सम्मान 2012-13

खनुराद प्रबन्ध 2013, हारा प्रबन्ध 2012 आ 2013 फेलो (समग्र योगदान) क लेल रिदेह सम्मानक घोषणा

2013 फेलो (समग्र योगदान)क रिदेह सम्मान- श्री बाजनन्दन तालदास केँ । हारा प्रबन्ध 2012- श्रीमति ज्योति सुनीत चौधरीकेँ “अर्चिस” करिता-हाणकु संग्रह लेल ।
खनुराद प्रबन्ध 2013- श्री नरेशी कृमाव रिकनकेँ मवाठी उपन्यास “ययाति”क मैथिली खनुराद लेल ।

मूल प्रबन्ध 2012 आ रौत साहित्य प्रबन्ध 2

012 लेल रिदेह सम्मानक घोषणा पहिनहिये भ गेल अछि ।

रिदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (रैकल्पिक साहित्य अकादेमी प्रबन्धक रूपमे प्रसिद्ध)

1. रिदेह समानांतर साहित्य अकादेमी फेलो प्रबन्ध 2012

2012 श्री बाजनन्दन ताल दास (समग्र योगदान लेल)

2. रिदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (रैकल्पिक साहित्य अकादेमी प्रबन्धक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ रौत साहित्य प्रबन्ध - श्री जगदीश प्रसाद मन्डल केँ “तरेगन” रौत प्रेबक रिहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल प्रबन्ध - श्री बाजदेव मन्डलकेँ “अर्चिस” (करिता संग्रह) लेल ।

2012 हारा प्रबन्ध- श्रीमति ज्योति सुनीत चौधरीक “अर्चिस” (करिता संग्रह)

2013 खनुराद प्रबन्ध- श्री नरेशी कृमाव रिकन “ययाति” (मवाठी उपन्यास श्री रिष्णु सखाराम खल्लेक)



२

रुग्णिव नाथ रेश

एकठै लोकागतक रिद्यापति

भूमिका

महकरि रिद्यापतिपव “खोज”करैत कात हमवा लागत जे एक अध्यायक शीर्षक बाथ पडत- “खेतिहव-रौनिहाव आ रँहलमानक करि रिद्यापति” । काका पुर्णियाँ-सहवसाक अलाकामे आगयो रिद्यापतिक पदारणी गारि-गारि क' भार देथाक' नाटेरँनाक मलुनी सभ अछि । ई मलुनी सभक नायक महिसराव, चवराँह आ गाडीक रँहलमाने होग छथि प्रायः । मैथिल पल्लित लोकनिसेँ प्रुछनौ

। ङ कोना भेन ? रँजना, अहाँ कोन हेवामे पडत छी ? अही सभ मुर्खक काका आग रिद्यापतिक दुदुशा भ' बहन अछि । ई मामुनी लोक सभक मोनमे जखन एने रिद्यापतिक नामपव “चाबिष्ठा पदारणी” जोडि देनक । ..अहाँ दिग्भ्रमित भ' बहन छी । .. मिथिलाक पल्लितक रँजना-राणीपव कान-रात नै दैत हम सहर्ष सहवसा (रा सहर्षा ?) यात्राक तैयारी शुक क' देनौ । ..कनचीवा गाम एकठै एहन गाम अछि जगपव दु-दु जिलाक जिला अधिकारीक शोसन चलैत अछि । अदहा गाम सहवसामे, अदहा गाम पुर्णियामे ।

... कनचीवाक रिद्यापति-मलुनीक नाम दुनु जिलाक लोक लै छथि । ... जग दिन कनचीवा गाम प्रुछनौ, गाममे एकठै अघष्ट घष्टना घष्टित भ' गेल बँह । दस सातसेँ अलाकाक प्रतिनिधिरु करैरँना नेताजी चूनारमे चितंग भ' गेल बहथि । तग द्वारे ओग बाति नाच-गानक दोसरे मतनरँ निकारत जा सकै छन, ई डरे “रिद्यापति-मलुनी”क नायक जनकदास नाच कवरँक अनुमति नै देननि ।

दोसव बाति ओ रँहु खुशामद करेलाक रँद अनुमति देननि । नायक जनकदास रँहु तर्क-रितर्क केलाक रँद घुमा-फिवा क' दोहवा-तेहवा क' कहननि, “रिद्यापति- नाच” क जग हुनके पविरावमे पहिले-पहिल भेन । रिस्तावसेँ ओ कहियो किछ नै कहननि । आ हुनका जखन ङ रिश्वास भ' गेलनि जे “रिद्यापति नाच मलुनी”क नामपव खर्च कवरँनेन हजाव- दु हजाव ठाका सबकावक खजानासेँ त' क' हम नै रँहवाएत छी, तखन ओ मुदंगपव थाप देननि । बाति भवि नाच देखैत बहनौ । गाए चवरेरँना छौड़ । साडी पहीव रिवहिनी बाधा रँनि गेलि आ कानि-कानि गारँए लागलि- “कतेक दिसस हवि खेपरँ हो, त्रम एसकवि नावी ।” दोसव दिन, जनकदाससेँ ई नाचक उपेक्षिक अतिहास प्रुछनौ तँ ओ रँजना- नै जानि कहियासेँ ई नाचक मुनगैनी हमवा पविरावमे चलैत आरँ बहन अछि । जनकदासक ई उदासीक काका छन- हमव ठैपरैकाडव । .. चूप-चूप सभ



गीत ह्रीतामे थहाँ भवि न्नेनौ, चनाकीसँ । मर्गनीमे अपन काज सुतावि न्नेनौ थहाँ ?
था, थँतिममे पचास ठाँका नगदी देनाक राँदो ओ हमब ई प्रश्नक कोनो उतब नै
देननि कि खेतिहब-रौनिहाब, चबराह था रँहनमान सभ कहिया था केना रिद्यापतिक
पदारतीकेँ गारि-गारि नाचरँ प्राबन्ध केननि । जनकदासक पतानीमे प्रखावपब पडन बही
दिन भवि, ओकवा दया नै नगले । ओकब मसोमात जरान रँष्टी हमबा दिससँ पैवरी
केनक, तখনो ओ नै पसिमन, अपन खानदानीक “हँसी” कवरैरँना गप के “गजठ” मे
“छापी” कवारँ चाहत ? रँवहा जनकदास रँडद थोति चवरै न्नेन चति गेला । हम
ओकब पतानीमे पडन बहनौ था तकब राँदे एकठा थिम्सा सुननौ राँ सपना देखनौ राँ
“भ्रम”मे पडि गेलौ- ङ नै कहि सकै छी ।

३

की मैथिली मात्र मैथिल ब्रॉह्मणक भाषा छी ?

सेन्ट्रल हॉल स्टुडी ऑफ एन्डियन ट्रेडिशन- मैथिली साहित्यसँ ई संस्था की सरोकाब
छे ? रिद्यापति सेरा संस्थान था चेतना समिति बाजनेतिक संस्था थछि- पागरँना संस्कृत
था थरसुंठक रिद्यापतिक सानाना रिद्यापति परँ कवरँक थतिविङ्ग एकब सभक की काज
छे ? आँन एन्डिया मैथिली साहित्य समितिक पडँ सीयोकेँ पता नै छे जे ङ संस्था
छेहो राँ नै, जयकान्त मिश्रक मूलक राँद ई संस्थाक मान्यता रँवकबाब किए छे, की
जयकान्त मिश्रक मैथिली न्नेन कएन थहसानक पाविश्रमिक हुनकब रँष्टी-जमाए न२ बहन
छथि । थथिन भावतीय मैथिली साहित्य पविषद की थछि था एम.बी.बी.एस. डाकठब,
जिनका साहित्यसँ कोनो सरोकाब नै छहि, किए रँष्टक थषिकाब न्नेन ई ङुगन संस्थाक
पता अपन नामसँ दै न्नेन तेयाब भेन छथि । मिथिला सांस्कृतिक पविषद तँ
रिद्यापतिकेँ पागरँना ह्नाष्टे पहिवा क२ रिद्यापतिक नै मैथिलीक यङ्गापरीत संस्कार
कवरँक दोषी थछिये । तँ की ङ मैथिल ब्रॉह्मणक थँष्टी संस्था सभ मैथिलीकेँ मैथिल
ब्रॉह्मणक भाषा रँनरँ न्नेन (साहित्य थकादेमी दिल्लीमे) मात्र रँष्ट था कङ्कक बाजनीतिक
थन्तुआत साहित्य थकादेमीक मैथिली कन्ननब चुनरँक न्नेन संस्थाक कपमे काज क२ बहन
थछि, था तँ थस्तिये थछि ?

की मैथिली मात्र मैथिल ब्रॉह्मणक भाषा थछि ?

साहित्य थकादेमी, दिल्लीक प्रबन्धक रँष्टरावा (। । ।) देखी तँ उतब की थछि ?

(हुन रँष्टरावा ४३ रँब- २०११ धवि)

मैथिल ब्रॉह्मण -३७ रँब । ।

कायस्थ-३ रँब

बाजपुत-२ रँब



गएब सर्ग- 0000 रैब । । । ।

१९७७- यशोधर ना (मिथिला रैभर, दर्शन) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९७८- यात्री (पत्रहीन नग्न गाछ, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९७९- उपेन्द्रनाथ ना “रगस” (दू पत्र, उपन्यास) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१०- काशीकान्त मिश्र “मधुप” (बाधा रिबह, महाकार) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९११- सुरेन्द्र ना “सुमन” (पयस्विनी, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१२- ब्रजकिशोर रमा “मणिपद्म” (नेका रनिजावा, उपन्यास) कर्ण कायस्थ

१९१३- गिरीन्द्र मोहन मिश्र (किछ देखत किछ सुनत, संस्वरण) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१७- रैद्यनाथ मल्लिक “रिधु” (सीतायन, महाकार) कर्ण कायस्थ

१९११- बाजेन्द्र ना (खरहर्ष: उद्धर ओ रिवास, समालोचना) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१४- उपेन्द्र ठाकुर “मोहन” (रौजि उठत झवनी, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१६- तन्वनाथ ना (पुष्ट चरित, महाकार) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१०- सुधाशु शेखर चौधरी (ग रतहा संसार, उपन्यास) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९११- मार्कण्डेय प्रसादी (अगमनाथिनी, महाकार) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१२- निनी रे (मबीचिका, उपन्यास) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१३- चन्द्रनाथ मिश्र “अमर” (मैथिली पत्रकाबिताक अतिहास) मैथिल ब्रॉडकास्ट

१९१४- आवसी प्रसाद सिंह (सूर्यकाशी, पद्य) गएब ब्रॉडकास्ट- बाजपुत

१९१३- हविमोहन ना (जीवन यात्रा, आमेकथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट



VIDEHA

- १९५७- सुभद्रा ना (नातिक पत्रक उन्नव, निरंख) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९५९- उमानाथ ना (खतीत, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९५९- मायानन्द मिश्र (मंत्रपत्र, उपन्यास) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९५९- काशीनाथ ना “किबणा” (पवाशिव, महाकार) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६१- बामदेव ना (पसिनेत पाथव, एकांकी) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६२- भीमनाथ ना (रिदिधा, निरंख) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६३- गोरिनंद ना (सामक पौती, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६४- गंगेशी र्जन (उचितरजा, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६५- जयमन्त मिश्र (करिता कस्मांजलि, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६७- बाजमोहन ना (खाग कालि पवसू, कथा संग्रह) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६९- कीर्ति नावायण मिश्र (प्रसु होगत शान्तिद्वय, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६९- जीरकान्त (तके खडि चिड, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- १९६९- साकेतानन्द (गणनायक, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- २०००- बमानन्द रेष (कतेक बास रात, पद्य)कर्ण कायस्थ
- २००१- रंखुआजी ना “खड्गत” (प्रतिज्ञा पाल्दर, महाकार) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- २००२- सोमदेव (सहस्ररुखी चौक पव, पद्य) कायस्थ
- २००३- नीवजा रेष (धतुववा, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
- २००४- चन्द्रभानु सिंह (शिरुनुना, महाकार) गणव ब्रॉडकास्ट- बाजपूत



- २००३- रिकेकानन्द ठाकुर (चानन घन गड्डिया, पद्य) मैथिल ब्रॉडकास्ट
२००७- रिभूति खानन्द (काठ, कथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
२००१- प्रदीप रिहारी (सरोकाव, कथा) कर्ण कायस्थ
२००४- मन्नेश्वर ना (कतेक डारि पव, आमेकथा) मैथिल ब्रॉडकास्ट
२००६- सुमनमोहन ना (गंगापत्र, कथासंग्रह) मैथिल ब्रॉडकास्ट
२०१०- श्रीमति उमाकिरण खान (भामती, उपन्यास) मैथिल ब्रॉडकास्ट
२०११- श्री उदयचन्द्र ना "रिनोद" (अपम, करिता संग्रह) मैथिल ब्रॉडकास्ट



गजेन्द्र ठाकुर

ggaj_endr_a@videha.com

अपन मतेर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।

२. गद्य



२.१. आशीष खनचिह्वाव-माहिया

—



२.२. जगदीश प्रसाद मण्डव-वधुका-अमानदाव घुसखोव



२.३. प्रमोद बिशुने- प्रचलु प्रयोग कअनथि नया हथियाव- मधेसी मोर्चा
बैरकथ रैनअ नेन भुअ गेन तैयाव

—

—



२.४.१. बामरिनास साह -अकठु रिहनि कथा- घुसहा घव २
नघुका-वाँज



२.५. संजुीर कुमाव शिमा- महाकरि प. वावदासक १३.७म जयती समारोह



२.७. सन्दीप कुमाव साहा- आमेकथा



२.१. उमेश मल्ल- दोसब चवणक पहिन सगब बाति दीप जवय दबलंगामे सम्पन्न- डिजिटल फॉर्ममे ३१ टा पौथीक लोकार्पण



आशीष खनचिन्हाव- माहिया

हम प्रयासबत छनहुँ जे नघु-दीर्घ निर्णय भाग-२ एही अंकमे आरैए छुदा कनेक नमहब चर्चा हेरौक कावणे रैसी समय लागि बहन छै..... तँए ई थेप एकटा नर रिधापब गप्प करी । ई रिधाक नाम थिक " माहिया " । अ रिधा मुनतः पंजारी साहित्य केब थिक आ पंजारीसँ उदुमे आएन आ तकवा रौद सब भाषामे पसबन । अ रिधा मात्र तीन पाँति केब होगत छै जाहिमे पहिन पाँतिमे 12 मात्रा दोसबमे 10 मात्रा आ फेब तेसबमे 12 मात्रा होगत छै आ सङ्ग-सङ्ग पहिन पाँति आ तेसब पाँतिमे काहिया (तुकान्त) होगत छै... तँ देखी एकब संवचनारै-----

पंजारीमे माहियाक पहिन पाँतिक संवचना अधिकारितः 2211222 अछि मने दीर्घ-दीर्घ-नघु-नघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ ।

तेनाहिते दोसब पाँतिक संवचना अछि 211222 दीर्घ-नघु-नघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ

आ फेब तेसब पाँतिक संवचना पहिन पाँतिक रँवारँब अछि मने 2211222 मने दीर्घ-दीर्घ-नघु-नघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ ।



ओना ग्रा अपिकारी संवचना अछि । ईकेँ अतारै किछु हेड-हेडक संग आन-आन संवचना सेहो भेटैत अछि । झुदा ग्रा निश्चित छै जे हरक पाँतिमे दीर्घक रैसी संथा बहने नयमे ग्रा खुरै आरि जागत छै

माहिया छन्दमे अर्थक चारि तबरे रिस्तार होगत छै...

- १) या तँ पहिन आ दौसव पाँति मिति कए एकठा अर्थकेँ धनित करै आ तेसव पाँति अलग बहै,
- २) या तँ दौसव पाँति आ तेसव पाँति मिति कए कएठा अर्थकेँ धनित करै आ पहिन पाँति अलग बहै,
- ३) या तीनु पाँति मिति कए एकठा अर्थकेँ धनित करै
- ४) या दौसव पाँति एहन होग जे पहिनो पाँति सङ्ग मिति अलग अर्थ दै रा तेसव पाँति सङ्ग मिति अलग अर्थ दै ।

माहिया छन्दक स्थायी अभाव त्रुगाँव बस थिक झुदा आधुनिक समयमे ग्रा हरक रिषयमे लिखत जागत अछि । उदाहरण स्वरूप देखु हमव दुष्ठा माहिया---

१) तीवसँ ने तबखारिसँ

हम डरै छी आरि

हुनक नजबिकेँ मारिसँ

२) डोलैए मोन हमव



VIDEHA

उठन आँखिसँ भाग

करेज मथैए हमब

मैथिलीमे ग्रा माहिया छन्द अत्रात अछि.. आउ एकरो आगु रैठ एत जए..... खास कए जे करि श्रृगाव बसमे लीजन बह छथि ।

ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद म्ाडव

वधुक्था-

अमानदाव घुसखोब

छुनछुन रौरूकेँ सभ जनैत, चाहे ओ आम आदमी होथि रा कचहरीक रकीन, म्ाशी, किवानी, चाहे अनठैनिजेन्स रिभागक अहसब होथि रा प्रशासनिक, जे ओहन घुसखोब जिनो भविमे कियो नै छथि म्ादा ग्राहो सभ जनैत छथि जे जिनगीमे कहियो अपन अमान नै डिगौरनि ।

जिनो सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज छुनछुन रौरू छथि । अना हुनकब असन नाँ सुबेन्द्र प्रसाद छियनि म्ादा दादीक पहिन पोता बहने उपहाव देन नाँ



চুনফন ছিযনি জে পছাতি রাঁবু জোড় ৷ গেলনি । উর্ফ কএ ক২ খপনো চুনফন রাঁবু নিখতে ছিযি জে নেমপ্নেঠমে সেহো ড়নহি । ওনা রঁহুতো, প্রেমচাঁদ খা দিনকবজী সন ভেদাহ জিনকব খসলী নাওঁসঁ রঁেসী লোক উপনামেকঁ জনেত ড়নহি ।

রঁচচেসঁ চুনফন রাঁবু গমানদাবীক নিরঁহন কৰেত খাএন ছিযি জেকব ফনাফন সেহো জীরিতেমে ভেঠ বহন ড়নহি । পঠ-নিখেমে এতে গমানদাব বহনাহ জে কহিযো মৌত্রিক বচনা ছোড়া নোঠ-ফোঠক সনাবা নে লেননি । জগসঁ সন্ত দিন নীক বিজরুঠ হোগত বহননি । ওনা স্বভ্যস্তুত পবিরাব বহনে কহিযো খর্থক খভার সেহো নহিযে ভেদনি । ফুদা খপনো পঠ-মে এতে গমানদাবী বখেত ড়নাহ জে শিক্ষকসঁ পবিরাব পবি নজবিমে বহনাহ । এম.এ. এন.এন.রী. কএ প্রথম শ্রেণী জিলা সত্র ন্যাযাধীশি রঁননাহ ।

চাবি ভাঁগক রাঁচ সএ রাঁঘাসঁ ডুপরে জমীন ড়নহি জগমে তীন ভাঁগ নোকবী করে ছিযি খা এক ভাঁগ দেবনন্দ প্রসাদ গিবহস্তুখী করে ছিযি । গিবহস্তুখী খর্থ খালী খেতিযে কবরঁ নে, রঁলকি পবিরাবকঁ সঁচারিত কবরঁ সেহো হোগত, জে ড়ননি । নোকবিহরো ভাঁগ সন্তকঁ নে বুনিন পড়নি জে খানদাবী পবিরাবমে কনিযো কতো ঘুন-ঘান খাকি দিরাব-গবাড় লাগত খছি । পবিরাবক ঐ কাজমে চুনফন রাঁবুক রিচাব কাজ কেদকনি । ওহএ কহনখিন জে জখন হম সন্ত তীন ভাঁগ নোকবী করে ছী তখন খেত খা পবিরাব দেবনন্দক ভেদনি, জগ দিন হমসন্ত বিষ্টাযব ভেদাপব খাএরঁ তগ দিন খগিনা রিচাব কবরঁ । মনমে গ্ৰহো বহনি জে জখনে হম সন্ত খেত রাঁষ্ট লেরঁ তখনে টেব তবহক রিঁগবা উঠত । এক তাঁ ওহিনা জমীন জাত ছী তগপব ভৈযাবীক তাঁ খারো মহাজাত । জে সম্পতি খাগ পবি মান-প্রতিষ্ঠা রঁনন বহন খছি রহএ গাড়া-ঘেঘ রঁনি সন্তকঁ ধোং-পোছি একরঁষ্ট ক২ দেত । জখন জিনগীমে মানে-প্রতিষ্ঠা নে তখন জিনগীযো তাঁ একসপাযব ডেঠক দরঁগসঁ রঁেসী কিছ নে ।

এক তাঁ খ হুনা সমএ নিপাবিত খছি জে কতে উমেবমে রঁেঠক রিঁখাহ খা কতে উমেবমে রঁেঠক রিঁখাহ কবক চাহী, তছমে দেহক লক্ষণ খাগুমে ঠাঠ ভ২ জাগ টে । সে স্ববনন্দক পিতা গৌড় নাখ সেহো কেদনি । জখন স্ববনন্দ প্রসাদ রাঁ.এ.মে পঠতে ড়নাহ তখনে রিঁখাহ ক২ দেদখিন । কহনে তাঁ গ্ৰহো খছি জে জখন পঠ-নিখি খপনা পএবপব ঠাঠ ভ২ জাগ তখন রিঁখাহ করিক চাহী, ফুদা জগঠাম পএবপব ঠাঠ হোগক রঁেরস্তুখে নে বহত তগঠাম কি সন্ত খরিরাহিত রঁনি রঁরাজিযে ভ২ জাগ । কওনেজক খরস্থামে স্ববনন্দ প্রসাদ বহখি ফুদা মিসিযো ভবি মনমে নে উঠনি জে খখন রিঁখাহ খব্বচিত হএত । সাহিত্যসঁ দিগচস্পী বহরঁে কবনি তছমে মধ্যহাগীন সাহিত্যসঁ রঁেসী বহননি তাঁ মনমে চপ-চপিয়ে বহনি । পিতোক মনমে কহিযো দহেজক লোভ নে উঠনি জে নীক শিক্ষা পাঁরি নীক নোকবী ভেঠদাপব নীক



दहेजो भेटै छै । सामान्य गिबहसूत परिवार जकाँ अपन दायित्व रूमि समेपव काज समेटै लेलनि किछ अ मनमे उठतनि जे रैथोकै पढ़मे राधा उपस्थित हेतनि । तँ ए मन खुशीसँ खुशियागते बहनि ।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखन सुरेन्द्र पढ़त छल तखन जौंथा रैथी भेल । लेहरमे पनी बहनि । ओना साने भविष्य द्वागमन भइ गेल बहनि । जौंथा रैथी देखि माएक मनमे तँ कनी सोगो पैसलनि झुदा नानीक मनमे तते खुशी बहनि जे सोला खाना नातिने पाछु रैहार बहए नगरी । खुशीक कावष बहनि जे तेहेन जुग-जमाना भइ गेल छुट्टि जे खनेरे लोक रैथोक खाशी करैए, तगसँ नीक रैथये । जँ रैथोकै नाति नहिये देखत तैयो जँ दुनु रैथोक जिनगी-जान बहने तँ कहियो माएकेँ थोड़े दाराग-दाक खाकि कपड़ १-नत्राक दुख हूखए देत । अपनो पहिबन जँ दैत बहते तैयो सब दिन हवाएने बहत । तद्वमे तेहेन कपड़ १ सब रनि बहन छुट्टि जे तीन सार तक नरेँ बहए, खा चरत कते दिन तेकब कोनो ठीक छै । सुगठब रिनैक नुबि सिखा देरै, भवि रौंहिसँ नइ कइ खापारार्थिक तते दैत बहते जे दस-दसठि साँठि कइ पहिबत । कि कबते मायक जाड़ । ओना सुरेन्द्रक मायक मनमे सेहो खुशिये बहनि जे भगरान अपना कोथिमे रैथी ले देलनि तँ कि हेते पौतीक कन्यादानक रैथी तँ खुजिये गेल । जे नाबी एकोठि कन्यादान ले केरक ओ चाहे जे हूखए झुदा मायक एक सूत्रमे कम जकब बहत ।

जिना सत्र न्यायालयक न्यायाधीश रनि जुखागन कबए सुरेन्द्र प्रसाद खाग जेतह । खसीबराद दैत मागयो खा पितो कहलनि-

“रौंथा, नमहब काजक भाव उठरै जेरह तँ ए नमहब रनि काज कबिहह ।”

माता पितक खसीबराद सुनि सुरेन्द्र किछ ले राजत झुदा मनमे एकठि प्रश्न घुबिखाए नगलनि, जे माए रूमि गेलनि । तैसत कहलनि-

“रौंथा, सब दिन एकाब रनि पढ़लह-लिखलह झुदा अपन परिवार अपने खागु नीक होग छै तँ ए पनियो खा चाक कनष्टवरियोकेँ संगे लेने जाह ।”

सोनामे गौड़ नाथकेँ देखेत तँ ए सुरेन्द्र किछ राजए ले चाहत झुदा मन गनगनागत जे माए रूमि गेलनि । रँजनीह-

“रौंथा, अपन रँचुआकेँ अपने देख-रेखमे पढ़ १एरँ रैसी नीक होग छै, सेहो हेतह, खाग-कालि देखे छिई दुधे नगसँ रँचुआ ठुठ जाग छै । दोसब हमरा सरहक खाशी कते दिन करै छह, सेहो सीखत ले बहतह तँ खगिनाकेँ कि सिखेरहक । मनमे



होगत हेतह जे पिता कि कहताह झुदा नोकबीक अर्थ तँ ए ने ने होग छै जे गामे छोड़ा देरै, पबिरावे छोड़ा देरै । मौका-झुनासिरँ अरैत-जागत बहिनह । रैठै धन छिखह, तोवा मात्र-जान जकाँ थोड़े डोबी रान्हि बाखन जाएत । ए होगत हेतह जे पबिराव छुँटै जाएत, से भ्रम हेतह । भदराबि मासमे हिमानयक पानिक मितान समुद्रसँ भ२ जागत अछि जे खनदिना माने खान मोंसममे धाव कमजोव रा सुखने छुँटै जागत अछि झुदा हेब भदराबिमे कि देखै छहक । पबिराव एक धाव छी जेकव प्रराह सर्च्छ परित्र रँनि खनरवत सामाजिक दिशामे रँहत बहए यएह ने भेन । छाती सक्रत कए क२ घबसँ जाह ।”

अखन धबि सुरेन्द्र प्रसाद छाती सक्रत कवरँक अर्थ खानी कहारते धबि बुनेत छन झुदा मागक असीवरादक शिर्द मनमे हौँड माबनकनि । छाती सक्रत कवरँ रौता-रौतामे सक्रत कवरँ आकि काजमे सक्रत कवरँ, रिचाव सक्रत कवरँ आकि परित्र रिचाव सक्रत कवरँ, परित्र रिचाव सर्ग परित्र जिनगी सक्रत रँना चरँ आकि सक्रत मनुष्य रँनरँ । समुद्रक पानि जकाँ जते डुरँफनियाँ मारैत तते अथाह दिस डुमन जागत । खनायास मनमे उठँननि, आएन शुभक नगनमा शुभे हे शुभे... । मागक शुभ रौत सुनि शुभेकम्फु नजबिसँ दनदनागत सुरेन्द्र रौजन-

“माए, तोहब असीवराद शिरोधार्य अछि । झुदा समस्यो तँ जिनगीक रौपक रँनि दानर जकाँ अरैत बँह छै ।”

आनो सुरेन्द्र खुशीमे दहनि गेन छन जगसँ ई रिचावपब नजबि ने गेननि जे रँडका जंगनक कातमे पहिने न्नाड़े-नुड बँह छै जगमे छोँट-छोँट जानरब रौस करैत अछि । तहिना ने मनुक्खोक रौन छै जगमे पहिने छोँटका जीर-जन्तु बँहत छै ।

चुपचाप भेन पितक मनमे नचैत जे जूबशीतनक अछीजन जकाँ, घबसँ निकनि दोसबाक सेरामे जा बहन अछि कि ओकवा रँसागत आकि उजाड़त । झुदा रिन्न गहन नगने खनुमानिते ने छएरँ ।

जहिना कओनेजक पहिन दिन, सासुबक पहिन भैँठ, दोस्तीक पहिन मितन भेने सुरत: द्वाद ए डगमगाए नगैत, जे सुरेन्द्रा प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचते हुँअ नगननि । नर-नर सर्गी सब आरि-आरि भैँठ कबए नगननि । सर्गियो रँसी ओहन ने, जे समतुन हुँअ । झुदा सुरेन्द्र अराक । सोने नमस्कारक उभव नमस्कारमे दैत बहनाह । मात्र हाजबी रँनाएरँ छननि तँए काजक भारो रँसी नहिसे । सर्गी सब कमिते असकरे बहि गेनाह । मनमे पबिराव आ दबमाहा सर्गे सोना-सोनी उठँननि । दबमाहा तँ



सीमित परिवारक स्तवक हिसारसँ रनेत छै, तहमे जे देशे जेहेन बहन ओकब ओग तबहक रने छै । पाँच गोष्टेक परिवारमे छह गोष्टे अखने छी । तहमे चाबिष्ठा रैष्टिये अछि । समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सराबी कसरे कबत । घब भाड १, रिजनी-पानि, अन्कम टैक्स अत्यादि कष्टिये जाएत तखन हाथमे कते खाओत ? महगी अपना चानिये चनरे करै छै । तहमे तेहेन नरुडन डेग पकड़ा लेने अछि जे मध्यरगीय जीरन पावक मोनि जकाँ चकलौब नर बहन अछि । मन रिषसँ रिसागन हुअ नगरनि । ओना काज नै बहने कार्यालय समेसँ पहिने छोटार पहिन दिन उचित नै हएत । कबसक नरुड १पब नरुड १ अष्टकौने अकास दिस देखेक कोशिणी करैत बहनि नरुदा कार्यालयक छतमे बोकान बहनि ।

चाबि रजे कार्यालयसँ निकनि सुरेन्द्र प्रसाद सोने डेवा दिस रिदा भेनाह । बग-रिबगक ठीका-ष्टिपष्णी बस्तामे नोगत । किछ नीको किछ अखनो । पबदेशिमे पति कमेताह, से खुशी पनी सुनेनाके बहरे कबनि । चाक रैष्टीक रीच सुनेना यम्किणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिष्का रैब-रैब नजबि उठा-उठा करैत । ओसावपब पतिके पहुँचते सुनेना नरुदकी भवत नजबिक तीब छोटननि । पगनाएत मन सुरेन्द्र प्रसादक । जिनगीक समस्यसँ पगनाएत । ओना कियो खुशियोसँ पगनागत अछि तँ कियो दुखोसँ । नरुदा सुरेन्द्र पगनाएत बहनि अपन आगुक जिनगीक समस्यसँ । अपनारके संयमित करैत रैष्टीक हाथ पकड़ने कोठबी पहुँचना । पनी चाह अनरनि । दूनु गोष्टे चाह पीरैत गप-सप शुक केरनि । अपन आमदनी देखरैत सुरेन्द्र रजनाह-

“अपन परिवार भेन जेकब आमदनी सभबि हजार महिना भेन, तहमे घब भाड १, अन्कम टैक्सक संग कतेको जमा करैक सूत्र लागत अछि । घब केना चनत से तँ अपने दूनु गोरे ने रिचावर ।”

जेना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोष्ठा पनीपब पष्टकए चाहनि तहिना पनी भोनी-रौनक गेन जकाँ उनठरैत रजनीह-

“देखु हमब कन-खनदान एहेन नै बहन जे केकरो अधिकार छीनत । जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेन आ जे हमब छी ओ हमब भेन । छह मास पछाति पेटक रँचक दूख मागये बूनेत अछि रीप थोडे बूमत । आकि कहियो किछ कहरो केनौ ।”

दू-हत्थी रौन केकैत सुरेन्द्र रजनाह-



“কহলোঁ তাঁ রেস রাত ফুদা পড়লোঁ-নিখলোঁ দূনু গোটে ফুট-ফুট এসকুরমে, সন্ত দিন বহলোঁ ফুট-ফুট ফুদা ধীয়া-পতা তাঁ সনিয়া ভের কিনে, তখন দেহ ডিপৌনে কাজ চরত ? ”

সুনেনা ঞপনার্কে কমজোব পরেঁত রঁজনীহ-

“খহাঁক জে রিচাব খছি সে রাঁজু জে ঞনুকুর হএত মানি জেরঁ জে নে হএত ঞ কবা তত্কার বখি জেরঁ । ”

এক গভীব চিতক জকাঁ সুরেন্দ্র রঁজনাহ-

“জতে হমবা দবমাহা ভেটত ও খহাঁ হাখমে দহ দেৱেঁ । ঞপনা রিচারে পবিরাব চনাএৱেঁ । ”

লোকবীর্কে জিনগীক ধাব ঝুমি পবিরাবক সরাবী নারপব চট । ভরিষ্য দিস রঁটনাহ । মনমে উঠরনি জে এক রেঁব পনৌর্কে পুছি নিয়নি জে কেনা ঘব চনাএৱেঁ ফুদা মনর্কে মনে বোকি কহরকনি জখন ফর-খনদানক বক্ষক ছখি তখন কিছ রাঁজরঁ উচিত নে হএত । ঞপনা জের সোচরঁ নীক হএত । চলৌত ধাবমে নারর্কে হরা-রিহাড়া , পানি-পাখবসঁ সামনা কবএ পড়' ছে । জখনে রেতনক ভীতব পবিরাব চরত, তখনে এক রানহর পবিরাব জকাঁ ঞাগু রঁটরঁ । জহিনা সমাজ ঞপন রোগ ঞপনে ঞবাধি নেৱক জগসঁ সন্ত রোগা গের তখন ঞপন রোগ কে দেখত । ফুদা এহনো তাঁ রোগ হোগতে খছি জাধবি দোসব নে ঝুনেঁত তাধবি দোসবর্কে নে কহর জাগত । কমা কহ পবিরাবমে ঞানরঁ পনৌ দেখরঁে কবতীহ, ঞামদপব ঞামদ দেখি চসকরঁে কবতীহ, জতে চসকতী ততে লোক দেখরঁে কবত । কোনো কি কেকরো ঞাঁখি সীযর ছে জে নে দেখত । ফুদা রেঁঠে-রেঁঠীক রিখাহ-দান -পট ৷-নিখা সক্ষম রঁনা জিনগীমে উতারেক ঞরস্থা ধবি- জঁ নে কহ জেরঁ তখন কোন ফুঁহে সমাজমে জীরঁ । নীক হএত জে জহিনা হোশিয়াব রোগী দরাগযে দোকানপব দরাগ ঞা নগএ ঞা ঘবপব ঞনরঁে নে কৱেঁ, তেহনে জঁ উপাএ হোগ তাঁ নীক হএত । নজবি কাজ দিস রঁটরনি । কোন এহেন কোর্টে-ন্যাযাৱয খছি জগমে কাজক রৌম নে পড়র খছি । ঞানসঁ ভিন্ন ঞপন পহচান রঁনরঁেক প্রশ্ন খছি । মনক উসোহ জগরনি । কার্যনিয সর্গ ডেবামে কাজ কবরঁ । কাজ রঁট'নে জঁ কিছ হখিঞাগযো জেরঁ তাঁ ওতে ঞনুচিত নে হএত । জঁ সে নে কবরঁ তাঁ পবিরাব সাধাধা নে ঞসাধাধা কপমে ঠাট ভের খছি । খেনাগ-পীনাগসঁ নহ কহ পট'নাগ-নিখৌনাগ ধবি তাঁ রেঁঠে-জকাঁ হএত । পট'নাগ সমাপ্ত হোগতে রা হোগপব বহিতে রিখাহক ভূত কপাবপব চটা জাএত । ঞ কাজ কেকব হেটে ? তখন ? জাধবি প্রতিকুরর্কে ঞনুকুর রঁনা নে চরর জাএত তাধবি সড়ক পবক গাড়া জকাঁ দুর্ঘটনার্কে কে লোকত ।



जहिना ओकागतसँ भारी ढेंगेकेँ रौसक जोगाव नगा डनठ-पुनठ घुसकाओत जागत खडि तहिना डनठरै-पुनठरैक जोगाव कबए पडत । झुदा खनुचित कपमे ? नहि । कदापि नै । । तखन ? है तखन खडि जे खपन काज की खडि ? यएह ने जे लोकक नगड एक झुकदमाक निर्णय कबरँ । जेकब नोकवी करै छिई ओकब काज खनकासँ रैसी कबरँ । यएह जिनगीक पहिचान हएत किने । खनेरे किखए एते झुकदमा केँठमे पडत खडि । महिनामे रौसठा झुकदमाक फेसना कबरँ । जहिना सभकेँ सभ ओमबरैक पाहु नगर बहत खडि तहिना ने कोठे-कचहरी भइ गेन खडि । ओना काज करैक दिना सभकेँ निर्धारित खडि तखन किखए ने खपन रौठ पकडा तेज गतिये चनरँ । सकनपित होगत मन ठमकननि । केकब फेसना करैक खडि ओकरे ने जे खपन रौत खपने नै रूमि खनेरे ओमबागत खारि गेन खडि । एकक ओमबीसँ दोसब ओमबाएन खडि । जहिना बगुड करैत खारि गेन खडि तहिना हमरुँ दु-चाबि बन्दा चना खारो चिक्कन कइ देरँ । रौसठा केसक फेसना मासक काजक सर्ग डेट नाथक डुपवी खामदनी सेहो कबरँ खडि । दुनु पार्टीसँ पाग नैरै । जेकबा पम्कमे हेते ओ खपने भेर खा जेकबा रिपम्कमे हेते ओकब घुमा देरै । केकरो सर्ग खनुचित नै कबरँ । झुदा लोको तँ शैतानक चबथिये खडि, जे रिचाबनौं से चनए देत कि नै । किखए ने चनए देत ? चबथीकेँ चबथा रैना घुमाएरँ तखन खनेरे ने सभ सुपबि जाएत । झुदा चबथीकेँ चबथा रैनत केना ? है किखए ने रैनत ? जखने काजमे तेजी खनरँ तखने ने काज झुहथबि नग पहुँचत । है मास-दु मास होक जाएत झुदा तेसब मास खरैत-खरैत तँ गब पकडा ये नेत । जखने केसक रैहस कबा फेसना करैक स्थितिमे खओत, तखने ने ससारेक गब भेठेत । तीन-तीन दिनपब ताबीख देरै खनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कइ निखाग-फीस जमा कबत ।

चुनझन रौरुक दस रैथ नोकवी पुबि गेननि । खनठडन फुरराड की फुर जकाँ चाक रैथी खिनए नगरनि । तगपब खनठडन भगरान तीन्ठ रैथी खा दुठ रैथी खारो देनकनि । झुदा पति-पनीक रीच सिनेहमे कमीक र्पेपी पोनगए नगरनि । सुनेनाक मन कनेत जे भगरान तते पीया-पुता दइ देननि जे के कतए रौखाएत तेकब ठीक नै । तेहन जुग-जमाना भइ गेन जे निहत्था रौप-माए रैथीक पाब-घाँठ केना नगाओत । खपने (पति) कहियो एक पाग खनुचित नै कमाग छथि कि समाज हमबा छोडा देत । रिन दहेजक रिखाह रैथी सरहक हएत ? कतए सँ खओत । ओना पनिक मनिन चेहवा देख चुनझन रौरु पबथेक पबियास करैत छनह झुदा नाथ समस्याक रीच सुनेना पति नग पनिये जकाँ बहत छनीह । काजक भाव पतिपब छेनन्हिहै । रैसी समेओ ने भेठेत छननि जे रैसी रौतो कबितथि ।



दोसब साँम, चाह नेने सुनेना पतिक हाथमे दैत आगुमे ठाढ़ भऽ गेलीह ।
जहिना देरानयमे लकृत किछ याचना कबऽ ठाढ़ होगत तहिना सुनेना भऽ गेलीह ।
सुरेन्द्रक मनमे मिसियो भवि जिनगीमे प्रतिक्रमता ले । एक घेष्ट चाह पीरँ सुरेन्द्र
रँजनाह-

“मन मन्हुआएत देथे छी ? ”

ठनान पारिँ जहिना पानि ठनकि जागत तहिना ठनकैत सुनेना रँजनाह-

“एक तँ भगरान रँगमान भेना जे केकरो रौष्टियोपव ने नून केकरो रौरे-रौरे
नून दग छथिन । नख-नखणै रौन-रँचचाक परिमार्जन कबरँ नान्किष्ठा खेत छी । ”

सुनेनाक रिचाव झूठसँ निकतरौ ले कएत छननि तग रीचेमे सुरेन्द्र रँजनाह-

“खेत-खेत खेतौ । ” कहि चुप भऽ गेलनाह । आँखि उठा पनीक आँखिपव अँष्टकरँ
चाहित छनाह झूदा रोगाएत-सोगाएत-पीड़ एत सुनेनाक आँखिमे सुखागत जिनगीक
रौन्नक षीना छोड़ा खब किछ ने देख पड़ैत छननि ।

ई कनापव अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



प्रमोद बंशिन

प्रचल प्रयोग कएतथि नया हथियाव- मधेसी मोर्चा रँरररर रँनए नेत भऽ गेल तेयाव

जनकपुरधाम:

एकीकृत नेकपा माओवादीक अध्याक्ष प्रचल प्रधानमन्त्रीक नेत मधेसी मोर्चा नीक बहत,
रँतौनहि अछि । राष्ट्रपति डा. वामरका यादर प्रधानमन्त्रीक नेत सहमति कबऽ देने
दोसबका अँष्टीमेष्टम सेहो अहिना समाप्तु भेनाक रौद तथा काँग्रस दिस सँ
प्रधानमन्त्रीक नेत अपन उम्मादराव शिसीर कोषवतारकेँ खड्डा करौनाक रौद प्रचलक
एहन अँभिराजि आएत अछि । ओना तँ माओवादी सँ हरेक काम प्रुष्टिकऽ कबएरँना मधेसी



মোর্চা দিসসঁ প্রধানমন্ত্রীক প্রস্তার মাওরাদী খহিসঁ পহিনহু খাএর উর ফুদা প্রধানমন্ত্রীক
নেত্র প্রস্তারিত ভেত্র গছদাবক ভূমিকা মধেসী মোর্চামে নীক নে বহনাসঁ হুনকব নাম
রৌদমে রিসবাওত্র গেত্র উত্রৈ । মাওরাদীকে নাযা হযিযাবক কপমে প্রয়োগ হোরঁএরঁনা
মোর্চা দিসসঁ নাযা প্রস্তার তমত্রোপাক খধ্যক্ষ মহন্থ ঠাকুবক নাম খাএত্র খছি । ওনা তঁ
চুনারেমে হাব পৌনে ঠাকুব এখন ধবি নে মধেসক নেত্র কিছ কএনে ছযি নে তঁ কিছ
রঁজনে ছযি । এহন খরস্থামে প্রধানমন্ত্রীক তছু পৌনাগ কোনো ছেট্ট রৌত নগ খছি ।
যদি গপ্প কএত্র জাএ বাস্থ্রপতিকে খচিষ্টমঠমকে তঁ ওহন খচিষ্টমঠম কতেক রিতত্র,
খগকে গণনা নগ কএত্র জা সকেএ । রৌব-রৌব সঁরিধান রঁনারঁএকে সমএ রঁদে-রঁদে
সঁরিধান সন্তে রিঘট্টন ভহ গেত্র ফুদা এখনো ধবি নগ দত্র সন্তমে কোনো কিসীমকে
কনীকো নাজ নাগত্র নে বুমি পডেত্র খছি । এম্বব প্রধানমন্ত্রীক নেত্র বাস্থ্রপতি সমক্ষ
নিরেদন দেনে কিসোবী মহতো মৌকামে চৌকা মাবএ নেত্র একদম তৈযাব রৌসত্র ছযি ।
বাস্থ্রপতিক দৌসরো দেত্র গেত্র সহমতিক সমএ রিতত্রাক রৌদ খদাত্রত নিরেদক মহতোকে
প্রধানমন্ত্রী কিএ নগ রঁনাওত্র গেত্র, ওহী কে নেত্র স্পষ্টীকরণ মঁগত্রক খছি । এক দিসসঁ
দেখত্র জাএ তঁ বাস্থ্রপতি বামরণ যাদত্র সেহো কম মজরুব নগ ছযি । সঁরিধান
সন্তক দেহাত্রসান ভেত্রাক রৌদ সঁসদীয পছতি দ্বাবা রঁনাওত্র গেত্র বাস্থ্রপতিকে সেহো
কোনো খধিকাব নে বহত্র, সে ধমকী প্রফুখ দত্রক প্রফুখ নেত্র সন্তসঁ খএত্রাক রৌদ
চুত্ররুত্র পালত্র জী চুত্ররুত্র কবনাগএ রঁদ্র কএ দেনে ছযি । খারঁ জেনা তগৌএ, দেশীক
এহন খরস্থামে নিকাস নিকাত্রযকে নেত্র কিনকো দরঁগ রঁনহিষ্টা পডত্র । নগ তঁ নেপাত্র
রিষ্ট্রিক ভ্রুত্র ফুত্রকমে ৩৭ খম স্থান মাত্রে নগ, নহঁব এক রঁনেত্র দেব নগ নাগত্র । রঁনা
সঁরিধানক চত্রি বহত্র দেশীকে খফগানিস্ত্রান রঁনেত্র দেব নগ নাগত্র । মধেসক ফুঞ্জিক
নেত্র সশিষ্ট্র ভূমিগত্র কপমে হাছ কহ বহত্র মোর্চা সন্তকে নেপাত্র সবকাব কিছ্রে মহিনা
পহিত্রে রাত্রামে খারঁএ, খারহন কএনে ছত্রযি । ফুদা জখন গ মোর্চা সন্ত রাত্রামে
খএত্রযি তখন সবকাবকে কোনো মতত্ররঁ নগ দেখত্র জা বহত্র খছি । মধেসীক নেত্র
সন্ত গ সন্ত দেখিও কহ চুপ্পী কিএ সপনে ছে ? কহী ফেবসঁ দেশী দ্বন্দ্রমে নগ ফঁসি
জাগক । যদি এহন ভেত্র তঁ খহিকে জিন্মুরাব যএহ দত্র সন্ত বহত্র । দৌসব দিস
প্রচলত্র সঁ খত্রগ ভেত্র মাওরাদী দত্র রৌধ পক্ষধব নেত্রপা মাওরাদী দেশীকে জন্দ্রীএ নিকাস
নগ নিকাত্রত তঁ হম সন্ত ফেব সশিষ্ট্র হাছ কবএ জঁগত্র ত্রুত্র, জেত্রন চেত্রারনী রৌব-
রৌব দহ চুত্রক খছি । এহন খরস্থামে নেত্র সন্তকে গমাত্রদাব রঁনাগ জকবী বহত্র
খছি । পত্র সী দেশী ভাবত্রক বাজ্য রিহাবক উদাত্রবণ দেখারঁএরঁনা নেপাত্রী নেত্র সন্ত
এখন রিহাবক তবক্লীক উদাত্রবণ সেহো দেখৌক খা সিখারৌক । কিএক তঁ নেত্র সন্তক
নৌষ্টকী কবএ স্থত্র নেপাত্রকে রঁনাওত্র তঁ জনতা কিনহু নে স্লীকাব কবত্র । ধ্যান দিখ ।

বচনাপব খপন মতত্র ggaj_endr_a@videha.com পব পঠাও ।



१. वामरिनास साहू -एकठा रिहनि कथा- घुसहा घब २. कैनास दास
नघुकथा-वाँज



१



वामरिनास साहू केब एकठा रिहनि कथा-

घुसहा घब-

झुथियाज्जी पंचायतक गामे-गाम थाम सभाक रैसाव नेन डोला दियौननि । गामक लोक सब एकजूट भइ थाम सभामे पहुँचलाह । सभाकेँ सरोपित करैत झुथियाज्जी रँजलाह-

“ई रैसावमे सब कियो मिन ि नर्णए निथए जे पंचायतक गवीरँ आ मसोमात, जिनकर घब छुँठन-फाँठन होग रा बहराँ योग नै होग छै । ओग र्यक्तिक सूची रँनाएन जाड । हुनका सभकेँ सबकार तबफसँ घब रँनरैने गन्दिवा-आरास योजनासँ कपेया भैठतनि । ”

राई सदस्यक सहयोगसँ झुथियाज्जी नग गन्दिवा आरासरँना सूची पहुँचल । रिहानेसँ झुथिया ज्जीक दान सब सूचीमे नामाकित र्यक्तिसँ भैठै कइ एक-एकठा फार्म दइ कहि देनक जे फार्म भवि कइ झुथियाज्जी नग जमा करै जाड आ रैकमे खाता सेहो खोलराँ नग जाड । संगे संग पाँच हजार कपेखा सेहो दिथए पड़त । तखन गन्दिवा आरास भैठै जाएत ।



रूत गौष्टे तँ अपन गाँ-महिंस-रकबी-डुकबी-गहना-जेरब जेकबा जे गब नगने रैचि क२ कपेखा द२ कपेखा उठेनक । किछु आदमी एहनो छन जेकबा सकर्ता नै भेने ओ रचित बहि गेन । रदनामे पावरना लोक अपना नामे उठा लेनक ।

किछु दिनक रौद बघिया मसौमात अन्दिवा-आरास ले फार्म भवि झुथिया जी नग पहुँचनीह । झुथियाजी फार्म पठा रजनाह-

“पहिले अन्दिवा आरासमे पचास हजार भेष्टे छले आर चासि हजार भेष्टे छे झुदा आगु भेष्टेरना सागठ हजार भेष्टेते । जगमे पचासमे पाँच हजार आ अखन चासिमे दस हजार खर्चा नगे छे झुदा आगु सागठमे पनबह हजार नगते ।”

बघिया सुनिते कानि-कनपि क२ अपन मजबूरी सुनौनकनि । झुथियाजी झुडू डोतरैत रजनाह-

“यग कानी, हमरे केने नै नै होग छे, डेगे-डेग हाकिम-हुकूम रैसन छे । ओहो तँ कष्टिया सोनहा क२ बखने बह छे तेकबा की हेते । आ हमरो कोनो दबमाहा भेष्टे छे हमरू तँ ओहीमे निमह छिई । तँ अ हेतो जे हम अपनरना नै नरो ।” सुनि बघिया सब रात सुनि पबिसुथिति रूनि आपस आरि गेनीह ।

रूधनी रूठा या गाममे सभसँ डमेवगब । जुआनियेमे घबरना राठा मे डूमि मवि गेनथिन । दुष्ठा रैष्ठाक सर्ग रूधनी कहियो हिम्मत नै हाबनि । संघर्ष करित आत्म-निर्भवतापब धियो-पुतोके सक्रत रनौने छथि । हनाकि आर्थिक रूपे कमजोरे छथि ।

एक दिन झुथिया जीक नजबि रूधनी रूठा यापब पडननि आ देखिते प्रुद्धनथिन-

“गामक रूतते लोक सभ नाभ लेनक झुदा तँ कोनो फाबमो नै भवनीही ? तैवा तँ दुष्ठा नाभ भेष्टेतौ । एकठा रूधा-पेसन ओ दोसब अन्दिवा आरासक ।”

रूधनी रजनीह- “एमे कोनो खर्चे-रर्चे नगे ?”

झुथियाजी- “हँ, रूधा-पेसनमे पाँच सए आ अन्दिवा-आरासमे पनबह हजार ।”

रूधनी- “हम अ नाभ नै नरे ।”

झुथियाजी- “किअ नै नरे ?”



बूधनी- “घुस दह कह घब रँनाएरँ तँ ओग घुसहा घबमे बँहरँना केहेन हेते ? ”

झुथियाजी आ बूधनी बूढा याक गप अपना घबक कोनचब लगसँ बधिया मसोमात सुनेत छनीह अपना मनकेँ बूढारैत रँजनीह-

“अन्दिवा आरास किअए घुसहा घब कहियो ने । ”

२



केमास दास

जनकपुर

नघुकथा

बाँज

सारित्री बाँज देखिकह छक पडि गेल । ओ जे सोचने छल ओहि सँ उल्लेख नजबि अरँए नागर । सारित्री बाँजक ओछाओन पब रँसल छल की परन ओकब देह पब हाथ बाथि सहनारँए लगल । परनक हाथ सारित्रीक देह पब पडेते सारित्री परनक मोनक भार बूमि गेल आ ओ बाँजल ‘परन हम सोचने छनी कि बाँज मतनरँ रिदेशे मे कामकाज कबधराना सबक छोटे बँहते होतेक आ कोना कोना रिदेशे मे जा कह लोक बँहते अछि । काम करैत अछि ओ सब देखरँते छैक । झुदा अहाँ तह.....’ परन सारित्रीकेँ आओब नजदीक रँसिकह अपन हाथ आगाँ रँठरँते अछि कि अनायासे देह पब हाथ पडना सँ सारित्री चिहूकि उठल आ परन सँ फेब सँ कहते अछि, “अहाँ की कह बहल छी ।’ सारित्री देह पब सँ परनक हाथ हठरँते कहते अछि ‘चनु बाँज देखि नेनहूँ ।’

सारित्रीके रिवाह बँजनसँ भेल छल । दनु गोठेमे रँड प्रेम छल । ओकब प्रेमक चर्चा भबि गाम छल । दनु गोठेक सुमधुव प्रेममे दु रँष कोना रीत गेल पतो नहि चलल ।

दु रँषक अममे एकठा तडका भेल । रँड झह सँ ओकब नाम बाजा बखतक । झुदा हुनकब सुन्य कहियो नीक नहि बहल । ओ चाहते छल बाजा पठिके रँडका लोक रँनेक । झुदा अहिके नेन रँहते पैसाके आरथकता अछि ।

बँजन गबरी तह अरथ छल झुदा सारित्रीक प्रेम आ सहयोग पारि कह कहियो अपने आपकेँ अलार महसुस नहि कह बहल छल । एक कण्ठा घबारी आ पाँच कण्ठा खेत अछि बँजनकेँ । माय-रौरू आ तीन राजि अपने लग कह पाँच गोठेक पबिराव अछि ।



দিন রিটেত গেল আ পবিরাবিক ভাব সেহো রিটেত গেল । এগো কমাগরনা আ পাঁচ গোঠে থাএরনা । পৈসাক খভার স্নভারিক খিছি । বাজাক পঠাগ সেহো ।

জেকবা সঁ কজা নেনে বৈক ও সভ কিচু দিনক রাঁদ সেহো তমঁ কবএ নাগন । এক দিন তমঁ ভ২ ক২ সারিবী রাঁজন, 'গহা বহনা সঁ কজা নহি সধত । রৌখাক পঠাগক কজা আ পড়িনা কিচু কজা সেহো খিছি । বুঁমাগএ ঘব পব বহনা সঁ কজা সভ নহি সধত । এক রৈব খহুঁ রিদেশে জা ক২ দেখতহুঁ ।' সারিবী উদাস ভ২ রাঁজন 'কজা সেহো সপি জাএত আ বাজুক পঠাগ নিখাগ ক২ নেন.... ।'

'মায-রাঁবু আ খহাঁকৈ ছোডি ক২ হমবা কনিকো রিদেশে জএরাঁক মোন নহি হোগএ । স্ননেত ছিঁও রিদেশেমে সেহো খরঁ রঁড ঠগাঁ হোগত খিছি । ফেব বাজা সেহো ছোষ্ট খিছি । তাহুমে ও সভ দিন রিঁমারে বৈত খিছি । তেই.... ।'

'জাগ দেরঁক মন ককরো খোবহী হোগত খিছি । হুদা হাবনে কবরঁ কী ? খপন সভ সন্পতি রৈচিও দেরঁ ত২ কজা নহি সধত আ এতা বহনা সঁ দিন-প্রতিদিন কজা রিঁটিতে জাএত । দু-তীন সানকে ত২ রাঁত খিছি । ফেব স্নখে-স্নখ বহত । দেখিযো নে ভল্ভাবীকৈ সেহো খপনে জেকাঁ হান বৈক । হুদা রিদেশে জাগতে ওকব সভ দুঃখ দুব ভ২ গেলেই । পক্কাক কোঠা সেহো রঁনা নেনক আ খপন রঁচা সভকৈ রৌডিহঁ স্কুর মে পঠরৈত খিছি সারিবী রাঁজন ।

'নেকিন খহাঁ রিঁনা এক দু রর্ষ কী, একো দিন হুস্কিন খিছি ।'

'স্নখে কোগ খোবহী নহি জাগত খিছি । ভগরানে হমবা সভক এহন ক২ দেনক তঁ কী কবরৈ.... ।' সারিবী বঁজনকৈ সমমারঁকে প্রযাস ক২ বহন ছুর ।

'সএহ তঁ খহুঁকৈ রাঁত সাঁচে খিছি । হুদা জাএরাঁক নেন ত২ কমিতমে এক নাখ কপেয়া চাহী ।'

'ওকব চিন্তা নহি কব খহাঁ । রিদেশে জাএরানাকে নাম পব জতেক কপেয়া চাহী ওতেক গাম মে ভেষ্ট জাগত খিছি ।'

কিচু দিনক রাঁদ বঁজন পাসপোর্ট রঁনা রিদেশে চনি গেল । বঁজনকৈ রিদেশেমে কাম রিঁটিএ ভেষ্ট গেল । মহিনাক রীস পচাঁস হজাব খাএ পী ক২ রঁচা নৈত খিছি । দু রর্ষ রিঁতরো নহি ছুর কি ও সভ কজা সধা নেনক । কজা সপিতে বঁজনকৈ রঁডকা হোরঁকে সপনা রিঁটেত গেল । বাজা কৈ সেহো জনকপুবক একটা রৌডিহঁ স্কুরমে নাম নিখরাঁ দেরঁক নেন কহি দেনক । বাজা খারঁ জনকপুবক হাঁস্টনমে বহি ক২ পঠয নাগন । বঁজন খারঁ ঘব রঁনএরাঁক নেন সোচএ নাগন । জহিনা খপন পনৌ সারিবীসঁ প্রেম ছুর খারঁ বঁজনকে কতাবমে কপেয়া সঁ প্রেম ভ২ গেল । দু রর্ষ রিঁতন কী ও ফেবসঁ দু রর্ষক নেন পাসপোর্টমে সমএ রঁটা নেনক ।

সারিবী খারঁ খসগরে ভ২ গেল । বাজা ছলৈক ত২ ওকরো সঁগ সময় কষ্ট জাগত ছুর । বুঁঠ সাউস-সাসুব রৈসী সময় খেতক কামকাজ মে নাগন বৈত খিছি । ওনা ত২ সারিবী সময় কষ্টয নেন ঘবমে ষ্টরী, ভিসীডী সেহো নগা নেনক ।

এক দিন সারিবী মাছ নারঁধ ধনৌজী রঁজাব গেল । ওতহি রঁজাবমে সারিবীক নৈহবকৈ সহেরী গাঁতাসঁ ভেষ্ট ভ২ গেল । দু গোগেই ঘবক রাঁতচিত রিঁতিখাএ নাগন । রাঁতচিত



करैत-करैत कोना साँम भ२ गेल पतो नहि चलेन । किछु देव रौद पश्चिम दिससँ
खन्हव तुहान जेकाँ रौदत गबजए लागत । देखिते-देखिते छँपछँप क२ पानी पडए
लागत । एकाएक सारित्रीकेँ घबक याद आएन आ ओ रौजत गे देखनी पानी पडए
नगले ? कतेक दिनक रौद भेँलेनेहो सेहो रँतियाग के समयो नहि छै । जो
दोसब दिन रँतियाएँ । ' कहि क२ दू गोठे दू दिस चलि गेल ।
सारित्री जोब सँ नष्टकरैत घब दिस जाए लागत । जखने ओ रँजाव सँ निकलि क२
चोडवीक गाछ नग पहुँचत की खन्हव-तुहान संगहि पानी जोब-जोबसँ पडेय शुक क२
देनक । एक त२ खन्हाव बैठक दोसब मे पानिके संगहि खन्हव रिहावि । एहन मे
सारित्रीकेँ आगाँ रँदएके हिम्मत नहि भ२ बहन छन आ ओ एगो गाछ नग जा क२ ठाठ
भ२ गेल ।

सारित्री खसगरे गाछ नग डबाएन जेकाँ ठाठ छन । खन्हव रिहावि गाछकेँ उखावि हेलक
देत जेना नागि बहन । गाछ छोटिके जाएके रिचाव होएक त२ बूनाए हारा उड़ ाके
न२ जाएत । गाछक जडिमे सारित्री चुपचाप रँसि गेल ।

किछु देवक रौद जखन खन्हव तुहान बकर त२ सारित्री ठाठ भ२ जाएके सोचि बहन
छन कि रँजाव दिससँ एगो साङकिनरँना आरि सारित्रीकेँ झँहपव छँच रौवनक । छँचक
छर्ववा देखिक२ सारित्री डब सँ खबखव कपए लागत । सारित्री केँ जेना नागि बहन
छन आओ हम रौँचि क२ घब नहि जा सकरँ । ओ खपन चेहवा केँ छुपारँ के
कोशिमे नागि गेल ।

'खहाँ के छी । खकेने गहा की क२ बहन छी ।' साङकिनरँना रौजत ।

सारित्री मर्दक आराज सुनिक२ आओव भयभीत भ२ गेल आ खबखवागत रौजत 'हम
एतही.. नखोवीजाएँ । रँजाव आएन छनहुँ । पानी घेब लेनक तँ....'

साङकिनरँना सारित्रीक नजदीक पहुँचक२-'चल हम खहाँक२ घब धवि छोटि दैत छी ।

खहाँक गामसँ आगाँ हमरे गाम अछि ओवही ।'

'नहि अ जाखून, हम चलि जाएँ ।' सारित्री हिम्मत क२ क२ रौजत ।

'डबाउ नहि, हम खँके पड़ ासी छी । किछु नहि छएत ।' साङकिनरँना आग्रह सुबमे
रौजत ।

दू गोठेक गाम जाएरँना एकेछा वास्ता भेनाक कावण सारित्री संगहि जएरँक नेन
तेयाव भ२ गेल । साङकिनरँना आगाँ आगाँ छँच रौवि बहन छन आ सारित्री साङकिन
केँ पकडने पाछ पाछ जाए लागत । रँदमे खरैत कार दू गोठेकेँ पविचय सेहो
भेन । दू गोठे धवशियी रौतसभ रँतियात-रँतियात गाम पहुँच गेल ।

'एतेक रँतिया लेनहुँ, आ नामो नहि जननुहुँ, की नाम अछि साङकिनरँना पुढनक-

'सारित्री'

'खहाँक सारित्री हँसत रौजत

'परन'

'जखन पड़ ासी छी त२ चल ने घरो दुखाव तँ देखि लेरँ ।' सारित्री डबागते रौजत
।



‘আগ নহি ফেব দোসব দিন । ওনা হমব গামক চডবী আ খনাক গামক চডবী একে ঠেক । কান্দি খেত পব খএরাক সেহো ঠেক । হমহুঁ রিদেহে ডনহুঁ । দু মহিনা ভেত এতএ খাধনা,’ পরন রাজন । ‘এখন জাগ দিখ, রঁড খনাব নগৌত ঠেক,’ পরন ফুস্কত চনি গেন ।

সারিত্রী কিছু ক্ষণ পরনকে ওহিনা দেখেত বহি গেন । জখন পরন ওকবা সঁ পরোডু ভহ গেন তখন ওকব ধ্যান ঠুঠন আ ঘবক কামকাজমে নাগি গেন । খানা বঁনরৌত কানমে সারিত্রীকে খপনে আপ হঁম্মী সেহো খরৌত বহএ । জখন ও স্মতন ডন তহ সোচএ নাগন ‘পরন নীক রাজি খিছি । খগব ও নীক নহি বহিতেক তহ রৌঠমে হমবা কিছুও কহ সকেত ডন । রৌতো রঁড নীক-নীক করৌত খিছি । লোক সভ কহিত খিছি মর্দ মহিনাকে দেখিকহ হেরান ভহ জাগত খিছি, ফুদা সএহ তঁ পরন মে নহি দেখনহুঁ ।’ সারিত্রী ফেব সঁ খপন কপাড নঠেত ‘হুঁ... ওকবা সঁ হমবা কি লিখ দিখ কে । জতহ কে ডুলেক ওতহ চনি গেলেক ।’ কপাবকে ঠৌকেত ‘হমব দিমাগে জে খিছি নহি বঁনা কামকে সোচএ নগৌত খিছি ।’ কিছু দেব রৌদ ফেবসঁ বঁজন দিস ধ্যান নগরৌত স্মতি বহন ।

সারিত্রী ভেব হোগতে খেত পব পহুঁচ গেন ডন । ও চাব দিস চকুখাএ নাগন । কতৌ কেকরো নহি দেখি বহন ডন । জেনা নাগি বহন ডন ও কেকরো খোজি বহন হুঁখএ আ ও রাজি নহি ভেঠনা পব উদাস ভহ গেন হুঁখএ ।

কিছু দেবক রৌদ সারিত্রী উদাস ভহ ঘব দিস জহ বহন ডন কি পরন কে খপন জনকে হল্লা করৌত খরাজ স্মনিকহ সারিত্রী বকি গেন । জখন পরন নজদীক খাএন তহ সারিত্রী রাজন ‘খহুঁকে খেত এম্বরে ঠেক নহি ।’

‘হঁ...গহে খেত খিছি’ গশাবা করৌত পরন রাজন ।

সারিত্রী কিছু দেব বকন আ ফেবসঁ ঘব চনি গেন ।

সারিত্রীকে গেলাক রৌদ পরনক দুদয় জোব-জোবসঁ ধডকএ নাগন । ও সোচএ নাগন কিছু দেব খাওব বকতেক তঁ কাি ভহ জএতে । কতেক মীঠ বঁজৌত খিছি সারিত্রী । বঁমাগএ রৌত কবিতে বহতী । ঠাঠ ভহ সোচএ নাগন কোনো বঁহল্ল সারিত্রীসঁ ভেঠরাক লেন উপায় সোচএ পডত ।

একদিন ফেবসঁ পরন রাজব দিস জা বহন ডন কি ও ঘব দিস বকিকহ গম্বব ওম্বব তাকএ নাগন কি দেখনক সারিত্রী কন সঁ পানী ভবি বহন খিছি । পরনকে দেখিকহ সারিত্রী ঘব দিস জএ নাগন কি পরন রাজন, রৌখাক সমাচাব সভ কেহন খিছি ।

বঁটিয়া সঁ তহ পঠেত খিছি কাি নহি ?’

‘ডুঠীমে ঘব নহ খএরৌ । এখন জনকপুরে খিছি ।’ সারিত্রী বঁজৌত ঘবমে ঘুসি গেন ।

এক দিন সারিত্রী খপন খেত নগ ঘুমি বহন ডন কাি ধবাক দহ পরন পহুঁচন আ সারিত্রী সঁ রাজন –‘খহুঁ কতেক রাস্ত বঁহত ছী সারিত্রী

কামপায় বহিতেক তরঁ নে রাস্ত । দিনভবি তঁ ওহিনা ঘরমে বঁহত ছী । সোচনী কনিক খেতেমে ঘুমি ফিব নী ।’ সারিত্রী রাজন ।



किडु देव धवि सारित्री आ परन रीच रीतचित भेन । एहि क्रममे दनु एक दोसबसँ खोलिकः रीजए नागर । किडुए दिनक भेष्टघाँट सँ परन मनहि मन सारित्री प्रति भारुक रनि गेन ।

एक दिन सारित्री पुछतक -'परन रिदेशे मे केहन घब दुखाव सब होगत छैक । रँडका...रँडका... घब दुखाव सब होगत होतैक ने ।'

'अपना अहा केँ जे नँज सब होगत छैक नहि ओहने -ओहने मकान सब रिदेशे मे बँहत छैक ।' परन रीजर ।

'आगए नँज केकवा कहत छैक.....नँज केहन होगत छैक । अपनो सबके यहाँ नँज छैक ।' सारित्री उस्केता पूरक रीजर ।

'जनकपुरमे तः नँज छैक .. । नहि देखने छियए .. । कहियो जनकपुर जाएँ तः देखा देरँ ।' परन कनिका श्रिवसँ रीजर ।

सारित्रीके नँज देखरौक गछा जागि गेन । ओनी परन केँ सेहो सारित्री प्रति उस्तजना रँटैत गेन । भेष्टक क्रम रँटैत गेन ।

एक दिन सारित्री केँ श्रीमान् बँजन रिदेशे सँ कपेया पठौतक । जखन ङ रीत सारित्री परन केँ कहतक तः ओ मनमन गदगद भः गेन आ कहतक -'चरु

जनकपुरमे कपेया छोडा देरँ आ नँज सेहो देखा देरँ ।'

सारित्री आ परन जनकपुर आएन । सबसँ पहिने ओ प्रभु मनि प्रीमफरसँ कपेया छोडौतक आ दनु गोष्टे होष्टेन मे जाःकः खाना सेहो खएतक । एकबरौद परन रीजर -'देखियो एहि कोठेके भितव नँज छैक । एकवा देखएके नेन किडु कपेया नगैत छैक । चरु आग अहाँकेँ नँजो देखागए दैत छी ।' परन सारित्री के पकडएके प्रयास कएतक । ओ अपन रीतक जातमे फसएँ चहतक । कनिक देवक नेन सारित्रीकेँ ककि जायके मोन कएतक कदा ओकव आगमे बँजन आ बाजाक आप्रति आरि गेन ओ परनकेँ नँजमे ठेलेत सडक पव चलि आएन । ओकवा रूनाएमे चलि आएन छन एहि ठाम ककि गेनहँ तः अनर्थ भः जाएत सोचैत ओ सिधे गाम चलि गेन ।

ॐ कनापव अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



सँजीर क्रमाव शिमा

महकरि प. वावदासक १३.३म जयंती समारोह



দিনাক ২০ নভেম্বর ২০১২কৈ মহাকরি প. নানদাসক ১৩.৩ম জর্যতি স্থানীয় নানদাস জমা দু উচ্চ রিছানযক প্রাংগামে মহাকরি প. নানদাস জর্যতি সমারোহ সমিতি খড িখা দ্বাৰা সমারোহপূৰ্ক মনাওন গেল। সমারোহক ঙ্খখ খতিথি জিলা উপরিকাস আহকৃত শ্রী ওম প্রকাশি বায় খা সমারোহ সমিতিক ংধ্যক্ষ নাবখাণ্ড রছৃত রৌডিক পূৰ্ চেযবমেন ডা. হবিরশি নান সর্ঘকৃত কপে রিছানয প্রাংগামে স্থাপিত মহাকরিক প্রতিমা খা মচপব স্থিত মহাকরিক তৈন চিত্রপব মান্যার্শি খা সর্গহি দীপ প্রজজ্বরনন ক২ সমারোহক রিধিরত উদ্ধাঠন কেৱনহি। গামরাসী কন্থিয়া ঙ্ক্ষা কাযস্থ স্ৰাগত ভাষণ দৈত সভ খাগত খতিথিগশক স্ৰাগত খা সর্হক প্রতি খপন খাভাব র্যকৃত কেৱনহি। রবিষ্ট সমাজসেরী রযোরুছ স্ৰতঁৱা সেনানী ভবত নাবাষণ কর্ণি রিশিষ্ট খতিথিয ভাষণ দৈত রঁজনাহ জে মহাকরি মহাবাজ বামেশ্বিব সিঁহক দবরঁৱমে দবরঁৱী পড়িতক কপে রিছমান ছনাহ। মহাবাজ হুনক রিছতাসঁ আহৃত ভ২ হুনকা পড়িতক উপাধিসঁ রিভূষিত কএনে ছনখিন্হ। ংধ্যক্ষীয় রকৃতর্যমে ডা. এচ.রী.নান মাত দু পাঁতি কহননহি জে মহাকরিক জর্যতি সমারোহক জগহ স্মৃতি সমারোহ হম সভ মনারী সে নীক। খা দোসব মহন্বপূৰ্ গশীবা কেৱনহি জে রাস্তরমে হম সভ মিথিনাচরক সাহিত্যিক মচক গরিমাকৈ পাগক চরনিসঁ কমজোব করে ছী। পাগ সমপূৰ্ মিথিনাক নে ছী। জখনে জাগী তখনে প্রাত কহি ংধ্যক্ষীয় ভাষণমে রিন্ব পূৰ্ণি রিবাম নগৌনহি হাখ গশীবাসঁ হিন্দীক রিছান, প্রখব রজা ক্ৰমাব বামেশ্বিব নান দাসকৈ কবরঁৱক ংগ্রহ কএন জেকবা ক্ৰমাব সাহেৰঁ সহর্ষতাপূৰ্ক স্ৰীকাব কেৱনহি। জখন কি স্ৰস্থি রচন প. শির ক্ৰমাব মিশ্রি দ্বাৰা প্রস্তুত কএন গেল। ঙ্খখ খতিথি ডীডীসী শ্রী ও.পী.বায় খপন রঞ্জর্য দৈত কহননহি জে মহাকরি নানদাস দ্বাৰা মৈথিলী ভাষামে বচিত বচনা বমেশ্বিব চবিত মিথিনা বামাষণক প্রাসংগিকতা খখনো রঁনন খছি। ও ংরশ্যিকতা জতৌৱনহি জে মৈথিলী সাহিত্যক ধরোহবক কপমে মহাকরিক বচনাকৈ যখাশীত্রে প্রকাশিত কবা পাঠকগশক রীচ পছঁচক চাহী। খপন উদ্ধাব র্যকৃত করেত ও গ্ৰনো কহননহি জে কনাক উপযোগ ংত্মচিঁতনক নেৱ হেরঁক চাহী, ছনরঁক নেৱ নে। ও রস্বধৈর ক্ৰহঁমর্কমক উক্তিকৈ চবিতার্থ কবরঁৱা নেৱ স্পি শ্রীতাগশসঁ ংগ্রহ কেৱনহি।

মহাকরিক র্যকৃতির এরঁ ঙ্গতিত্ৰ রিষযপব ংযোজিত পবিচচর্মে সাহিত্য ংকাদেমীক ংন্বরাদ পবস্কাবসঁ সম্মানিত প্রা. খুশীনান ন্না জতৌৱনি জে মহাকরি দ্বাৰা বচিত বমেশ্বিব চবিত মিথিনা বামাষণপব রান্মক্তি বামাষণক প্রভার খছি।

সর্গোষ্ঠীমে সাহিত্য ংকাদেমী দ্বাৰা ঙ্গৈগোব সাহিত্য পবস্কাবসঁ সম্মানিত মৈথিলীক সমন্বরযরাদী সাহিত্যকাব শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন খপন উদ্ধাব র্যকৃত করেত কহননহি জে প. নানদাস রঁহুঙ্খী প্রতিভাক ধনী ছনাহ। জিনকব নেখনী মৈথিলী ভাষা সাহিত্যকৈ ংমবত্ৰ প্রদান কেৱক খছি, জে ংগযো ডেট সএ রঁর্থ



रिंतनाक रौदो एना रूना बहन खडि जे ओ अपन लेखनीक माध्यमे अथनो माँ-मैथिलीक सेरो क२ बहना खडि । मण्डनजी अहो गच्छा जतौनन्हि जे “महाकरिक साहित्यमे आध्यात्मिक टिंतन” रिषयक संगोष्ठी आरंभिक खडि । संग-संग धर्म, सप्रदाय एरि आध्यात्म ई तीनुकेँ अपना ईठाम सानि-रौंठी क२ देखरौपब टिंता रयकृत केतनि । आजुक समेमे नरतुबिया आ रूठ साहित्य प्रेमी लोकनि अपन मातृभाषामे बचना क२ अपना साहित्यकेँ संपन्नता प्रदान क२ बहन छथि । जे मैथिली साहित्य आन्दोलनमे मीनक पत्थब सारित भ२ बहन खडि ।

पबिचरकिक एममे मैथिली पत्रिका “नावखण्डक सनेस”क सम्पादक डॉ. अशोक अरिचन महाकरिक रयकृतितरपब प्रकाशि दैत कहनन्हि जे पं. नानदास दर्शनक साम्प्रदाय प्रतिमुर्ति छनाह । हिन्दी, संस्कृत, उर्दू आ फारसीक उद्भूत रिद्वान बहितो महाकरि मातृभाषा मैथिलीमे उच्चकोष्टिक ग्रंथक बचना क२ जननीक हद तक अपन कबजा उतावरीमे सफल भेनाह । डा. अरिचन रिद्वानबागी लोकनिसेँ आग्रह केतनन्हि जे गाम खडि आमे महाकरिक नामे एकठो प्रकोष्ठ रनाओत जाए जगमे यथासंभर हुनक पाण्डुलिपिक संग्रह होग आ संगे हुनक प्रकाशित अप्रकाशित बचनक संग्रह कएत जाए । जगसेँ अरैरना पीठि आ गरेषक लोकनिकेँ ईसेँ हुनका रिषयमे रिस्त्रुत जानकारी भेठ सकतन्हि । शिक्कारिद अरकाशि प्राप्ति शिक्कक हबिनावयण ना रिद्वानपूर्ण शैलीमे अपन रिचाब प्रस्त्रुत करैत कहनन्हि जे महाकरि द्वारा बचित वामाशयमे माँ सीताक रनि प्रस्त्रुत कण्डमे रिद्वानतापूरक कएत गेल खडि । माँ सीता शैक्तिक अधिष्ठात्री छथि, एकरा ओ अपना पद्यमे रणित कए मर्यादा प्रकबोद्धम श्रीवामोकेँ मानरी नेन मजबूत कएत । श्री ना एते अरसवपब सभ गोरुसेँ आग्रह केतनन्हि जे जग धवणीपब माँ सीता अरतबित भेनीह ओग धवापब महाकरिक अरतवण भेन हम सभ कियो रिना कोनो भेदभारक माँ मैथिलीक धवणी धवाकेँ प्रस्त्रुत-पन्नरित कवी । यह हमवा सरहक महाकरिक प्रति शिक्काजनि होएत । रिद्वानय समितिक अध्यात्म अनुप कश्यप माननीय डीडीसी साहेबकेँ रिद्वानयक उत्थान र रिवासक दिस पियान आग्रह कबरेत रजनाह जे रिद्वानयक सर्गीण रिवास भेना उतब ई श्केतक पिया-पुतामे शिक्काक संपूर्ण रिवास भ२ सकत जे सही अर्थमे महाकरिक प्रति शिक्काजनि हएत ।

समारोहक दोसब सत्रमे कार्य गोरुष्ठीक आयोजन भेन जकब अध्यात्मता शिर्द-साधक श्री जगदीश प्रसाद मण्डन आ संचालन चर्चित उद्घाटक श्री सजीर कमाव शिमा द्वारा कएत गेल । कार्य-गोरुष्ठीक आवम्भ रिद्वानपति सम्मानसेँ सम्मानित करि शिभ सौबलक कार्यसेँ भेन । तहिना दोसब कार्यक पाठ मैथिली प्रथम समारोहक श्री दुर्गादि मण्डन केतनन्हि । तकरा पछाति करिगामे श्री रेंचन ठाकुर, श्री वाम रिवास साहू, श्री लक्ष्मी दास, श्री उमेशि नावायण कर्ण, श्री नन्द रिवास बाय, श्री वामसेरक



ठाकुर, श्री शशिकान्त न्या, श्री हेमनाबायण साहू, श्री कपिलेश्वर बाउत, श्री शिरकृमाव मिश्री अपन-अपन कार्य पाठसँ श्रौतारूदकेँ कार्य बसमे सवारौव करैत बहनाह । जखन कि डा. अरिचन अपन करिता 'संस्क्रुतिक साङ्ग पब' सुना सामाजिक अपसंस्क्रुतिसँ सज्जग हेरौक दिस अशिवा केनन्हि । दोसब दिस हारा करि लोकनिमे श्री उमेशी पासवान, श्री नाबायण न्या, श्री अशिलेश कृमाव मण्डन, सतोष कृमाव महतो, बिकास कृमाव न्या, ओमजी अपन-अपन नूतन कार्यसँ दस्तक देनन्हि । हारा संघर्षशील करि उमेशी मण्डन अपन गजल सुना श्रौतागणसँ राहराही बूठनन्हि । कार्य गौष्ठीक समापन अपघयक श्री जगदीश प्रसाद मण्डनक कार्यसँ भेल । कार्यक शीर्षक छल 'चल रे जीरन चलते चल' कार्यक माध्यमसँ श्री मण्डन श्रौतारूदकेँ कार्यमे दर्शनक दबसन कवा कार्यक गंभीरतासँ परिचय करौनन्हि । संपूर्ण कार्य गौष्ठीमे कार्य-समीक्षकक नाते मैथिली साहित्यक सृंभकार डा. अशोक अरिचन अपन प्रथम बुद्धिमताक प्रतापे करि लोकनिक कार्यक समीक्षा कइ करि आ श्रौतागणकेँ कार्यक मर्मसँ परिचय करौवत आ शुभकामनाक संग जोशी रूठरैत बहना । करि गौष्ठीमे कार्य-समीक्षा एकठ्ठा नर प्रयोग भेल । जकब श्रेय श्री सजीर कृमाव शिमाकेँ जाग छन्हि । संपूर्ण कार्यक्रमकेँ उद्घाटक सजीर शिमा द्वारा सजावत गेल छल । अपन रिद्धतापूर्ण शैली आ राक-चातुर्षिसँ उपस्थित श्रौतारूदकेँ आह-एर-राहक लेल मजबूत कएल । माधुर्य ग्राह भाषा शैलीक कारणे सुधि श्रौताक मानस पठनपब छाएल बहना ।

मंचस्थ अतिथि, करि, समीक्षक, रक्ता अत्यादि जेतेक साहित्यान्ववागी छलाह सबकेँ समारोह समिति पुष्पमात एर चादवि अर्पित कए सम्मानित कइ अपनकेँ गौबर महशूस केनक ।

मैथिली मैथिली मंचक स्थापित कनाकाब वामसेरक ठाकुर पंकज न्या आ चंदन द्वारा संस्क्रुतिक कार्यक्रमक प्रसृति सवाहनिय छल । समारोहकेँ सहल रनेरौमे आयोजन समितिक सदस्य सुनील कृमाव दास, डा. अवरिन्द नान, निर्मल कृमाव दास, रिनय कृमाव दास, योगानंद नान दास, प्रभात कृमाव दास, बाजेन्द्र कृमाव दास, आ अजय कृमाव दासक भूमिका महत्पूर्ण छल । अंतमे जयंती समारोह समितिक सचिब श्री भागीवथ नान दास धन्यवाद ज्ञापन करैत जंतर्य देनन्हि जे आगु सार रिद्यालयक सूर्ण जयंतीक अरसवपब कार्यक्रम दु-दिना हएत, जकब लकाब उपस्थित सब सुधि श्रौतागणकेँ मंचसँ देल गेल । ई अरसव पब पछिले रैथ जकाँ अछु सार रिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनीक लर्य प्रदर्शन सेहो छल ।



ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



सन्दीप कुमार साहू, जन्म १ जून १९८४ पिता श्री सीताबाम साहू,
माता- श्रीमती सीता देवी, गाम- मेहथ, भाया- सहाबपुर, जिला- मधुबनी । शिक्षा-
बी.ए. (प्रतिष्ठा), मैथिली ।

(मैथिलीमे दलित आमेकथाक सर्खा अन्तर बहन अछि । सन्दीप कुमार साहूक
आमेकथा मैथिली आ मिथिलाक साहित्य, समाज आ संस्कृतिके हिनोरेत ओग अन्तरक पूर्ति
करैत अछि । सम्पादक, बिदेह)

आमेकथा

जीवन एगो संघर्ष होगत अछि, संघर्षमय होगत अछि । ई संघर्षमे कियो-कियो आगु
निकरि जागत अछि तँ कियो अपन जीवनमे रहूत पाछु छुट्टि जागत अछि ।

ओही संघर्षमय दुनियाँमे एगो हम छी, जिनकर नाम अछि सदीप साहू माने किवण ।
सूनमे सन्दीप नामसँ चिन्हन जागरना अओव गाममे सब किवण नामसँ पहचानैए ।
ग्राम+पोस्ट मेहथ, भाया- सहाबपुर, जिला- मधुबनीक बहनिहार हमब जन्म निर्धन
गरीब परिवारमे भेल । हम जातिक धोरी छी, हविजन (दलित) छी । गाममे सब क
कपड़ । धो क माँ-बाँहू हमबा सबक पानन-पोषण केने अछि । हम चाबि भाग-रहीन
छी, जगमे हम सबसँ रडका छी, तगसँ छोट हमब भाग-रहीन सब अछि । हमब
जन्म **07.06.1984** ग. मे भेल । ओग जमानामे सस्ता सब किछ, तैयो हमबा सरहक
भवन-पोषण नुब-नुबगतो चलए । अ-आ सँ करीब कान तक हम सब दुखीबामसँ
पठलौ । किछ दिन बाद बाँहूजी सबकाबी सूनमे नाम लिखा देलक । सबकाबी सूनमे
पढ़ाए चलै तँ ठाँके-ठाँके हूदा हम सब ओतेक किछ बुझि नै परिई । ओहन
गावजनो होसगव नै जे देखरितए जे की लिखतई, की सिखतई । हूदा धीरे-धीरे
आगु रठलौ ।

छोटमे माए एकठाँ रकबी किनकर जे ओकरासँ किछ कपैया आमदनी रहत तँ कहना
थजब-रसब रहत । थोड़के दिन रकबी सेहो चरलौ अओव रकबी रैटि हमब माँ



ওহীসঁ একষ্টা রৌচী লোক জে ওগসঁ দুধক খামদনী হুত খা ওগ পাগসঁ খপন পবিরাব স্খাসঁ গ্জব কবরঁ ।

গ সভ কাজ কৰিত রাঁবুজী সঁগে লোকক ঐঠাম কপড় । পহুঁচেনাগক সেহো কাজ কৰিত ছলৌ ।

পিছনা পাট দস সানমে জমানা রঁহুত খাগু রঁটি গেল । পহিনে এতে রৌগন নে ভেঠেত ছলৌ জেতেক খখুনকা সমএমে ভেঠেত খছি । পহিনে এক মোঠা কপড় । ধোগ ছন হমব মাঁ-রাঁবু তঁ গিবহস্ত সভ পাট সেব ধান নে তঁ দু কিলো খাষ্টা দৈত ছলৌ । কিযো কপড় । দুখাগ তরে পাগয়ক খামদনী নে বহনাসঁ মজুরীমে দু-তীন কিলো খল্লুএ দ' দেনক । পহিনে পাগ মহগ ছলৌ খা খল্ল-পাগন সস্তা ছলৌ ।

গামমে সরঁহক মায-রাঁবু গস্কুর ভেজে হুদা হম জাগ লোকক কপড় । পহুঁচারঁ, তগযো সৌমকা ঠেমে খগনামে রৌবা রিছা ক' পহুঁলে রৈসএ হমব পিসিয়ৌত ভায বাজু ভেয়া, তখন হমহু পহুঁলে খারী তঁ দু-কানসঁ রীস কান তক সিখলৌ । ওকবা রাঁদ খপ্পন গামক গস্কুরমে নাম নিখা দেনক, হেডমাস্টব ছন পহিনে কোগনখক যাদরজী, হুনকা কহি রাঁবু, জে একবা কনী দেখরৈ । কিছু দিন খহিনা সমএ কষ্টন, চৌখা-পচমামে রঁঠনা রাঁদ কিতারঁ পঠনা কিছু খারিঁ গেল তঁ গাবজীযন কহনক জে চরি জা রৌখা পীসা সঁগে, ওতে নেপানমে বহিহ । গামপব খচকি দিক্ত তঁ হেরেঁ কবগএ, সে নে তঁ ওতে কাজ-বাজ কবিহ খওব ওতে বহিহ । পহুঁগ-নিখাগ খারিঁ ছোড ।

পটি-নিখি ক' কী হেতে । 1994 গাক সমএমে হম চরি গেলৌ নেপান । ওতে দীদী সঁগে বহী, সভ দিন কপড় । ধোগ খওব সঁগে পহুঁচারেঁলে জাগ । খওব খারী তঁ নকডী চুল্পাব ভানস কবী । ভোরে তীন রঁজে উঠা কপড় । ধোগলে । ওগ সমএ হমব উমেব বঁমু জে 11-12 ক' ছনএ । কিছু দিন ওছ ঠাম গ্জাবলৌ । তকবা রাঁদ হম ফেব গাম এলৌ । হমব রাঁবু কহননি জে খারিঁ নে জা, কিছু দিন পঠ । কমসঁ কম মৈষ্টিকো তক পটি রেঁ তঁ কতৌ নে কতৌ সবকাবী নোকবী ভগযে জেত' । হমবা জেতরৈ জুডত ওতরৈমে হম গ্জব কবরঁ হুদা তঁ পঠ । তকবা রাঁদ হম কোঠিয়া গস্কুরমে নাম নিখেলৌ । ওগ ঠাম ছঠাসঁ কিনাস চলে ছলৌ । ফেব খোড়কে দিন গামেমে বহি ক' মান-জান চবা ক' হাগস্কুর তক গেলৌ । হুদা সমএ এহেন খাএন জে ফেব হম পহুঁগ ছোডি পঁজারঁ চরি গেলৌ । ওগ সমএমে হম ছলৌ নৌমামে । গেলৌ ওগ রাঁস্তু জে হমবাসঁ ছোষ্ট রঁহীন ছন, ঘবক গাবজন কহনক জে রৌখা গামেমে বহনাসঁ খারিঁ কিছু নে হেতৌ, সে নে তঁ চরি জা লোক সভ সঁগে রঁডকা কক্লা নগ চল্লিগট । কতৌ নোকবী ধবা দেত', কগহক হমব নাম জে রাঁবু কহনক য' । হমব কক্লা রিঁভন সাফী জে রাঁএক ডিগ্রী প্রাপ্ত কেনে ছনএ, রএহ সোচি হমব রাঁবু হুনকা নগমে পঠৌনি জে ওকবা কনীক বঁগধ চৈ, কতৌ নীক নীক নোকবী পকড় । দেতে । হুদা হমবা নগমে কোনো সঁষ্টফিকেষ্ট নে বহু, সে হমবা কতৌ ছোষ্টে-মোঠে কাজপব নে বাখএ ।



कौनो ँफिसोमे नै बाखए जे ङ तँ पठन लिखन नै खडि, सभ दफतबमे से कहए । आखिवीमे काका एगो प्रेस आगवनक दोकान क' कहलक, एते आगवन कब । नया आगवनक दोकान, कोग त्राहक आरै, कियो नै आरै । एक-दू महिनाक रौद काका हमबापव शिक कबए तागत जे ङ पाग कमाग खग झुदा हमबा नै दगए । हमबा मनमे रँहुत दुख हुखए जे हम कत आरि गेलौं, खेनाग खग न' जाग तँ कहए जे दोकानक भाड १ आरि तोरे भव' पडत' चाहे दोकान चन' या नै चन' । ङ सभ सुनि मन राकर भेर जे आरि ईठाम हमबा बहनासँ कौनो फाएदा नै हएत । आरि एतसँ जागए पडत । ओही ठाम गामक कतेक लोक बँह छन, तेकवा कहि-सुनि हम कोठीमे काज कबए नगलौं । एक महिना भेर तँ गाम जाग क' भाड १ भ' गेल । एलौं काका नगमे जे हम गाम जा बहन छी । तँ काका कहलक, बकि जा, हम टँकठ रँना दै छिख । एक दू दिन बकि जा । गामक लोक जागत छै, तेकवा सँगे हम गाम पठा देरँ ।

तग रिच हमबा सँग एहो घटना भ' गेल जे हमबा पएबमे आगग लागि गेल । हमबा पूरा पएबमे पएबसँ एडीसँ जाघ तक नडकि गेल । आरि हम रँडका समझामे हँसि गेलौं । ७ घार हमबा तीन महिना तक घिघरी कठैलक । खसगरे सागकिनसँ एक पएरे पागडिन मावि क' डँच-नीच बस्तापव सँ जाग छलौं दराग कवारैने चल्डीगत शिहबसँ दूव छै गाम धनास, ओगठाम । कम पागमे डकठव दराग दै छलौं । सञ्चामे तीन रँव जाग छलौं दराग कवारैने । जेहो बपैया कोठीसँ कमा क' खनने छलौं सभ पाग कक्काके द' देलौं । एकब समाचाव जखन हमब माँ आ रौरुके पहुँचन तँ रँहुत कानन जे कोहना रौंखा केकरोसँ पाग न' क' तँ गाम आरि जो । ओही ठाम छै रूधन खोव कोरेना, तेकवासँ पाग न' क' गाम चन'ग आ । हम गामेपव ओकवा पाग द' देरँ । ओही समएमे हमब रौडि परीष्काक फार्म भवाग छनए, यएह कातिक खगहन महिनामे हमबा केकरो द्वावा टिप्ली समाद आएन जे जन्दी गाम आरि जे किछ दिन पगढ १ नेरँ' खोव घार से छुट्टि जेत' । हमब फार्म हमब सँगी मनोज पासरान सभ भवि देन । किछ रूमन नै सुमन, नै गणितक ज्ञान नै संस्कृतक ज्ञान । तैयो परीष्का मधुरनीमे राठसन स्कुलमे भेर सन 2000 ङ. मे जखन दू महिना रौद बिजलेट निकलन तखन मनमे जएह धुकधुकी छन सएह भेर । हम परीष्का पास नै क' पेलौं । आरि तँ खोव मोन दूखी भ' गेल जे आरि की कएन जाए ।

तकवा रौद कोग नै कोग कहलक जे संस्कृत रौडि सँ परीष्का दहक । एक रँव रौरु तँ हमब मानलक झुदा माँ कहलक जे आरि सभ पढ १ग-लिखाग चलि जा ममियोत भाए सँगे रँगलोव । हम हेव रँगलोव चलि एलौं । ईठाम काज भेठन खानाक केठबिगमे, फक सरँहक कपड १ धोए क' काज भेठन । किछ दिन रौद गामपव सँ हमब रिराहक रौतचीतक समाचाव आएन जे तँ गाम आरि । फवरबी-मार्चमे हम गाम गेलौं । रौरुजीके कहलियनि जे रिराहमे जे दहेज देत' ओग दहेजसँ खोव एक



সাতমে কিছু কপেয়া খওব তগা ক' রহিনক কন্যাদান সেহো ক' তের। কিছু ভাঙ ১-
রতন খওব ওগমে তগা দেরে। ঙ সন্ত মজরুবি দেখে হমব রিরাহ 2002 মে ভেন,
পল্ডীত গামমে, জগ গামক পড় আসমে কনী হঠি ক' খড়ি ভরানীপুব গাম, জগ ঠাম
মহাদের উগনা কপ ধাবণ ক' রিচ্যাপতিকে দর্শন দেনে ছননি জে খখন মিথিনামে
স্বপ্রসিদ্ধ খড়ি, করি রিচ্যাপতি খওব উগনা মহাদের। হমব রিরাহক পশ্চাত এক রেব
ফেব হম সঙ্কৃত রৌডিসে পবীক্ষা দেলৌ, খওব ওগমে হম দ্বিতীয় শ্রেণীসে উত্তীর্ণ ভেলৌ।
হম ঙ পবীক্ষা কেখাণী-বামপঞ্জী স্কুলসে দেনে ছলৌ 2005 মে। তেকবা রাঁদ পুন: হম
খপনে গাম তগমে কানেজ ছন শিরনন্দন-নন্দকিশৌব মহারিচ্যানয়, ভৈবরস্থান ওগমে
এডমিশন কবা ক' খাগএ. মে হম ফেব খারি গেলৌ রেংলৌব। তেকবা রাঁদ ওগ
কেঠবিগমে খাদমী রিচি গেলাসে হমবা ওগঠাম কাজ নে ভেঠন ত হম ফেব এতৌ একঠা
কোঠীমে কাজ পকডলৌ খওব গাম খারি ক' ঙষ্টবমীডিএঠ পবীক্ষামে ফেব শামিন ভ
গেলৌ খা খছমে সেকেন্ড ডিবিজনসে পাস ভেলৌ, কোঠীমে সমএ রচএ ত পঠরৌ কবি,
কিতার গামসে ত ক' জাগ ছলৌ।

সং-সং রহিনক কন্যাদান সেহো ভ গেল ভগরতীক দয়াসে। ওহী রিরাহমে কিছু খর্চা
খা কর্জা ভ গেল রেসী। কোঠীমে দু হজাব কপেয়া দিখএ মহিনা, ওগমে ঘবক খর্চা
খওব ওম্বব খপন পড় াগক পবীক্ষা ফীস, পনসমে পবিরাবক সেহো খর্চা।

ফেব রাঁএ. মে নাম নিখেলৌ খওব ফেব চনি গেলৌ রেংলৌব। হমব রিষয় ছন খর্চ
জে কোনো ঠুশিন রিনা পটি সকে ছলৌ। হমবা ঙষ্টবমীডিএঠমে হিন্দী রিষয়মে জাদা
খক খএন ছন ছুদা খপনে নে বহী গামমে ত হমব সংগী ছন বাকেশী কুমাব ঠাকুব,
নগৌমে হজাম, রএহ ছন হমব ফার্ম ভবনিহাব, পবীক্ষা শুল্ক জমা কেনিহাব, হুনকা
মৈথিলীমে জাদা খক এলৌ, ওগ রাষ্ট্র হমরো ও যএহ ঞনসে রিষয় বখরা দেতক।

গাম এলৌ ত মন কিছু পছতাগতো ছন জে খারক জমানামে খর্চ ক' পড় াগ কিযো
পড় ছে, ছুদা মৈথিলীক জখন নাম সুনরির্ ঠখন মন গদগদ ভ গেল। হ, ছুদা
কিতার ভেঠন রেহুত মেহনতি ক' কএ।

হব সাত পাঁচ সমএ কিতার খবীদ পডএ, ওছমে জেরোক পল্লা। তেকবা পটি ক' হম
রাঁএ. ফস্ট ক্লাসসে 2011 ঙ. মে পাস কেলৌ ননিত নাবাযণ মিথিনা যুনিরসিষ্টা, কামেশ্বব
নগব দবভঁগাসে।

তা'ত হমবা রাঁলৌ রচা ভেন। পড় াগ সং-সং একরো সরকক দেখ-বেখ কেনাণ
মায়-রাঁপক দাযিব্ব হোগ ছে। তখন হম ফেব গামসে রেংলৌব খারি গেলৌ।



कतेक रैब पैवाशुष्ट रैजीमेष्टेमे रैंगलौबमे भतीमे रैहानीमे गेलौं झुदा असहन बहलौं । ईरैब गाममे एस.पी.ए.पी.रैना परीक्षामे सेहो शीमिन भेलौं झुदा उहो असहन बहन ।

आरि गेलौं रैंगलौब जे आरि ओतेक कोनो नीक एजुकेशनो ले अछि जे कते नोकरी हएत, तेयो कोनो काजमे लागत छी । भगरतीक दया, आगु हुनका हाथमे छनि । हमरा दुष्ट रैष्टे अछि अओब एकष्ट रैष्टे, रैडम्क अछि बाजकमाव साहनी, छोट रैष्टे सागव कमाव साहनी । तगसँ छोट अछि बाज नन्दनी कमावी । अथन अ सब आंगनराडी स्कुलमे पठि बहन अछि । ओतेक पाग अछि ले जे प्रागरेष्टे स्कुलमे धीया-प्रतार्के पढाएँ, दिनोदिन महगाग रैठले जागत अछि । हम सब री.पी.एन. कोष्टिमे शीमिन छी । धीरे-धीरे एतरौ शिक्षा भेलाक बादो कोनो नोकरी ले भेष्टेए । लोक कह छनए जे एतेक पठनिहाव रैडका अफसव होगत अछि झुदा हम सब किछ ले क पारि बहन छी ।

हमरा सर्गीतसँ रैसी मिनान बहत अछि । गीत गेनाग हमरा रैहूत नीक नगैत अछि । मैथिली होग रौ नेपाली रौ हिन्दी, हम ओछु गीतकेँ गारि सकै छी । कीर्तन-भजन केरौं अपने गामघबपव सर्गी-साथी सर्ग । जीरन एगो घडीक सुगया होगत अछि, दिन भवि, राति भवि चरिते बहै, कथनी रैन्द भ जाएत किनको ले थाह अछि ।

हम अप्पन ई मैथिलीक माष्ट-पानिसँ जुडन हबएक रौतक सम्मान कवरँ । अप्पन भाषाकेँ उँच शिखपव पढूँचेरौक प्रयास कवरँ ।

हम मैथिल छी, मिथिलेमे बहरँ अओब पोरौ साग तोडि क गुजब कवरँ । सादा छी सादा बहरँ । जय मिथिला, जय मिथिला धाम, प्रशाम ।

ई कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



उमेश मिश्र

दोसब चवषक पहिन सगव राति दीप जवय दबलंगामे सम्पन्न- डिजिटल वर्गमे ३१ ठी पौथीक लोकार्पण

पूरिपारिका:



- "सगब बाति दीप जवय"क दोसब फेज (चवष)क पहिन सगब बाति दीप जवय ०९ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सन्ध्याके के दबङ्गामे

-आयोजक छथि श्री खबरिन्द ठाकुर

-- "सगब बाति दीप जवय"क पहिन चवषामे रहूत बास घुसपेठिया घुसि गेन बहथि आ अ अपन मून उद्धृष्टसँ दुब भऽ गेन छन ।

-लोक भवि बाति सुतेत बहथि, जातिरादितक सब सोनाँ आरि गेन छन, लारी रना कऽ होगत समीक्षा आ ब्रह्मरादी-आर्मवेष धरि गप पहुँचि गेन छन । साहित् अकादेमीक हस्तक्षेपसँ मामना आव गवरँड १ गेन । १३म सगब बाति दीप जवयमे पठनामे किछ गोष्टे द्वावा शिवरँ पीतापव धनकब ठाकुर बिरोध सेहो प्रकष्ट केनन्हि । तकब रौद ओहीमेसँ किछ गोष्टे ई गोष्टीकेँ दिन्नी नऽ गेना, झुदा बिभिन्न कावषसँ आ साहित् अकादेमीक दरारँपव मैथिली पोथी प्रदर्शनी नै लगौन जा सकन, कावष आयोजक तकब अनुमति नै देनन्हि, ई साहित् अकादेमीक कथा गोष्टीकेँ १३म - "सगब बाति दीप जवय"क मागता नै देन जा सकन (ओना किछ ब्रह्मरादी कथाकाव आ घुसपेठिया लोकनि एकरा १३म सगब बाति दीप जवय कहि बहन छथि । ।) । १३म - "सगब बाति दीप जवय"क आयोजन रिता बानी द्वावा चेल्लेमे भेन जतए मात्र एकठ कथाकाव पहुँचना । कियो माना नै उठेननि आ सगब बाति दीप जवयक पहिन चवषक दुखद अनु भऽ गेन ।

-- "सगब बाति दीप जवय"केँ फेबसँ जियेराक प्रयनेक स्वागत कएन जा बहन छथि । "सगब बाति दीप जवय"क दोसब फेज (चवष)क पहिन सगब बाति दीप जवय ०९ दिसम्बर २०१२ केँ "किवष जयन्ती"क खरसवपव आयोजित भऽ बहन छथि । आशी छथि जे अ नर "सगब बाति दीप जवय"क दोसब फेज (चवष)क पहिन सगब बाति दीप जवय पुनः अपन ओग पथपव आगाँ रँठत, जे प्रभास क. चौधरी ई नेन सोचने छन ।

सगब बाति दीप जवय-



किवण जयन्ती केव खरसवपव दिनांक १ दिसम्बरक साँम ७ रँजेसँ भिनसव ७ रँजे धवि दवर्तगाक कष्टकराड १ स्थित एम.एम.पी.एम महारिद्यालयक प्रेक्षागावमे सगव वाति दीप जवय-कथा गोष्ठीक आयोजन खवरिन्द ठाकुर जीक संयोजकतुरमे भेल । ई गोष्ठीक उद्घाटन डी.आ.जी. वारुशि कुमार मिश्री दीप प्रज्वलित क२ केननि । डा. भीम नाथ नामक अध्यक्षता एरं खजीत खजाद जीक संचालनमे ई भवि वातिक कार्यक्रमकेँ तीन सत्रमे रँष्टि आगु रँट १०त गेल । पहिन सत्र छले उद्घाटनक दोसर लोकार्पण आ तसव कथा राचन सह समीक्षाक । मध्यांतर सेहो भेल जगमे नीक भोजनक आ तगतगत दससँ रीस मिनट धरिक खायामाक रँरस्था छल । खनाकि ङ रँरस्था गोष्ठीमे खानायस भेलै, भेलै ङ जे भोजनक प्ररन्ध साकठ लेल खनग । जगसँ दू तोजीमे भोजन कराओत गेलै । जगमे समए तगत । आ एकठि खव महतरपूर्णी रात ङ जे मंच संचालक खजीत खजादजी सर्य दनु सत्रक भोजनमे ठहरि-ठहरि भोजन करैरनिथिन । खर्ति पहिन तोजीमे भोजन केनिहाव कथाकारकेँ तगतगत रीस मिनट सुतेक खरसव भेष्ट गेलैक ।

सत्रक खवम्भ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखित एगावह गोष्टि पोथीक लोकार्पण जे पी.डी.एफ फागतमे सी.डी.क कपमे भेल जेकव रिरवण एना खडि-

गीतांजलि (गीत संग्रह), अन्द्रधनुषी खकास (करिता संग्रह), तीन जेठ एगावहम माघ (गीत संग्रह), वाति-दिन (करिता संग्रह), खच्छागिनी.. सरोजनी.. सुभद्रा.. भागक सिनेह गत्यादि (तघुकथा संग्रह), शिबुदास (दीर्घकथा संग्रह), रँजन्ता-रँमन्ता (रिहनि कथा संग्रह), कमप्रामागज (नाटक), नमेनिषा रिखाह (नाटक), पंचरंषी (एकांकी संचयन) आ सतभैया पोथवि (तघुकथा संग्रह) । तकर रँद श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखित २ गोष्टि पोथी लोकार्पण (सी.डी.) मे भेल । तकर सरँहक रिरवण एना खडि- प्ररँर-निरँर-समारोचना भाग-१, सहस्ररँठनि (उपन्यास), सहस्राष्टीक चोपडा पव (पद्य संग्रह), गप्प-गुछ (रिहनि आ तघु कथा संग्रह), संकर्मण (नाटक), ब्रुवाहृद आ खसृगति मन (दूठि गीत प्ररँर), रँत मन्तनी/ किशोव जगत (रँत नाटक, कथा, करिता खदि), उक्कादुख (नाटक) आ सहस्ररँठनि उपन्यासक खंखेजी खरुराद The Comet नामक पोथी जेकव खरुरादक थिही श्रीमती ज्योति त सुनीत चोधरी । एही कड ीमे ई दनु वचनाकावक खनादा रिदेह-सदेह भाग-३.सँ.० धरिक संकलन जे रिदेह मैथिली तघुकथा, रिदेह मैथिली नाठ उतसर, रिदेह मैथिली पद्य, रिदेह मैथिली प्ररन्ध-निरन्ध, रिदेह शिषु उतसर आ रिदेह मैथिली रिहनि कथाक छल । ततरै ले एगावहठि खव वचनाकावक पोथी सी.डी. कपमे सरँहक रीच खखन जगमे १. रँषित वस- (करिता संग्रह) उमेश पासरान (उंवहा, मधुरनी), २. नर खंशु- (गजल, कराग आ कता संग्रह) खमीत मिश्री (कवियन, समसुतीपव), ३. वथक चक्का उतरि चले रँष्टि- (करिता संग्रह) वाम रिनास साहू (तस्मिनिषा, मधुरनी), ४. कियो रँमि ने सकल हववा- (गजल, कराग आ कता



संग्रह) ओम प्रकाशि ना (भागवतपुर), ३. राप भेन पित्री आ थपिकाव- (नाटक) रैचन ठारुव (चनौवागर्ज, मधुरनी), ७. हम पुष्टेत छी- (साक्षात्कार) मनोज कुमार कर्ण, झुल्लज्जी (कपौली, मधुरनी), १. हमवा रिनु जगत सुन्या छै- (गीत-नाक संग्रह) वामदेर प्रसाद मण्डल 'नाकदाव' (बकथाव, सुपौल), +. म्फणप्रभा- (करिता संग्रह) शिर कुमार ना 'ष्टिनु' (कविधन, समस्तीपुर), ९. हमव छैल- (उपन्यास) बाजुदेर मण्डल (झुसहबनियाँ, मधुरनी), १०. मोनक रात- (गजल, कराग आ कता संग्रह) चंदन नाक आ ११म नीतु कुमारीक मैथिली चित्र कथा, ई तबहै ई गोष्ठीमे, कुनम ३७ठा पोथी लोकार्पित भेल ।

कथा पाठ आ तगपव समीक्षकक ठीपपणी ई गोष्ठीक वैशिष्ट्य छि । पहिल पानीमे श्रीमती रीणा ठारुव, आशा मिश्र, ज्योत्सना चन्द्रम, श्याम भास्करक तदुक्था आ उमेश मण्डलक रिहनि कथाक पाठ भेल । समीक्षीय ठीपपणी भेल । थहिना आगुक पानीमे कथाक अपन नूतन कथाक पाठ केलनि-

रैचन ठारुव- रेसुठ मैडम

तम्कुमी दास- ठीगपिसुठ

चन्देष्टीव थाँ- नाओनुद

थनमोत ना- हागल, सेयव

झुवनीधर ना- मनुकुथ

थभिषेक- महाप्रकम

वामकान्त बाय 'वमा'- रकरास

वामरिनास साह- घुसहाघव

नावायणज्जी- छुत्ता

शेनेन्द्र थानन्द- होवनेन

परन कुमार साह- थपन बीति

सुभाषचन्द्र सनेही- बुट्टी



नन्द रितास बाय- रौराघाम

उमेशे पासरान- खजाति

अशोक क्माव ना- माडक मोष्टबी

पवमानन्द प्रभारकव- पविरर्तन

फुन चन्द्र मिश्र प्ररीण- पविरर्तन

दूथमोचन ना- समबथको नहि दोष गोसाङ्ग

दुर्गानन्द मण्डन- कर्कमा

जगदीश प्रसाद मण्डन- खनदिना, बुधनी दादी

शिर क्माव मिश्र- नापता

शशिकान्त ना- दुबी

अच्छेनार शीसूत्री- गामक लोक शीर्षकक कथा पठननि । हनाकि शीसूत्री जीक कथाक राचन मात्र एक पृष्ठ स्मना पछाति रोकि देन गेन ङा कहि जे ङा कथा नै आनेथ थिक । अच्छेनार शीसूत्रीक ङा पहिन मच बहनि जगपव ओ कथा पठा बहन छनाह, ओना करिता आग तीस रर्थ पहिनेसँ निथेत छथि । ङा मचक अप्यम्क सर्ग सँचानक एर ई दूआरे केननि जे पृष्ठ भविक राचनमे कथोप-कथन किअक नै आएन । शीसूत्री जीक कहँ छननि जे कथोप-कथन कोनो कथाक एक तत्र थिक से हमरो बुनन अछि आ तकव समारेशे अरशेय केने छी कदा से आगु अछि माने अगिना पृष्ठमे । तथापि कथाक राचन रोकि देन गेननि । आ अच्छेनार यादर शीसूत्री अपन कथाक अपूर्ण पाठसँ निवास बहि गेनाह ।

अमीत मिश्र, क्कन्द मर्याक, अमलेन्दु शेखर पाठक, रौशिन ना अत्यादि र्यक्तिक कथाक पाठ सेहो भेन आ तगपव र्णपणी गनजागशि हिसारै । र्णपणीकाव सब छनाह- फुनचन्द्र मिश्र वमण, वमानन्द ना वमण, भीमनाथ ना, अशोक मेहता, दुर्गानन्द मण्डन, कमर मोहन चून्, नावायणजी, क्माव शिलेन्द्र, जगदीश प्रसाद मण्डन, कमलाकान्त ना (जयनगर), योगानन्द ना अत्यादि ।



VIDEHA

खागिला 'सगब बाति दीप ज्वब' कमलेशि ब्वाक संयोजकब्रुमे घनश्यामप्रबमे हेरौक घोषणा सेहो भेल । दीप खा उपस्थिति प्रसुतिका स्थानीय संयोजक खबरिन्द ठाकुर कमलेशि ब्वाके हस्तगत कबा गौष्ठीक समापनक घोषणा केतनि ।

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'खनिव- की भेष्टव खा की हेवा गेव (खाये गीत)- (खागा)



३.२. सन्दीप कुमार सांकी-करिता-कातिकक पूर्णिमा/ गामक अनाव



३.३. जगदानन्द झा मनु



३.४. हेमनाबायशा साह- हम छी नीमक गाछ



३.३. रुनी कायत केव दूध गोष्ट करिता-सिया तरे के काव। ठिद्वारेत जाड



३.३.१. बाजदेर मण्डक तीन गोष्ट करिता-चिब प्रतीक्षा। हाथ। ठक२. मिहिव
मा- रिदागवी



३.१. परकज चौधरी (नरवशी)- चाकिण गजव



३.४. रिन्दुश्रीव ठाकुर- गीत-गजव-करिता



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिव'

की भेष्टव आ की हेवा गेव (आमे गीत)- (आगा)

जे सख भेष्टव, जे शीति भेष्टव

अघायन, मनन आ चिन्तनमे



VIDEHA

दूथ-सुखकेव पबिभाषा जानन
की सफल, सुफल की जीरनमे

एक दृष्टि नर, एक सृष्टि नर
अपनहु अस्तुवमे समा गेन
हम सोचि बहन छी जीरनमे
की भेष्टन आ की हेवा गेन ।

सपना छन जे छी देखि चुकर
सपना अछि जे छी देखि बहन
सपने सर्गी अछि रैनन हमब
सपनेसँ हम छी सीथि बहन

सपनेमे अहिना पडन-पडन
हँसिते-हँसिते अछि कना गेन,
हम सोचि बहन छी जीरनमे
की भेष्टन आ की हेवा गेन ।

जीरनक अर्थ तँ हर्ष भेन
दोसब मतनरँ संघर्ष भेन
हम तकि बहन छी अपनामे



की रौंछन आ की रार्थ गेन

खुडि रैह सुखन दुनियामे जे
खपनारके कहुना रँचा गेन,
हम सोचि बहन छी जीरनमे
की भेष्टन आ की हेवा गेन ।

हम के छी, कतहसँ आयन छी
खुडि खएरौ केव प्रयोजन की
सुख-दुखक चक्रमे घुमि बहन
खनरवत हमब आ जीरन की

हमबा खलुबमे रैसन का
खुडि प्रश्न कैकठ्ठा उठा गेन,
हम सोचि बहन छी जीरनमे
की भेष्टन आ की हेवा गेन ।

आ देह अतिथि, आ प्राण अतिथि
सम्मान अतिथि, अपमान अतिथि
खुडि लोभ, मोह आ मायाकेव
खल्लान अतिथि, रिक्कान अतिथि



हम खहिना बहरै श्रुिब तहियो
जहिया देखरै सरै रिना गेल,
हम सोचि बहरत छी जीरनमे
की भेष्टैत खा की हेवा गेल ।

झ हाथ हमब, झ पएब हमब
झ आँखि हमब, झ कान हमब
झ देह हमब, झ मोन हमब
झ प्राण हमब खा ध्यान हमब

हम छी स्वामी एहि कायाकेब
खुष्टि झ बहस्य का बुँना गेल,
हम सोचि बहरत छी जीरनमे
की भेष्टैत खा की हेवा गेल ।

(क्रमशः)

ई कनापब खपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



सन्दीप कृमाव साहू- करिता-कातिकक पूर्णिमा/ गामक गनाव

1

कातिकक पूर्णिमा

जेरै देखैले मेना कमना क

सभ सानमे मेना नागध जेव

नहने जाएरँ भोरे भोव

हेते ओही राँउनपव कस्तुी

खाएरँ तोडि क' कसियाव

माए रँहीन सभ खेनए

सामा चकेरा

भसरँ जाए ओग किनाव

चूगनाकेँ चूड १ दही खूखा क

नेरान दिन चूड १ कृष्णए

उक्खडिमे ।

जोतनाहा खेतमे भसरँए

सामा चकेराकेँ



VIDEHA

पुर्णिमा नहागने जाग कमनामे
मेना नागौए दनु पावमे
नाच तमाशा हुथए खला कदन
रिक्का मिनली झबही
मिथिनामे माए रँहीनक
भागयक मानन जाए ग पारैनि
सानमे एक रँब नाम निथए
भागक सभ रँहीन
हमर भग्या बहए जूड़ एन ।

2

गामक गनाव
चनए मिनान सभ लोकके
भरै छनौं एक ठाम पानि
खपनामे बह चनए राजा भुकी
बह चनौं सभ मिनि-जूनि क
घब-घबमे खरि भेन कन
लोकौ सभ भेन खन कन
खीचि ने पारैए गनावक बस्सी
ने बहन छैनमे एकता
के बाथए पोखरि गनावक सेथता



VIDEHA

मारिकक देन क' होगए खभास
कोनारैँ बुँमाएरैँ पियास
बिनुषु भ' बहर खडि अनाव
कत' गेर घैताक पानि
ओही ठाम करैँ छुनौं सान
बैह छर गामक शान
देरी-देरता बैह छर प्रसन्न
मन बैह छर शुद्ध
बखै छुनौं शुद्ध-अशुद्धक मान ।

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदानन्द मा मनु ग्राम पोस्ट- हबिपुव डीहठैल, मधुबनी

1. करिता - उल्लैत सुबज पएव पसावि

उल्लैत सुबज पएव पसावि
धवतीक आँगनमे एलै
नाल बंगक ओठनी एकव
हबीयव खेतमे छिबएलै



VIDEHA

कोठी सभ मुबी हिना कए

पंखुडीकेँ फैलेनक

नचि-नचि कए नैकठौ भोडा

खुशीकेँ नाच दखेनक

तए सग खपन साजि रबयाति

खुशी ओ सग खनने खडि

सग एकरे उठन चिड़ सभ

खाब मनख सभ जगैत खडि

माए सभ खाँचबमे भवि कए

नेनापव खमृत रबसेलौ

उगैत सूबज पएव पसावि

धवतीक खाँगनमे एलौ

रबदकेँ सग तए हवरौहा

कहापव तादि हव खाएन

गाए महीषकेँ रोमि चवरौहा

धवतीक खाँगनमे रहि खाएन

छोष्ट छोष्ट हाथसँ नेना



VIDEHA

डोडी पकेव रकबीकेँ खननक

माथ पव न क टाकी खूपी

घसराहीन न्युमति निकनन

एहन स्रनव मनभारक

दृश्य भोवका कएनक

उद्देत सुबजकेँ तँ देखु

केहन स्रनव दुनियाँ रँनेनक ।

उद्देत सुबज पएव पसावि

धवतीक आँगनमे एले ।

2. गजन

जीरन कखन तक डेक नै बुमनक कियो

कखनो करेजक गप्प नै जननक कियो

भेष्टन तँ जीरनमे सुथक सर्गी रँहूत

देखेत दूधमे आँधि नै तकनक कियो



दूथकेँ अपन रैसी बूनेँ किछ लोक सभ

भेनेँ जँ दोसबकेँ तँ नै स्मरण कियो

सदिखन बहन भाँगेत सभ काजे अपन

खानक नोब घुगरो कs नै रिछनक कियो

जीवन तँ खडि जीरेत मन्न सभ एतए

मगरो कs जे जीरेत नै रनक कियो

(रहने- बजज, 2212 तीन-तीन रैब सभ पातिमे)

3. गजब

जखन खगता सभसँ रैसी तखन ओ झूठ मोडि लेननि

जानि खाफत छोबि हमबा स्मरण नाता जोडि लेननि

देखि चकमक बग सभतवि ओहिमे रहि ओ तँ गेली

जानि खखडी ओ हमब हँसिते करेजा कोडि लेननि



रैन्द केने हम मनोबथ अप्पन सदियन चूप बहनहुँ

पाथ रैबथे आरि देख हेब सपना तोडि लेननि

दुखसँ अप्पन अधिक दोसबकेँ सुखक चिन्ता कएने

आँथि जे फुटै दनु तेँ एक अप्पन होडि लेननि

चनक सम्पत संग लेनहुँ जीरनक जतबाक पथपर

मेघ दुखकेँ देखते ओ संग मनुरकेँ छोडि लेननि

(रैहरे - बमन, मात्रा क्रम- 2122 चाबि-चाबि रैब सभ पातिमे)

4. गजन

किए तीव नजबिसँ अहाँकेँ चलेए

हँसी अ तँ घाएन हमबा करैए

मधुव राजि खन-खन पएबक पजनियाँ

हमव मोन बहि बहि कए डोनरैए

छनकए हरामे अहाँकेँ खूजन नष्ट

कतेको तँ दाँतेसँ आठुव कष्टैए



ससबि जे जए जखन आँचव अहाँकेँ

जिना भवि करेजाक पडकन बकैए

अहाँकेँ तँ झूठ देखि जौरैत मन अछि

रिना संग नै सँस मिसियो चलेए

(रँहरे - झूतकाबिरँ, मात्रा क्रम -122-122-122-122)

5. गजब

बहरँ आरँ नै दास रँनि हम
अपन नीक अतिहास जानि हम

जखन ठानलहुँ हम अपनपव
सझदा नएलहुँ तँ सनि हम

उठा माथ जतएसँ तकलहुँ
दएलहुँ तँ नझर गनि हम

हनाहल दूनीयाँक पीने
चले छी अपन मोन तनि हम

जमल खुन माबलक धपवा
नएलहुँ रिजय रिझि ठनि हम



(रैहरे झतकारिरे, मात्रा फ्रम-१२२)

ई कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



हेमनाबाषण साहू

हम छी नीमक गाछ

जंगल न्नाब रूमि हमबा छोड़ने छी

छी कतेक रोगक-निदान से नै रूमै छी ।

रैड गनगब छी से रूमि निथ

नै खट्टि रिसरास तँ खजमाथ निथ ।

हम रातारवणकेँ शुद्ध करै छी

खशुद्ध परनकेँ शुद्ध करै छी ।

पात पीस कंकनिपव नगाड

डारिक दत्तमिसँ पैबिया भगाड ।

झूसा तोड़ा -तोड़ा झूहमे खाड

पैठक कीड़ ाकेँ जड़ा सँ भगाड ।



VIDEHA

हड तोड़ा खर्क रैनाड

खनु गाछके पातासँ रैचाड ।

हडक खाँसीसँ तेर रैनाड

रैनाए ँषषि खनेक रोग भगाड ।

रैचर सिङ्गीसँ जैरिक खाद रैनाड ।

खेतमे मिनाए सोना उपजाड

हम छी नीमक गाछ ।

डगब-रौठपब बगाड

गाम समाजसँ त्र२ क२ पर्यरिबणकेँ

निरोग रैनाड ।

अ कनापब खपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पर पठाड ।



श्री कामत केब दुष गौठ करिता-सिया तरे काष।
ठिबारेत जाड

सिया तरे काष

जनक दूनाबी सिया

सहित एनो सभ दबद



VIDEHA

थहाँ किथए ?

बानी भ२ रनमे बहलौं

पतिक खातिब

सभ सुथ तियागलौं

पग-पगपब संघर्ष केलौं

हब परीक्षामे खड १ उतबलौं

तँ फेब अ समाज ने थहाँके

थपनेनक किथए ?

जग पति ने सभ

किड थहाँ तियागलौं

रएह थहाँके तियागनक किथए ?

किथए ने रिदाह थहाँ केलौं

नारीक हित ने थराज उठेलौं ।

सदखिन सुने छी हम एक्क रात ।

जहन सति सीता ने रचलौं

तँ केना रचतौ तोकब राज ?

जौं एगो सीता जे

थराज उठैगते,

तँ फेब कोनो सीता

ने परिवारित होगते ।

छुप बहक अ



VIDEHA

सजा मिलैए,

कतेक सीता नित

रनरास भोगैए ।



ठिबुबारेत जाड

एतेथ जाड

न२ क२ दुखक पहाड ।

केना कष्टत दिन-बाति

केना रीतत

अ जाडक कड वि ।

उजवन छौगन

ईष्टन खडि ईष्ट

ने खडि कोनो ओहाव

घबक चाक कात

खडि राँष्टे-राँष्ट ।

प्रखारक ओहना

प्रखारक रिँछौना

केकवा कह छै

जोग कम्मन

केना कह छै

होग छै जाड स्रहाना ।

कहियो घबसँ निकलि क२ देखियो



VIDEHA

एक बाति अतए रिता क२ देखियो

ठिठुगव क२ मरेए

लोग नित कतेक जना ।

गबिरेकेँ तँ

भगरानो मारे छै

अगव ले ।

तँ खेव पखेवक देह रना

किअ ले भेजे छैक ।

जे ठाहि दग

सबकावक भीखकेँ

अन्नदानक नाँपव

भेठैत मजाकक

गन्दिवा-अरास आ

सबकारी बाहत कोषकेँ ।

ई कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



१. बाजुदेर मण्डवक तीन गेष्ट करिता-चिब प्रतीक्षा/ हाथ/ ठक२. मिहिव
मा- रिदागवी



१



VIDEHA



बाजुदेर मण्डवक तीन गौष्ट करिता-चिब प्रतीक्षा/ हाथ/

ठक

चिब प्रतीक्षा

नीपनौ-पोतनौ घब-दुखाब

कतेक रैब केनौ मार-रहाब

खपनो केनौ सोरहो सिंगार

क२ बहर छी गंतजाब

उताहर भेर मन

पिखासर खडि तन

रितर जागत म्फण

कखन हएत मिनन

मनमे हुनागत स्मन

नमबले जागत प्रतीक्षाक म्फण

खसोथकित भ२ गेर नयन

शी कत छी रिहर हएत जतन



VIDEHA

निम्नसँ रँग भेल खाँथिक कोव
दूखागत देहक पोरे-पोव
मन घेबाएन सपनाक शोव
खहाँक ननक बुनाएन थोड़रै-थोड़
चोकि उठरौं निन्न छन घोव
नै भेल छन भिनसब-भोव
पएबक चेन्सँ हम मानि बहन छी
खहाँ ख एन छरौं से जानि बहन छी
पुनः एकरैव देहकेँ तानि बहन छी
रौपाक निन्नकेँ तोड़ा -ताड़ा
रौखागत सपनाकेँ डाहि-जावि
थोनि अपन सभ घब-दूखावि
चिब-प्रतीक्षा तन-मन सम्हावि ।



हाथ-

हाथ ि सर्ह ले खडि हाथ

खन्हावमे जनमि गेल एमे

नाक, कान, खाँथि, दाँत

गजोतेषा मे ले

खन्हारोमे बहत खडि साथ

सुँयेत खडि सभ कात

जानैत ठैर-ठैर सभ रात

हाथके ले देखैत हाथ

देखैत खडि हाथक कवामात

कतए सँ कते धवि पहुँचन हाथ

हाथसँ मिनैत हाथ

सिबजनक साथ

भ२ जागत खडि रिध्रसक रात

हाथ तँ खडि हमरे साथ

होब किएक हेते खपना रात ।



ठक

हम छी ठक

नै कोनो शिक

मूठ गप भख

साँचक नै पबख

शुकमे ठकलौं घब-पबिराव

आगाँ ठकैत दुनियाँ-सँसाव

ठका-पैसा हजारक-हजार

नगा देलौं सम्पतिक अमाव

ठकैक आदतिसँ नचाव

कतेको कनेत जाव-रैजाव

आग छुठैत पूवा भक

जखनि हमव नगर ठक

एहेन जीत पाव भइ गेल

जिनगी बुँनु रैमाव भइ गेल

सभकेँ एहिना उठैत हेते दबद

आग हमहुँ करैत छी गबद

साँच कतए सँ आरँ हम पाएरँ



VIDEHA

ठकरै कबरै रा ठका जाएरै

सोचरै कोनो एहेन उपाए

ई जातसँ

२



मिहिर न्या

बिदागबी

बिदागबी

समेष्टन अयादक

चित्र चनचित्र

मिज्जनव होगत

भारनाक ओस

अष्टकन गान पब

थबथवागत

मिहिर, स्पर्श सँ

पूर्ण अंदेशो

अनंत सुनपन केँ

शान्ति हएत

समूहक आराज

श्याम अरुण

बकर

ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



पंकज चौधरी (नरवती)- चाबिष्ठा गजल

गजल

१

सभ मात-पिता केव शौख-सेहन्ता रौंखा कबता नाम

मगन जूखानिक माया नगरी रौंखा मनसुख बाम

रौंखु-पिन्नी घबक धवणि थम्हने छथि रैनिक२ थाम

संतति कर्मसँ देह नुकौने कबम केने थुँडि रौंम

रौंखुक खबजन पब मे कुँठानी माँष्टि नगौ ले चाम

जँ अपना कन्हा ह२व पडन त२ जय-जय सीता-बाम

खनतह शौषित सुखा बहन खा घब रँह ले घाम

रौंखुखानी केव खजुरैहि सनकी रौंवी भ२ गेन गाम

झबखे नल्लव कठरौं ले जे तेजनक मिथिना धाम

पबदेसक माया ओमबायन घुमि बहन छै नाम



VIDEHA

अपना आँगन सोन छोड़ा सभ खनकब रीछी ताम
घब छोड़ा घुब - झुड़ा या खेतक कहिया लागत थाम

मोन बूने नहि भारक भाषा भार पुछए नहि दाम
चर बहरँ माँ मैथिल आँगन नेह रैठ जहि ठाम

"नरन" निवेदन मैथिल जनसँ छोड़ु नै मिथिलाम
छे पागक शोभा माथे पब आ चवणहि नीक खवाम

*आखब-२०

२

रौखा केव छुष्टहाबक बाति मिथिला-रिषिअ नियावन काजब
शुभग - सिनेहक ठोप कबिकरौ मोंसी हाथक पाडन काजब

नरवातिक अहि शुभ - रेंनामे अरै अश्रुमिक बाति डेवाउन
माय अपन सतति सभके तै आधि द्यु टोपकावन काजब

अहबिया बाति अमारस केव अ दीप - प्रज झूठ दुषि बहन
बाति दिरानिक लेसनहुँ शैमी तंत्र - मन्त्र उपचावन काजब

कते स्वहन्न स्रप सजोने कजवायन आधिक पेपनी पब



VIDEHA

रैवसाति - पंचमी - मधुश्रीरनि नरकनिया के धावन काजब

नर - यौरन के नर - तर्बग ग "नरन" मोन भसियेरै कबते

गोव - गोव चला सन झूठ पव सजनी किये लेलावन काजब

*आखब-२४

३

सजनी बहि - बहि शैमी रारी

भवि कजरौठा काजब पावी

थोपि बहन छी काजब सौसे

ओहिना मादक नयना भारी

आँथिसँ आँथिक फेबम-फेबी

जेना होय मडुठक के थावी

देह बहन आ प्राण रिनेने

नयन - राण सँ जिरते मावी

कबिया आँथिक पोथवि कात

स्नपन सेहन्ता केव रैसारी



कहू छोटि गे आँखि अमृत

पीरि कियेक हम दाक - तावी

मोन के जीते जे तकवा पव

"नरन" किये ने जीरन हारी

*आख-११

४

गे प्रथम जे उठन आरि रौक रौद के

भइ गेन कान ठाठ सभ दहब-दियाद के

उपजा के रैबमे तइ हामु पिजा बहन

अहि खेतमे कदा देत पाजन-खाद के

ममरी तइ खागेलौ सभ बनि-नपष्टि कइ

जे पेजनमे रँचन छै से पीत गाद के

रँष्टि-चूष्टि सभकिछ रँखा नगा निय

सहतेक गे अनेरे रँबदिक नाद के



VIDEHA

गीजन जे पाङ्गके ओ लीजत की नोबसँ

रानव की जानऽ गेन आदक स्वाद के

भतरैबी के प्रथा ओ चनन गामे-गाम

कहते समाद के आ सनते समाद के

करेजसँ नधि ओ "नरन" पेष्टसँ छले

सँध केव गंध उडन सँग पाद के

*आखब-१३

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



रिन्दशिव ठाकुर, धनुषा नेपाल, हान; कताव

रिन्दशिव ठाकुर, धनुषा, नेपाल । हान- कताव ।

गजन

एखन धवि पैसा कमेलाँ कि ले ये ?

खातामे पैसा पठेलाँ कि ले ये ?

घबक स्थिति भाडमे जग्न रुदा

हमवा लेव हसुवी रनेलाँ कि ले ये ?

हुसक घब हमवा कष्ट छैथ



शेहबमे रिन्डिउ रनेनौ कि ले ये ?

काँठव पहिक अहाँ ताहिसे गय ले
हमबा लेव चुनबी वषनौ कि ले ये ?

रहुते कमाथ छी बुधनाके कहर
हमबा लेव हिस्सा वगेनौ कि ले ये ?

गीत

१

अनावसन छिँकव अहाँक जरानी
मदहोस देहियापव ताखो पकेसानी
बस ठपठप जेना पाकव अवनैरौ
एकठा अदापव अछि दुनियाँ दिराना ।

पायव रजा दिव घायव कएनौ
रिन रौदव रखा करै छी
आरि आगू कोबामे त्रैसू
गाव दिख कनी दाँत कटै छी ।

दिव लेडर अषबाध छिँक
दिव जोडर ले अछि कोनो पाप
रदनमे लेवी आ कमबमे वरुठा
चाही तँ अहाँ दिख नाप ।

रुड नीक वलै छी साडी अखरौ
सुरै जखन वगरै छी
चाव चवी अहाँ हिनै जेसन
दिव हमव धडकरै छी ।

२

रौत अहाँक रेशम रेशम
ठमाँठव जेहन गाव अछि
ओठ जेना झीठ वनीपप
आ कपो कतेक रौरौ अछि ।



VIDEHA

देख अहाँकेँ जिस्म सवारी
रैतेत अछि हमब रेतारी
एकरैब रस प्रेम कबइ दी
ने हएत अहाँकेँ कोण खवारी ।

दिर अहाँक निरुब सोना
चान्दी सन चमकैत मन
उपवसँ पिताएँ रैसी
झुदा भीतवसँ नम्वब रन ।

जकबी चीज जीरनमे चाही
अहाँ ओ रँजाव छी
सेरँ, सन्ताना, अंगुब आ
अही हमब अनाव छी ।

हीवा, मोती, धन-दौरत
अही डोली कहाव छी
रिन जीरन अन्हाव अहाँकेँ
अही खुशीक रँहाव छी ।

चेतना

स्वार्थ-स्वार्थसँ भवन सँसाव
छिनए सरँके सरँ अपिकाव
अपन स्वाभिमान रँचएरौक हेतु

करे नाखो अलाचार । । १ । ।

की कहु दुनियाँक बीत
किछु ने समयमे आरैए
अपन मूर्त शान सौगात ना
मिथ्या दोस लगरैए । । २ । ।



VIDEHA

मानर भ२ मानरता भुवरै
ए केहन खनेतिक रीत कछ
नैतिक पतन, खस्तिरुमे दाग त२
खरै कथिक पश्चताप कछ । । ३ । ।

खपीत स्रु धधकेत अनसान
खपनही जैसन सरके मान
स्रार्थ रीना जौ जिनदगी छैरैरै
निश्चित रैनत देशे महान । । ४ । ।

ए कनापव खपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।

रानाना धते

रचा लोकनि द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्महृत् (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम खपन दनु हाथ देखरौक
चाही, खा ए श्लोक रजरौक चाही ।

कवाथे रसते नक्षत्राः कवमन्त्र सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक खागाँ नक्षत्रा रसित छथि, कवक मधामे सबस्रती, कवक मुनेमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमन्त्र जनार्दनः ।

दीपाथे शंकरः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥



VIDEHA

दीपक मून भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागेमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिर्कव स्थित छथि । हे संपाज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३.सुतरीक कान-

वार्म स्कन्द हनुमन्त रैनतेर्य वृकोदवम् ।

शियने यः अरेल्लिं दूःस्नपस्तस्य नथति ॥

जे सभ दिन सुतरीसँ पहिने वाम, क्रमावस्वामी, हनुमान्, गकड आऽ तीमक स्वर्ण करैत छथि, हुनकव दूःस्नप नथ, भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गने चैर गोदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सल्लिषिं क्रक ॥

हे गंगा, यद्गना, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी पाव । एहि जनमे खपन साल्लिषा दिख ।

३.उत्तरं यसेन्दस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्षी तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सन्दक उत्तरमे आऽ हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आऽ उत्तका सन्तति भावती कहरैत छथि ।

३.अहत्या द्रौपदी सीता तारा मन्दादवी तथा ।

पशुकं ना अरेल्लिं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहत्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मन्दोदवी, एहि पाँच साप्ती-स्वीक स्वर्ण करैत छथि, हुनकव सभ पाप नथ, भऽ जागत छन्हि ।

१.अग्निथोमा रैनिर्रासो हनुमांश्च रिभीषणः ।

ध्रुपः पशुवामश्च सन्तते चिबङ्गीरिनः ॥

अग्निथोमा, रैनि, रास, हनुमान्, रिभीषण, ध्रुपाचार्य आऽ पशुवाम- अ सात ठाँ चिबङ्गीरी कहरैत छथि ।



VIDEHA

+साते भरतु स्वप्नीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा नह्नी यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साध्य सतामस्तु प्रसादान्तुश्च धूर्जष्टैः

जाल्हरिफेननेखेर यन्नुपि शिनिः कना ॥

९. रौलोहं जगदानन्द न मे रौला सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्मित मन्त्रशक्त यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निवन् प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकता देरताः । स्रवाङ्कृतिश्रुन्दः । षड्जः
स्रवः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरक्षि जायतामा वाष्ट्रे वाजुन्यः श्वरेऽगमराऽतिरापी महावथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वीटान् डरानाशुः सन्तिः पृथ्वीर्योरा जिष्णु वथेष्ठाः सन्धेयो हाराशु
यजमानश्च रीरो जायतां निकामे-निकामे नः पृज्ज्या रर्षितु फनरवा नऽवषधयः पचास्तां
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयान्तु ।

ॐ दीर्घार्तिर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोग्य आ सरिक्त रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शत्रुके नशि
कएनिहाव सनिक उपेन्न होथि । अपन देशीक गाय खुर दुध दय रौली, रैवद भाव रहन
कवधमे सम्मम होथि आ घोड । ह्रवित कर्पे दोगय रौना होए । स्त्रीगण नगबक नेत्र
कवरीमे सम्मम होथि आ हारक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरैयरीना आ नेत्र देरीमे
सम्मम होथि । अपन देशीमे जखन आरथक होय रर्षा होए आ ओषधिक-रुष्टी सरिदा
पविपक होगत बहए । एरु फमे सभ तवहे हमवा सभक कर्णा होए । शत्रुक
बुद्धिक नशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मनुष्यके कोन रसुक गच्छा कवरीक चाही तकव रर्षन एहि मन्त्रमे कएन गेन खडि ।

एहिमे राचकब्रह्मापमानड् काव खडि ।

अनुय-



VIDEHA

ब्रह्मन् - रिद्या खादि ग्रथसँ पविपूर्ण ब्रह्म

बाष्प्रे - देशमे

ब्रह्मरुसी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकठ

खा जायता- उपेन्न हेध

बाजुन्यः - बाजा

शुरे२ रिना डव रीना

गमर्या - राण चनेरामे निपुण

२तिर्यापी-शित्तुकेँ तावण दय रीना

महावथो-पेघ वथ रीना रीव

दोग्ध्री-कामना(दुध पूर्ण कवण रीनी)

धेनुर्नीतानड्रानाशुः धेनु-गौ रा राणी रीतानड्राना- पेघ रीवद नाशुः - खाशुः - ह्रवित

सन्धिः - घोड १

पुवञ्चिर्योरा- पुवञ्चि- रारहावकेँ धावण कवण रीनी येरिा-सुवी

जिष्ठु-शित्तुकेँ जीतए रीना

वथेग्याः - वथ पव स्थिब

सुभेयो- उभम सभामे

हराशु-हरा जेहन

यजमानशु-बाजाक बाजामे

रीरो-शित्तुकेँ पवाजित कवणरीना

निकामे-निकामे-निश्चयहकठ कार्यमे



VIDEHA

नः - हमब सभक

पुर्ज्या-मेघ

रर्षतु-रर्षा होए

हनरवा-उत्तम हन रँना

उषधः - गुषधिः

पच्यन्ता- पाकए

योगेष्कमो-खनशु नशु करैरौक हेतु कएन गेन योगक बम्का

नः'-हमवा सभक हेतु

कप्पताम्-समर्थ होए

त्रिक्थिक खनुराद- हे ब्रँह्म, हमब बाज्यमे ब्रँह्म नौक धार्मिक रिद्या रँना, बाज्य-
रीव,तीवदाज, दुष दए रौनी गाय, दौगय रँना जन्तु, उद्यमी नावी होथि । पार्जन्य
आरशुकता पडना पव रर्षा देथि, हन देय रँना गाछ पाकए, हम सभ सर्पति
खर्जित/सर्वम्कित कबी ।

8.VI DEHA FOR NON RESI DENTS

8.1 to 8.3 MAI TH LI LI TERATURE I N ENGLI SH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.2.The_Sci ence_of _Wor ds- GAJENDRA THAKUR translated by
the aut hor hi mself

8.1.3.On_t he_di ce-boar d_of _t he_mil lenni um- GAJENDRA
THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA VERMA translated by
Dr. Raj iv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comments to ggajendra@videha.com



बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

गणेशिकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-गणेशिकोष- प्रोजेक्टके आगु रँड १५, अपन समार
आ योगदान ग्रा-मेत द्वावा ggajendra@videha.com पब पठाडु ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अंठबनेठपब पहिन रँब सर्च-
डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सरब आधारित -Based on ms-sql server
Maitili-English and English-Maitili Dictionary.

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठिक्रम

१.नेपाव आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक शैली

१.१. नेपाक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाओव मानक उचावण आ लेखन
शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादरक धारणाके पूर्ण रूपसँ सङ्ग तह निर्धारित)

मैथिलीमे उचावण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार. पञ्चमाक्षरानुस्वात ङ, ए, ण, न एर म अरैत अछि । संस्कृत
भाषाक अनुसार शिष्टक अनुस्वमे जाहि रत्नाक अक्षर बँहत अछि ओही रत्नाक पञ्चमाक्षर
अरैत अछि । जेना-

अङ्ग (क रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्वमे ङ् आएत अछि ।)

पञ्च (च रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्वमे एं आएत अछि ।)

खल्ल (छ रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्वमे ण् आएत अछि ।)

सङ्घि (त रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्वमे न् आएत अछि ।)

खञ्ज (प रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्वमे म् आएत अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखत जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रँदनामे अप्पिकाशि
जगहपब अनुस्वारक प्रयोग देखत जागद्ध । जेना- अंक, पंच, खंड, सधि, खंड



VIDEHA

आदि । ब्राकबारीद पल्लित गोरिन्द नाक कहरै छनि जे करखा, चरखा आ ठरखासँ पूर् खनुबाब निखत जाए तथा तरखा आ परखासँ पूर् पढमास्करे निखत जाए । जेना-
खंक, चंचल, खंडा, खलु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि
रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खलु आ कम्पनक जगहपब सेहो खंत आ कंपन
निथैत देखत जागत छथि ।

नरीन पद्धति किद्ध सुरिषाजनक खरथु छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत
होगत छैक । झुदा कतेक रँब हस्तलेखन रा झुदामे खनुबाबक छोट सन रिन्द
स्पष्ट, नहि लेनासँ खर्थक खर्थ होगत सेहो देखत जागत छति । खनुबाबक
प्रयोगमे उचावषा-दोषक समुारना सेहो ततरँ देखत जागत छति । एतदर्थ कसँ
न२ क२ परखा धवि पढमास्करेक प्रयोग कवरँ उचित छति । यसँ न२ क२ त्र धविक
खम्बक समँ खनुबाबक प्रयोग कवरँमे कतहू कोनो बिराद नहि देखत जागद्ध ।

२.ठ आ ट : ठक उचावषा “व् ह”जकाँ होगत छति । खतः जत२ “व् ह”क उचावषा
हो ओत२ मात्र ट निखत जाए । खान ठाम खानी ट निखत जएरँक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडखा, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, बूठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपर्यङ्क शिद्ध सभकेँ देखनासँ ङ स्पष्ट होगत छति जे साधावषातया शिद्धक शुकमे ठ
आ मषा तथा खलुमे ट खरँैत छति । गएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो नागु
होगत छति ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उचावषा रँ कएन जागत छति, झुदा ओकवा रँ कपमे
नहि निखत जएरँक चाही । जेना- उचावषा : रँदनाथ, रिद्या, नरँ, देरँता, रिङ्गु, रँशि,
रँन्दना आदि । एहि सभक स्थानपब क्रमशः रँदनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिङ्गु, रँशि,
रन्दना निखरँक चाही । सामान्यतया र उचावषाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत छति ।
जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उचावषा “ज”जकाँ करैत देखत जागत छति, झुदा
ओकवा ज नहि निखरँक चाही । उचावषामे यङ्ग, जदि, जझुना, जुग, जारँत, जोगी,
जदू, जम आदि कहत जाएरँता शिद्ध सभकेँ क्रमशः यङ्ग, यदि, यझुना, यग, यारत,
योगी, यदू, यम निखरँक चाही ।



३.ए आ य : मैथिलीक रत्ननीमे ए आ य दू निखन जागत छि ।

प्राचीन रत्ननी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रत्ननी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत छि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थारु सहित किछु जातिमे शिष्टक आवन्नामे “ए”केँ य कहि उचारण कएन जागत छि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीने पञ्चतक अनुसवण कवरौ उपहाङ्ग मानि एहि प्रसुकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल छि । कि एक उँ दूनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रौत नहि छि । आ मैथिलीक सरसापावणक उचारण-शीली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकष्ट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केन, ठरँ आदि कपमे कतहू-कतहू निखन जाधरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणात करैत छि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवम्पवामे कोनो रौतपव रौन दैत कार शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हूकहि, अपनहू, ओकवहू, तकौनहि, चोष्टहि, आनहू आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत छि । जेना- हूकके, अपनो, तकौने, चोष्ट, आनो आदि ।

१.म तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकारितः मक उचारण थ होगत छि । जेना- मडान्द (खडयन्द), योडशी (खोडशी), मष्टकोण (खष्टकोण), रूषेशी (रूथेशी), सन्नाथ (सन्नाथ) आदि ।

+.पुनि-रूप : निम्नलिखित अरस्थामे शिष्टसँ पुनि-रूप भ२ जागत छि:

(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत छि । ओहिमे सँ पहिने अक उचारण दीर्घ भ२ जागत छि । ओकव आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा रिकारी (/ २) नगाओन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपुर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।



পঠং গেনাহ, কং জেন, উঠং পডতৌক ।

(খ) পূর্কানিক ধত খায (খাএ) প্রবযমে য (এ) ব্রশু ভং জাগড, হুদা লোপ-সূচক
রিকাবী নহি বগাওন জাগড । জেনা-

পূর্ণ কপ : খাএ (য) গেন, পঠায (এ) দেই, নহাএ (য) খএনাহ ।

খপূর্ণ কপ : খা গেন, পঠা দেই, নহা খএনাহ ।

(গ) স্রী প্রবয এক উচাবণ ফিয়াপদ, সন্তা, ও বিশেষণ তানুমে ব্রশু ভং জাগত
খডি । জেনা-

পূর্ণ কপ : দোসবি মানিনি চনি গেনি ।

খপূর্ণ কপ : দোসব মানিন চনি গেন ।

(ঘ) বর্তমান ধ্রদন্তক খন্তিম ত ব্রশু ভং জাগত খডি । জেনা-

পূর্ণ কপ : পড়ত খডি, বঁজৈত খডি, গরৈত খডি ।

খপূর্ণ কপ : পড় খডি, বঁজৈ খডি, গরৈ খডি ।

(ঙ) ফিয়াপদক খরসান এক, উক, ঐক তথা ঠীকমে ব্রশু ভং জাগত খডি । জেনা-

পূর্ণ কপ: ডিযৌক, ডিযৌক, ডঠীক, ডৌক, ডৈক, খরিতৈক, হোগক ।

খপূর্ণ কপ : ডিযৌ, ডিযৌ, ডঠী, ডৌ, ডৈ, খরিতৈ, হোগ ।

(চ) ফিয়াপদীয় প্রবয হ, হ্ তথা হকাবক লোপ ভং জাগড । জেনা-

পূর্ণ কপ : হুহি, কহনহি, কহনহু, গেনহ, নহি ।

খপূর্ণ কপ : হুনি, কহননি, কহনৌ, গেনহ, নগ, নহি, নৈ ।

৯.প্লনি স্থানান্তবণ : কোনো-কোনো স্রব-প্লনি খপনা জগহসঁ হটি কং দোসব ঠাম চনি
জাগত খডি । খাস কং দ্রস্র গ খা উক স্রল্লকমে গা রাত নাগু হোগত খডি ।
মৈথিলীকবণ ভং গেন শিছক মধ্য রা খন্তুমে জঁ দ্রস্র গ রা উ খারিএ তঁ ওকব প্লনি
স্থানান্তবিত ভং এক খক্ষব খাগাঁ খারি জাগত খডি । জেনা- শিনি (শিগন), পানি
(পাগন), দানি (দাগন), মাঠি (মাগঠি), কাড (কাউড), মাস্র (মাউস) খাদি । হুদা
তসেম শিছ, সভমে গা নিখম নাগু নহি হোগত খডি । জেনা- বশ্মিকৌ বগশ্ম খা
স্রপাশ্বকৌ স্রপাউস নহি কহন জা সকেত খডি ।



१०. हनलु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनलु ()क आरथकता नहि होगत छि । कावण जे शिछक अलुमे अ उचावण नहि होगत छि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आधन (तसेम) शिछ, सभमे हनलु प्रयोग कएन जागत छि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा सम्वन्धी निखम अन्वसाव हनलुरिहीन बाखन गेन छि । ऋदा राकवण सम्वन्धी प्रयोजनक लेन अखारथक स्थानपव कतहु-कतहु हनलु देन गेन छि । प्रसुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दुनु शैलीक सबन आ समीचीन पम्क सभकेँ समेष्ट क२ रर्ण-रिग्यास कएन गेन छि । स्थान आ समयमे रँचतक सम्वन्धि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँरँता हिसारँसँ रर्ण-रिग्यास मिलाओन गेन छि । रतमान समयमे मैथिली मात्रभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहन पवित्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन छि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेषता सभ कर्षित नहि होगक, ताहु दिस लेखक-मन्दन सचेत छि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहँ छनि जे सबनतक अन्वसन्धानमे एहन अरस्था किन्हु ने आरँ देरँक चारी जे भाषाक रिशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक धावणाकेँ पूर्ण कपसँ सम्वन्धि न२ निधाबित)

१.२. मैथिली अकादमी, पठना द्वारा निधाबित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कावसँ आग धवि जाहि रर्तनीमे प्रचलित छि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे विखन जाय- उदाहरणार्थ-

ब्राह्म

एखन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अब्राह्म

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (ब्रैकस्पिक कपेँ ब्राह्म)

ईछ, अहि, ए ।



२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकल्पिकतया अपनाओव जाय: भ२ गेव, भ३ गेव रा भ४ गेव । जा बहव अछि, जाय बहव अछि, जा३ बहव अछि । कव गेवाह, रा कवय गेवाह रा कव३ गेवाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' विखव जाय सकैत अछि यथा कहवनि रा कहवहि ।

४. 'र्ष' तथा 'र्षु' ततय विखव जाय जत' स्पृष्टतः 'अर्ष' तथा 'अर्षु' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा- देखैत, छुटैक, रौंखा, छुटैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयाङ्ग होयत: जैह, सैह, अएह, उर्षह, त्रैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्रार्ध थिक । यथा- ब्राह्म देखि अरैह, माविनि गेवि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्रुतव द्रुय 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण अदिमे तँ यथारत बाखव जाय, किन्तु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक रूपे 'अ' रा 'य' विखव जाय । यथा:- कयव रा कएव, अयवाह रा अएवाह, जाय रा जा३ अलादि ।

८. उच्चारणमे दू स्रुतक बीच जे 'य' ध्वनि स्रुतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक रूपे देव जाय । यथा- धीआ, अर्द्धा, रिआह, रा धीया, अर्द्धया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्रुतव स्रुतक स्थान यथासंभव 'अ' विखव जाय रा सान्नासिक स्रुव । यथा:- मैअण, कनिअण, किवतनिअण रा मैअँ, कनिअँ, किवतनिअँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित रूप ब्राह्म:- हाथकै, हाथसँ, हाथे, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अनुस्वार सर्खा लज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप 'केव' बाखव जा सकैत अछि ।

११. पूर्वकाविक क्रियापदक रौद कय रा कए अरुय रैकल्पिक रूपे वगाओव जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ अलादि विखव जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदवा अनुसाव नहि विखव जाय, किन्तु छापक सुरिधार्य अर्द्ध



‘ङ’ , ‘ञ’ , तथा ‘ण’ क रँदवा अन्वयारो विखव जा सकैत अछि । यथा:- अङ्ग, रा अङ्क, अञ्जव रा अञ्ज, कण्ठ रा कंठ ।

१४. हवत चिह्न निश्चयतः वगाओव जाय, किन्तु रिभञ्जिक सँ अकाराति प्रयोग कएव जाय । यथा:- श्रीमान्, किन्तु श्रीमान्क ।

१५. सभ एकव कावक चिह्न शिद्धमे सँ क विखव जाय, छँ क नहि, सहाङ्क रिभञ्जिक हेतु कवाक विखव जाय, यथा घव पक्क ।

१६. अन्वयारिके चन्द्रकिन्दू द्वावा रङ्क कयव जाय । पर्वतु ऋदणक सुरिधार्य हि समान जर्दव मात्रापव अन्वयारिक प्रयोग चन्द्रकिन्दूक रँदवा कयव जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदवा हि ।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयव जाय ।

१८. समस्त पद सँ क विखव जाय, रा हाङ्कफेनसँ जोडि क , छँ क नहि ।

१९. विश्व तथा दिश्व शिद्धमे रिक्काबी (२) नहि वगाओव जाय ।

२०. अँक देरनागवी कपमे वाखव जाय ।

२१. किञ्च ध्निक लेव नरीन चिह्न रँनराओव जाय । जा अ नहि रँनव अछि तारँत एहि दू ध्निक रँदवा पूरँरत् अय/ आय/ अय/ आय/ आओ/ अओ विखव जाय । आकि ए रा ओ सँ रङ्क कएव जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/१७ श्रीकालु ठाकुर ११/१७ सुरेन्द्र मा -सुमन ११/१७

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौन्ड कएव कएव ग्राह्य):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना राजू नाम , ऋदा ण क उच्चारणमे जीह मुधामे सँ (नै सँटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना राजू गणेशी । तावरा शिमे जीह तारँसँ , षमे मुधसँ आ दन्त समे दाँतसँ सँटैत । निर्गी, सभ आ शौषण राजि क२ देखु । मैथिलीमे ष केँ रौदिक संस्कृत जकाँ अ सेहो उचरित कएव जागत अछि, जेना रमा, दोष । य अनेको स्थानपव ज जकाँ उचरित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशी संयोग आ



गडसे उचवित होगत थडि) । मैथिलीमे र क उचावा र् नै क उचावा स आ य क उचावा ज सेहो होगत थडि ।

ओहिना द्रस्र ग रेशीकान मैथिलीमे पहिने रोजन जागत थडि कावण देरनागवीमे आ मिथिनाम्बरमे द्रस्र ग थम्बरक पहिने निखनो जागत आ रोजनो जएरौक चाही । कावा जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उचावण होगत थडि (निखन तँ पहिने जागत थडि) रुदा रोजन रौदमे जागत थडि), से शिक्षा पञ्चतिक दोषक कावण हम सभ ओकर उचावण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

थडि- थ ग ड ँड (उचावण)

डथि- ड ग थ टैथ (उचावण)

पहुँचि- प हूँ ग च (उचावण)

थारँ थ आ ग ङा ए ँ ओ ओ थं थः म् ँ सभ नेन मात्रा सेहो थडि, रुदा ँमे ङा ँ ओ ओ थं थः म् केँ सहाङ्कव कपमे गगत कपमे प्रहाङ्क आ उचवित कएन जागत थडि । जेना म् केँ वी कपमे उचवित कवरँ । आ देखियौ- ँ नेन देखिओ क प्रयोग अन्वित । रुदा देखिँ नेन देखिये अन्वित । क् सँ हूँ धवि थ सम्मिन्त भेनासँ क सँ हूँ रनेत थडि, रुदा उचावण कान हनन्त हाङ्क शिष्टक थन्तक उचावणक प्रवृत्ति रँठन थडि, रुदा हम जखन मनोजमे ज् थन्तमे रँजेत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजेत स्वरँधि- मनोज२, रासुरमे ओ थ हाङ्क ज् = ज् रँजेत छथि ।

हेव ड् थडि ज् आ ए० क सहाङ्क रुदा गगत उचावण होगत थडि- गा । ओहिना म् थडि क् आ ष क सहाङ्क रुदा उचावण होगत थडि छ । हेव शिं आ व क सहाङ्क थडि थै (जेना श्रिमिक) आ स् आ व क सहाङ्क थडि स् (जेना मिस्र) । ए नेन त+व ।

उचावणक आँडियो कागत बिदेह आकाश्रि <http://www.videha.co.in/> पव उपनद्ध थडि । हेव केँ / सँ / पव पूर्व थम्बरसँ सँ क२ निथु रुदा तँ / क२ सँ क२ । ँमे सँ मे पहिन सँ क२ निथु आ रौदरँना सँ क२ । थंकक रौद ठी निथु सँ क२ रुदा थन्त ठी निथु सँ क२ जेना

डसँ रुदा सभ ठी । हेव उथ य सातम निथु- डठम सातम ले । घवरँवामे रँवा रुदा घवरँवामे रँवा प्रहाङ्क करु ।

बहए-

बैठ रुदा सकैथ (उचावण सकै-ए) ।



ऋदा कथनो कान बह्म था बहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्या जगहमे पार्किंग कबरौक अत्रास बहै ओकवा । पढ्तापव पता नागत जे दूनदून नाम्ना ङा ड्रागरव कनाई ब्भसक पार्किंगमे काज करैत बह्म ।

ढुलै, ढुनए मे सेहो ई तबहक भेन । ढुनए क उचावण ढुन-ए सेहो ।

संयोगने- (उचावण संजोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे लै कक , पद्यमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

वामक था संगे (उचावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उचावण)

चन्द्रबिन्दू था अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कंठ धविक प्रयोग होगत अछि ऋदा चन्द्रबिन्दूमे लै । चन्द्रबिन्दूमे कनेक एकावक सेहो उचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उचावण वाम स२) वामकै- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकै भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेन हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिष्ट सँहक प्रयोग अराद्धित ।

के दोसव अर्थे प्रहाङ्ग भ२ सकैए- जेना, के कहवक ? रिभङ्गि “क”क रँदना एकव प्रयोग अराद्धित ।

नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उचावण था लेखन - लै



VIDEHA

ॐन्न क रँदनामे न्न जेना महन्नपूर्ण (महॐन्नपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र
तीन अक्षरक सँहाआक्षरक प्रयोग उचित । सम्पति- उचावण स स्प ङ त (सम्पति नै-
कावण सही उचावण आसानसँ समुन्नर नै) । ऋदा सरँेतिम (सरँेतिम नै) ।

बाश्चिद्य (बाश्चिद्य नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैने/ पोछै नेव/ पोछैए नेव

पोछैए/ पोछैए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछैए/ पोछै

ओ लोकनि (लृण क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिने/

ओहि नेव/ ओही व२

ऊअरँे/ रँेसरँे

पँचभअया

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे जस्र आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अन्नचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँे

होएत / हएत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौँसे/ सौँसे

रँड /

रँडी (मोवाओव)

गाए (गाअ नहि), ऋदा गाअक दुष (गाअक दुष नै ।)

बहँे/ पहिबँे

हमही/ अही

सरँे - सभ



VIDEHA

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रूसरै - समयसरै

रूसरौ/ समयसरौ/ रूसरदहू - समयसरदहू

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होअन/ होनि

जाअन (जानि नै, जेना देन जाअन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पअर/ जाअर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, कै, सँ, पव (शेछसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेछसँ छँ क२) ऊदा दूँ रा रैसी
रिभञ्जि सँग बहनापव पतिव रिभञ्जि ठाँकेँ सँ। जेना **अमे सँ** ।

एकँ, दूँ (ऊदा कएँ)

रिंकारीक प्रयोग शैछक अन्तमे, रीचमे अनारथक कर्पे नै। आकावाञ्च आ अन्तमे अ
क रीच रिंकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ**)

. आ/ दिय . आ, आ नै)

अपोज्झाँकीक प्रयोग रिंकारीक रीदनामे कवर अन्तित आ मात्र हाँसक तकनीकी
नूनताक परिचायक)- ओना रिंकारीक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ
रतनी आ उचावण दूँ ठाम एकव लोप बहत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप
बहिते अछि)। ऊदा अपोज्झाँकी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिर केसमे होगत अछि आ
फ्रेचमे शैछमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो
एकव उचावण रैजोन डेसैव होगत अछि, माने अपोज्झाँकी अरकाशे नै दैत अछि
रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिंकारीक रीदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो
अन्तित)।

अगमे, एहिमे/ अमे



VIDEHA

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) ये (अनुस्वार बहित)

भ२

मे

द२

ठँ (त२, त नै)

सँ (स२ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुआरे/ तगमे/ तगने

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ ऋदा एकव एकठां थस प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कठित बठित अथ

नै/वथ जेना नैसँ/ वगने/ नै दुआरे

नहँ/ नौ

गेनौ/ नेनौ/ नेवहँ/ गेवहँ/ नेवहँ/ नेवँ

जग/ जाहि/ जे

जाहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जेठाम

एहि/ अहि/



VIDEHA

अग (राकक अतमे त्राया / अं

अगढ/ अछि/ अँढ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरँ

भनेही/ भवहि

ते/ तँग/ तँअ

जाअरँ/ जअरँ

वग/ वे

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/ गे

छनि/ छन्हि ...

समय शेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपव
गत्यादि । असगवमे छदअ आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे गत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/ अग/ अं

अगढ/ अछि/ अँढ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओअ



VIDEHA

सीथि/ सीथ

जरीरि/ जरीरी/

जरीरं

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तँग/ तँ

जाएरं/ जएरं

नग/ ने

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

डनि/ डन्हि

चकन खडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्पमेसँ लेखएज एडीटिब द्वारा कान कप चुनन जेरौक चाही:

रौटेड कएन कप त्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँरँना, हेम'रँना/ होयरँक/होरँयरँवा /होएरँक

२. था/था२

था

३. क' नेने/क२ नेने/क३ नेने/क४ नेने/न/व२/नय/व३

४. भ' गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव



VIDEHA

३. कब' गेवाह/कब२

गेवह/कब३ गेवाह/कब३ गेवाह

७.

विश्व/दिश्व विष/दिय/विश्व/दिय/

१. कब' रैना/कब२ रैना/ कब३ रैना कबैरैना/क'ब' रैना /

कबैरावी

+ रैना रना (प्रकष), रानी (स्वी) २

आङ्व आङ्ग

१०. प्रायः प्रायह

११. दूःख दूख १

२. चलि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह देवथिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१५. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छलैन/ छवनि

१७. चलैत/दैत चवति/दैति

१९. एथनो

अथनो

१४.

रैठनि रैठथन रैठहि

१६. ७/७२(सरनाम) ७

२०



VIDEHA

७ (संयोजक) ७/७२

२१. कागि/कागिं कागर्ग/कागर्गु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-नुकव ना-नुकव

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२७. जा

बहव/जाय बहव/जाए बहव

२९. निकवय/निकवए

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाए वागव/ वगव निकव/रँहवै वागव

२४. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतए/ ७तए

२९.

की कुवव जे कि कुवव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावरँ) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हँसए/ हँसय हँस२

३४. नौ आकि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव

३७. छह/ सात छ/छः/सात

३९.



VIDEHA

की की/ की२ (दीर्घिकावाच्यमे २ रजित)

३५. जरारै जरारै

३६. कबयताह/ करेताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४९

गेवाह गधवाह/गयवाह

४२. किछ खाव/ किछ ँव/ किछ खाव

४३. जाग छव/ जागत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँचि/ भेटै जागत छव/ भेटै जाग छव पहुँचि/ भेटै जागत छव

४३.

जरान (हरा)/ जरान(फेजी)

४७. वय/ वय क/ क२/ वय कय / व२ क२/ व२ कय

४९. व/व२ कय/

कय

४५. एखन / एखने / अखन / अखने

४६.

अखिके अखिके

३०. गहीव गहीव

३१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

३२. जेकाँ जेकाँ/

जकाँ

३३. तेहिना तेहिना

३४. एकव अकव



VIDEHA

ॐ.ॐ. **रहिनउ** रहिनोअ

ॐ.७. **रहिन** रहिनि

ॐ.१. रहिन-रहिनोअ

रहिन-रहनउ

ॐ.१. नहि/ नै

ॐ.२. **कवरौ** / कवरौय/ कवरौअ

७०. **तँ**/ त २ तय/तअ

७१. **भैयारी** मे छेष्ट-**भाअ/भै**, जेष्ट-**भाय/भाअ**

७२. गिनतीमे **दू** भाअ/भाअ/भाँअ

७३. अ पौथी **दू** भाअक/ भाँअ/ भाअ/ नैन । यारत **जारत**

७४. माय मे / **माअ** कदा **माअक** मयता

७५. **देहि**/ **दअन** दनि/ दअहि/ दयहि **दहि**/ दैहि

७७. **द**/ **द२**/ **दअ**

७१. **उ** (संयोजक) ७२ (सरनाम)

७१. **तका** कअ तकाय **तकाअ**

७२. **पैरे** (on foot) **पअरे** कअक/ कैक

१०.

ताहमे/ ताहमे

११.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कअ / क२

१३. **रैननाय/रैननाअ**

१४. **कैवा**



VIDEHA

१३.

दिनका दिनका

१७.

ततहिँ

११. गवरौवन्हि/ गवरौवनि/

गवरौवन्हि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१६.

चेन्हे चिन्हे (अशुभ)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. एखुनका अखुनका

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगवक/ सुगव

+७. सठ्ठाक सठ्ठाक +७.

छुरि

+१. कवगयो/उ करैयो ले देवक /कबियो-कवगयो

+४. प्रौवि

प्रौध

+६. सगड १-साँष्ट

सगड १-साँष्ट

६०. पएरे-पएरे पेरै-पेरै



VIDEHA

११. खेवथरौक

१२. खेजेरौक

१३. वगा

१४. होथ- हो होथथ

१५. रूमव रूमव

१६.

रूमव (संशोधन अर्थमे)

१७. येह यथ / अथ / सैह / सथ

१८. तातिव

१९. अथनाय- अथनाथ / अथनाथ / एनाथ

२०. निन्न- निन्द

२१.

रिन्न रिन्न

२२. जाथ जाथ

२३.

जाथ (in different sense)-last word of sentence

२४. छत पव अरि जाथ

२५.

ले

२६. खेवाथ (play) खेवाथ

२७. शिकाथत- शिकायत

२८.

ठप- ठप

२९.



पठ- पठ

११०. कनिष/ कनिये कनिषे

१११. बाकस- बाकसे

११२. होष/ होय होष

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. बुंमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बुंमएवहि/बुंमेवनि/ बुंमयवहि (understood himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. खधाष- खधाय

११८.

मोन पाडवखिन्ह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिन्ह

११९. कैक- कएक- कएकएक

१२०.

वग वग

१२१. जबेनाष

१२२. जबेनाष जवउनाष- जवएनाष/

जबेनाष

१२३. होषत

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

चिखेत- (to test) चिखेत

१२६. कबषयो (willing to do) करैयो



VIDEHA

१२१. जेकवा- जकवा

१२१. तकवा- तेकवा

१२२.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१२०. कबरँयनहँ/ कबरँएनहँ/ कबरँेनहँ कबरँेनौ

१२१.

हाकि (डचाकष हाकक)

१२२. ओजन रजन खरसोच/ खरसोस कागत/ कागच/ कागज

१२३. खाधे भाग/ खाध-भागे

१२४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१२५. नए०/ ले

१२६. रँचा नए०

(ले) पिचा जाय

१२१. तखन ले (नए०) कँत खडि । कँत/ सुने/ देखे डव ङदा कँत-कँत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-देखेत

१२१.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१२२. कमाथ-धमाथ/ कमाङ- धमाङ

१२०

वग वग

१२१. खेवाथ (f or pl ayi ng)

१२२.

डखिह/ डखिन

१२३.



VIDEHA

लोकत लोक

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केशे (hair)

१४६.

केस (court -case)

१४७

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४८. जलनाथ

१४९. कबसी कसी

१५०. चवचा चर्चा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डूराँरै/ डूराँरै/ डूमाँरै डूमाँरै/ डूमाँरै

१५३. अथुनका/

अथुनका

१५४. वथ/ विथथ (राकक अंतिम गेह)- वथ

१५५. कथक/

केवक

१५६. गवमी गर्मी

१५७

. रवदी रदी

१५८. सुना गेवाह सुना/सुना२

१५९. एनाथ-गेनाथ

१६०.



VIDEHA

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१७९. नकिं / ले

१७९.

डरो डरो

१७३. कतह/ कतौ कही

१७४. उमबिगब-उमेबगब उमबगब

१७३. भकिगब

१७७. धोन/धोखव धोएन

१७१. गप/गप्प

१७४.

के के

१७९. दवरँज्जा/ दवरँजा

११०. ठाम

११९.

धबि तक

११२.

घुबि लोष्ट

११३. खोबरँक

११४. रँह

११३. चोँ/ चूँ

११७. तौहि (पद्यमे त्राह)

१११. चोँही / चोँहि

११४.

कबरौंअ कबरौंअये



VIDEHA

११९. एकेटा

१२०. कबिताथि / कबताथि

१२१.

पहुँचि/ पहुँच

१२२. बाखवन्हि बखवन्हि/ बखवनि

१२३.

वगवन्हि/ वगवनि वागवन्हि

१२४.

सुनि (उचावण सुअन)

१२५. अछि (उचावण अगछि)

१२६. एवथि गेवथि

१२७. रिंतोने/ रिंतोने

रिंतोने

१२८. कबरौवन्हि/ कबरौवनि

करेवन्हि/ करेवनि

१२९. कबएवन्हि/ कबएवनि

१३०.

आकि/ कि

१३१. पहुँचि/

पहुँच

१३२. रँगी जवाय/ जबाए जबा (आगि नगा)

१३३.

से से



VIDEHA

१९४.

हाँ ये हाँ (हाँये हाँ रिभक्तिभये ल्हा कथ)

१९५. **खेव खेव**

१९७. **कथव(spaci ous) खेव**

१९१. **होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि**

१९४. **हाथ मट्टिआथरै/ हाथ मट्टियारैय/हाथ मट्टियाथरै**

१९९. **खेका खेका**

२००. **देखाए देखा**

२०१. **देखारैय**

२०२. **सतवि सतव**

२०३.

साठेरै साठेरै

२०४. **गेवन्हि/ गेवन्हि/ गेवनि**

२०५. **हेरौक/ होयरौक**

२०७. **केनो/ कथनहुँ/केनो/ केनू**

२०१. **किछ न किछ/**

किछ ने किछ

२०४. **घुमेनहुँ/ घुमणहुँ/ घुमेनो**

२०९. **एवाक/ अथनाक**

२१०. **अः/ अह**

२११. **नय/**

कथ (अर्थ-पविरतन) २१२.कनीक/ कनेक

२१३. **सरैक/ सलक**

२१४. **मिना२/ मिना**



VIDEHA

२१७. क२/ क

२१७. ज२/

जा

२१९. खा२/ खा

२१९. भ२ / भ' (' बाल्टिक कमीक छ्वातक)

२१९. निश्चय/ नियम

२२०

लेकखव/ लेकखव

२२१. पहिब अक्षर टा/ रौदक/ रौचक ट

२२२. तहि/तहिं/ तखि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

तै / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नखि/ नहि/ले

२२६. तै/ तै / एवीतै/

२२७. छखि/ छै/ छैक / छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टियै

२२९. खा (come)/ खा२(conjunct i on)

२३०.

खा (conjunct i on)/ खा२(come)

२३१. कनौ/ कनौ, कनौ/कनौ

२३२. गेलौ- गेलौ- गेलौ

२३३. होरौक- होरौक

२३४. केलौ- केलौ- केलौ/केलौ



२३३. किछ न किछ- किछ ले किछ

२३७. केहन- केहन

२३९. आर (come)- आ (conjunction-and)/ आ । आर-आर / आर-आर

२३५. छत-ठत

२३६. घुमेनह- घुमएनह- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अवाक

२४५. होनि- होअन/ होहि

२४२. उ-वाम उ आमक रीच(conjunction), उ कहक (he said)/ उ

२४३. की छ/ कोसी अवी छ/ की है। की छ

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टिये

२४३.

. गोमिब/ सामेव

२४७. ते / तँ/ तधि/ तहि

२४९. जे

/ जाँ/ जाँ

२४५. सब/ सर

२४६. सबक/ सरक

२४०. कहि/ कही

२४५. कनो/ कोनो/ कोनह

२४२. कावकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२४३. कोना/ केना/ कनना/ कना

२४४. अ= / अह

२४३. जने/ जनए

२४७. गेवनि/



गेवाठ (अर्थ परिवर्तन)

२७१. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२७१. नय/ वय/ वयठ (अर्थ परिवर्तन)

२७२. कनीक/ कनेक/कनी-मनी

२७०. पठेवहि पठेवनि/ पठेवगन/ पपठेवहि/ पठेवनि/

२७५. निखम/ नियम

२७२. हेक्टअव/ हेक्टयव

२७३. पहिब अफब बहले ठ/ रीचमे बहले ठ

२७४. आकावाबुमे रिंकावीक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफीक प्रयोग फांस्टक तकनीकी नूनताक परिचायक ओकव रँदना अरग्रह (रिंकावी) क प्रयोग उचित

२७३. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२७७. डैन्धि- डन्धि

२७१. नगैए/ नगैये

२७४. होएत/ हएत

२७२. जाएत/ जएत/

२१०. आएत/ अएत/ आओत

२१५

. बाएत/ बाएत/ बैत

२१२. पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक

२१३. शुक/ शुकठ

२१४. शुकहे/ शुकए

२१३. अएताह/अओताह/ एताह/ ओताह

२१७. जाहि/ जाग/ जग/ जै/

२११. जागत/ जैतए/ जगतए



VIDEHA

२११. खाएव/ खाएन

२१२. कैक/ कथक

२१०. खायन/ खाएन/ खाएव

२११. जाए/ जखए/ जए (नानति जाए नगतीह ।)

२१२. नकएन/ नकाएव

२१३. कर्तुखाएव/ कर्तुखाएन

२१४. ताहि/ ते/ तथ

२१३. गायरौ/ गाएरौ/ गएरौ

२१७. सकै/ सकए/ सकय

२११. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेन)

२११. कठत बही/देखैत बही/ कठत छुलौ/ कठ छुलौ- अहिना छलैत/ पढैत

(पढै-पढैत अर्थ कखनो काव परिवर्तित) - खाव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी
रुदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै।
रचलै/ रचलैक। बखरौ/ बखरौक। बिन/ बिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत
केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आर बुमवर्ष।
ठमछ बुमै छी।

२१२. दुखावे/ द्वावे

२१०. भैष्ट/ भैष्ट/ भैष्ट

२११.

खन/ खान/ खना (भोव खन/ भोव खान)

२१२. तक/ धवि

२१३. ग२/ गै (meaning different - जनरौ ग२)

२१४. स२/ सँ (रुदा द२, न२)

२१३. त्र (तीन अक्षरक मेत रँदना पुनकजिक एक आ एकठा दोसबक उपयोग) आदिक
रँदना त्र आदि। महत्र/ महत्र/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त्र सहाजक कोनो आरथकता
मैथिलीमे नै अछि। रङ्गर



VIDEHA

२९७. रेसी/ रेसी

२९९. रौना/राना रौवा/ रना (बैरौना)

२९९

. रावी/ (रौदलेरावी)

२९९. राउता/ राउता

३००. खलुबख्खिय/ खलुबख्खिय

३०१. लेमथ/ लेमथ

३०२. वयडुका नयडुका

३०२. वागे/ वागे (

भैठैत/ भैठैत)

३०३. वागव/ वागव

३०४. हरौ/ हरौ

३०५. बाखक/ बाखक

३०६. आ (come)/ आ (and)

३०७. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०८. २ केव रारहाव शिद्धक खलुमे मात्र, यथासंभर रौचमे नै।

३०९. कठैत/ कठैत

३१०.

बख (डव)/ बैठ (डले) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाप/ खवाप

३१३. रौअन/ रौनि/ रौनि

३१४. जाठि/ जाठि

३१५. कागज/ कागज/ कागज



VIDEHA

३९७. गिले (meaning different - swallow)/ गिलण (थमण)

३९९. वासिदिय/ वासिदीय

DATE-LIST (year – 2012-13)

(९४२० रूपवी जाव (

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29



VIDEHA

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

Mundan Din:

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

FESTIVALS OF MITHILA (2012–13)

Mauna Panchami –08 July

Madhushravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July

Raksha Bandhan– 02 Aug

Krishnastami – 10 August



VIDEHA

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August

Vishwakarma Pooja - 17 September

Hartalika Teej - 18 September

Chauth Chandra - 19 September

Karma Dharma Ekadashi - 26 September

Indra Pooja Aarambh - 27 September

Anant Chaturdashi - 29 Sep

Agastya Ghadaan - 30 Sep

Pitri Paksha begins - 30 Sep

Jimotavahan Vrat / Jitima - 08 October

Matri Navami - 09 October

Somvati Amavasya Vrat - 15 October

Kalashsthan - 16 October

Belnauti - 20 October

Patrika Pravesh - 21 October

Mahastami - 22 October

Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagara - 29 Oct

Dhanteras - 11 November

Diyaoti, Shyama Pooja - 13 November



VIDEHA

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-14 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 15 November

Chhat hi -19 November

Devot t han Ekadashi - 24 November

r avi vr at ar ambh- 25 November

Navanna par van- 25 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 28 November

Vi vaha Panch mi - 17 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uar y

Basant Panch mi / Sar aswat i Pooj a- 15 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 17 Febr uar y

Mahashi var at ri -10 Mar ch

Hol i kadahan-Fagua-26 Mar ch

Hol i - 28 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -07 Apr il

Chai ti navar at r ar ambh- 11 Apr il

Juri shi t al -15 Apr il

Chai ti Chhat hi vr at a-16 Apr il

Ram Navami - 19 Apr il

Ravi Br at Ant - 12 May



VIDEHA

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -barasait - 08 June

Ganga Dashhara-18 June

Somavati Amavasya Vrat a- 08 July

Jagannath Rath Yatra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHIVE

बिदेह पत्रिकाक सब्झा प्रबान अंक ब्रै-बिदेह अ. तिवहता आ देरनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अंक ३.० पत्रिकाक पहिन-

बिदेह अम सँ आगाँ अंक ३.० पत्रिकाक-

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maitthili Books Download

३. डिजिटल संकलन अँ मैथिली. Maitthili Audio Downloads

४. मैथिली रीडियोक संकलन Maitthili Videos

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला. Mthila Painting/ Modern Art and Photos



-बिदेह-क एहि सब सहयोगी बिक्रम सेहो एक रेब जाड ।

७.बिदेह मैथिली क्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.बिदेह मैथिली जानरुत एग्रीगेटव :

<http://videha-aggregate.blogspot.com/>

४.बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.बिदेहक पूरि-कप "भारतसबिक गाछ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०.बिदेह अडेकल :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.बिदेह हागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहुता (मिथिलासब) जानरुत (बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रेब बिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका 'बिदेह' मैथिली पोथीक आकारगर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका 'बिदेह' ऑडियो आकारगर



VIDEHA

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिके ग्रा पत्रिका रेडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१+. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिके ग्रा पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१.१. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानरूत)

<http://maitthilaurmaitthila.blogspot.com/>

२.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com/>

२.१.<http://groups.google.com/group/videha>

२.२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२.३.गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२.४. नैना कुँठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२.५. बिदेह रेडियोसुठ सांकेतिकरिता आदिक पहिल पोडका-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२.७.  [Videha Radio](#)

२.९.  [Join official Videha facebook group.](#)

२+. बिदेह मैथिली नाँठ उमेर



VIDEHA

<http://maitthili-drama.blogspot.com/>

२९.समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्मस

<http://maitthilifilms.blogspot.com/>

३१.अनचिन्हाव आखब

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाणकु

<http://maitthili-haiku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maitthili.blogspot.com/>

३४. रिहनि कथा

<http://vihanikatha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maitthili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maitthili-katha.blogspot.in/>

३१.मैथिली समालोचना

<http://maitthili-samalochana.blogspot.in/>



महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) बिदेह द्वारा धारारहित रूपे अ-प्रकाशित कएव गेव गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-शरंकर-समीक्षा, उपन्यास (सहस्ररौठनि), पद्य-संग्रह (सहस्राक्षिक चौपडपव), कथा-गल्प (गल्प-गुह), नाटक(संकरषण), महाकार (ब्रह्महठ आ अस्मृति मन) आ रौव-किशौव साहित बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशिनक रौद प्रिंटे बर्गमे ।
ककशेवम् अन्तर्गमनक खन्ड-१ सँ १ Combined I SBN Nb.978-81-907729-7-6
बिबरण एहि पृष्ठापव नीचाँमे आ प्रकाशिकक साँठे <http://www.shrutipublication.com> पव ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अंठबनेठपव पहिल रैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एव. सरब आधाबित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. बिदेहक भाषापक- बचानेखन सुँभमे ।

ककशेवम् अन्तर्गमनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-शरंकर-समीक्षा, उपन्यास (सहस्ररौठनि), पद्य-संग्रह (सहस्राक्षिक चौपडपव), कथा-गल्प (गल्प-गुह), नाटक(संकरषण), महाकार (ब्रह्महठ आ अस्मृति मन) आ रौवमंडवी-किशौवजगत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशिनक रौद प्रिंटे बर्गमे ।
ककशेवम् अन्तर्गमनक, खन्ड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol . I to VI)- essay-paper-criticism novel , poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

७२ पृष्ठा : मूला भा. क. 100/- (for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi /NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US (including postage)



VIDEHA

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

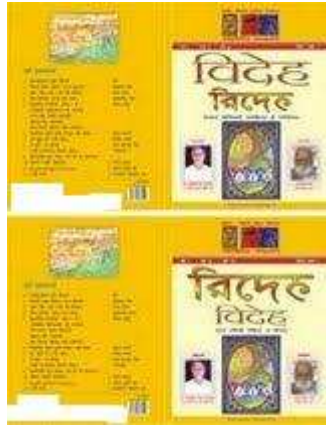
Details for purchase available at print-version
publishers's site

website: <http://www.shruti-publication.com>

or you may write to

e-mail: shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिवहता : देरनागरी 'बिदेह' क, प्रिण्ट संस्करण 'बिदेह-
ग्र-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क चूनव बचना सम्भविता ।



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print-version
publishers's site <http://www.shruti-publication.com> or you
may write to shruti_publication@shruti-publication.com

२. सदेशे-

[बिदेह ग्र-पत्रिका, बिदेह:सदेह मिथिलासभक आ देरनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खंडक-
निरंख-शुर्क-समीक्षा, उपन्यास (सहस्ररौठनि), पद्य-संग्रह (सहस्ररौठनि चोपडपर), कथा-गल्प



(गणप गृह), नष्टक (सर्कषण), महाकार (ब्रह्माहृत आ असङ्गति मन) आ बाव-मडवी-किशोव जगत- सङ्गह ककस्केतम् अतर्मिक मादे ।]

१. श्री गोरिन्द ना- रिदेहके तर्बगजावपव उतावि रिशुभविमे मातृभाषा मैथिलीक नहवि जगावत, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धवि सङ्ग नहि दए सकतहुँ । सुनेत छी अपनेके सुमाओ आ बचनामेक आलोचना प्रिय नगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल । हमव सहायता आ सहयोग अपनेके सदा उपनछ् बहत ।

२. श्री बमानन्द रेशु- मैथिलीमे ग-पत्रिका पाष्क कपेँ चना क२ जे अपन मातृभाषाक प्रचाव क२ बहन छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम ह्रदयसँ शुभकामना द२ बहन छी ।

३. श्री रिद्वानाथ ना "रिदित"- सचाव आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लारन हागमे अपन महिमामय "रिदेह"केँ अपना देहमे प्रकष्ट देखि जतराँ प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकवा कोनो उपनछ् "मौष्टव"सँ नहि नापन जा सकैछ ? ..एकव ईतिहासिक मुताकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शिताईक अंत धवि लोकक नजविमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकष्ट छैत ।

४. प्रा. उदय नावायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए बहन छी तकव चवचा एक दिन मैथिली भाषाक अतिहासमे होएत । खानन्द भए बहन अछि, ग जानि कए जे एतेक गोष्ट मैथिल "रिदेह" ग जर्नलकेँ पठि बहन छथि । ...रिदेहक चानीसम अंक पुरवराँक लेल अतिनन्दन ।

५. डा. गंगेशी गुंजन- एहि रिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत बंग, अतिहास मे एक ठाँ रिशिष्ट, क्वाक अणाय आर्बत कवत, हमवा रिशुस अछि । अशेष शुभकामना आ रँधागक सम्व, सम्वह...अहाँक पौथी ककस्केतम् अतर्मिक प्रथम दृष्ट्या रँहूत भर तथा उपयोगी बुनागछ । मैथिलीमे तँ अपना सुकपक प्रायः ग पहिले एहन भर अरतावक पौथी थिक । हर्षपूर्ण हमव हार्दिक रँधाग स्वीकार करी ।

६. श्री वामश्रिय ना "वामवंग"(आरँ सुर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ सर्षित...रिषय रसुसँ अरगत भेलहुँ । ...शेष सब कशिल अछि ।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित अकादमी- गँठवनेठ पव प्रथम मैथिली पाष्क पत्रिका "रिदेह" केव लेल रँधाग आ शुभकामना स्वीकार कक ।

८. श्री प्रफुल्लकमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाष्क पत्रिका "रिदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित ह्रदा रँसी आह्लादित भेलहुँ । कारचएकेँ पकडि जाहि दुवदृष्टिक पविचय देलहुँ, ओहि लेल हमव मंगलकामना ।



৯. ডা. শিরপ্রসাদ যাদব- ঙ জানি ঝপাব হর্ষ ভএ বহন ঝছি, জে নর সুচনা-ঙান্তিক ক্ষেত্রমে মৈথিলী পত্রকাবিতাকৈ প্ররেশি দিঝএরাক সাহসিক কদম উঠাওন ঝছি । পত্রকাবিতামে এহি প্রকাবক নর প্রযোগক হম স্নাগত করৈত ছী, সর্গহি "বিদেহ"ক সফলতাক শ্ভকামনা ।

১০. শ্রী ঝাঢ়্যাচবণা ঝা- কোনা পত্র-পত্রিকাক প্রকাশন- তাছমে মৈথিলী পত্রিকাক প্রকাশনমে কে কতেক সহযোগ কবতাহ- ঙ তহ ভরিশ্য কহত । ঙ হমব ++ রর্ষমে ৭৩ রর্ষক ঝনুভর বহন । এতেক পৈঘ মহান যক্তমে হমব শ্রীফাশ্রু ঝাহুতি প্রাপ্ত হোযত- যারত ঠীক-ঠীক ছী/ বহর ।

১১. শ্রী রিজয় ঠারুব- মিশিগন রিশুরিঢ়ানয়- "বিদেহ" পত্রিকাক ঝক দেখনহু, সম্পূর্ণ ঠীম রঁধাঙক পাত্র ঝছি । পত্রিকাক মর্গন ভরিশ্য হেত্ত হমব শ্ভকামনা স্রীকাব কএন জাও ।

১২. শ্রী স্রভাষচন্দ্র যাদব- ঙ-পত্রিকা "বিদেহ" ক রীরেমে জানি প্রসন্নতা ভেত । "বিদেহ" নিবন্তব পন্নরিত-পুষ্পিত হো ঝা চত্তর্দিক ঝপন স্রর্গধ পসাবয সে কামনা ঝছি ।

১৩. শ্রী মৈথিলীপত্র প্রদীপ- ঙ-পত্রিকা "বিদেহ" কেব সফলতাক ভগরতীসঁ কামনা । হমব পূর্ণ সহযোগ বহত ।

১৪. ডা. শ্রী ভীমনাথ ঝা- "বিদেহ" ঙল্টবনেষ্ট পব ঝছি তৈ "বিদেহ" নাম উচিত ঝাব কতেক কপৈ একব রিরবণা ভএ সকেত ঝছি । ঝাঙ-কান্ধি মোনমে উদ্ধগ বহত ঝছি, হুদা শীঘ্র পূর্ণ সহযোগ দেব । ককক্ষেত্রম্ ঝন্তুর্মনিক দেখি ঝতি প্রসন্নতা ভেত । মৈথিলীক ত্রেত ঙ ঘটনা ছী ।

১৫. শ্রী বামভরোস কাপডি "ভ্রমব"- জনকপ্রবধাম- "বিদেহ" ঙননাঙন দেখি বহন ছী । মৈথিলীকৈ ঝন্তুবর্ষিপ্রীয জগতমে পহুচেতহু তকবা ত্রেত হাদিক রঁধাঙ । মিথিলা বনে সভক সঁকনন ঝপূর । নেপালোক সহযোগ ভেষ্টত, সে রিশ্রাস কবী ।

১৬. শ্রী বাজনন্দন তানদাস- "বিদেহ" ঙ-পত্রিকাক মাধ্যমসঁ রঁড নীক কাজ কএ বহন ছী, নাতিক ঝহিঠাম দেখনহু । একব রার্ষিক ঝক জখন শ্রিষ্ট নিকানর তঁ হমবা পঠায়র । কনকভামে রঁহুত গোঠেকৈ হম সাঙঠক পতা তিখাএ দেনে ছিযন্ধি । মোন তঁ হোঙত ঝছি জে দিল্লী ঝারি কএ ঝশীরাদ দৈতহু, হুদা উমব ঝারি রেশী ভএ গেন । শ্ভকামনা দেশে-রিশদেশিক মৈথিলীকৈ জোডরাক ত্রেত । .. উক্বেষ্ট, প্রকাশন ককক্ষেত্রম্ ঝঁতর্মনিক ত্রেত রঁধাঙ । ঝন্তুত কাজ কএন ঝছি, নীক প্রস্তুতি ঝছি সাত খন্ডমে । হুদা ঝহাঁক সেরা ঝা সে নিঃস্রার্থ তখন রঁমত জাঙত জঁ ঝহাঁ দ্বাবা প্রকাশিত পোখী সভপব দাম তিখন নহি বহিতেক । ওহিনা সভকৈ রিতহি দেত জগতেক । (স্পষ্টীকবণা- শ্রীমান্, ঝহাঁক সুচনার্থ বিদেহ দ্বাবা ঙ-প্রকাশিত কএন সভষ্টা সামগ্রী



आर्कागरमे <https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot-hi/> पब रिना मुन्यक डाउनलोड लेन उपनरु छै आ भरिषामे सेहो बहतेक । एहि आर्कागरके जे कियो प्रकाशिक खनुमति नरु करु प्रिष्ठ कपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकव ओ दाम बखने छथि ताहिपब हमब कोनो निर्यत्रण नहि अछि । - गजेन्द्र ठाकुर)...

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे अठबनेठपब पहिन पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मात्रभाषानुवागक परिचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ मात्रभाषानुवागसँ प्रेरित छी, एकब निमित्त जे हमब सेराक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी । अठबनेठपब आद्यापात पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भइ गेल ।

१२. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह ङ-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भवि गेल । रिज्ञान कतेक प्रगति कइ बहन अछि...अहाँ सब खनुत आकाशिके भेदि दियो, समस्त रिज्ञाबक बहसके ताब-ताब कइ दियोक... । अपनक अद्भुत पुस्तक ककक्रेत्रम् अतर्मनक रिषयरसुक दृष्टिसँ गागबमे सागब अछि । रँपाङ्ग ।

१३. श्री हेतुकव न्या, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अपन मिथिला-मैथिलीक सेरामे तपेब छी से सुख अछि । देशीक बाजधानीसँ भय बहन मैथिलीक शिखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक रिवास अरथु करवत ।

१४. श्री योगानन्द न्या, करिनपुर, नहेरियासबाय- ककक्रेत्रम् अतर्मनक पोथीके निकटसँ देखरौक अरसब भेटन अछि आ मैथिली जगतक एकठा उद्धृष्ट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्त्याम्बरक कनमरन्द परिचयसँ आह्लादित छी । "बिदेह"क देरनागरी संस्करण पठनामे क. 80/- मे उपनरु भइ सकन जे रिभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित, परिचय पत्रक ओ बचनारलीक समक प्रकाशिनसँ इतिहासिक कहन जा सकैछ ।

१५. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे रहूत बास करिता, कथा, बिपोर्ष आदिक सचित संग्रह देखि आ आव अर्पिक प्रसन्नता मिथिलाम्बर देखि- रँपाङ्ग स्वीकार कएन जाओ ।

१६. श्री जीरकान्त- बिदेहक अद्भुत अंक पठन- अद्भुत मेहनति । चारस-चारस । किछु समालोचना मबखान..अदा सब ।

१७. श्री भानुचन्द्र न्या- अपनक ककक्रेत्रम् अतर्मनक देखि रूमाएन जेना हम अपन छपनरु अछि । एकब रिशीतकाय आहति अपनक सरसमारेणितक परिचायक अछि । अपनक बचना सामर्थ्यमे उन्नतबतव रूचि हो, एहि शुभकामनाक सर्ग हार्दिक रँपाङ्ग ।



२४.श्रीमती डा नीता मा- अहाँक ककस्केदम् अतर्मिक पठनहूँ । ज्जातिबिग्रिब शिद्धारनी, प्रथि मञ्ज शिद्धारनी आ सीत रँसत्रु आ सभ कथा, करिता, उपन्यास, रॉन-किशोब साहित सभ उतुम छन । मैथिलीक उतुबोतुब रिकासक नस्का दृष्टिगोचर होगत अछि ।

२३.श्री मायानन्द मिश्र- ककस्केदम् अतर्मिक मे हमर उपन्यास स्वीधनक जे रिरोध कएन गेन अछि तकब हम रिरोध करैत छी । ... ककस्केदम् अतर्मिक पौथीक नेन शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनाकेँ रिरोधक कपमे नहि नेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३.श्री महेंद्र हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककस्केदम् अतर्मिक पठि मोन हर्षित भ२ गेन..एखन पुवा पठयमे रँहूत समय नागत, झुदा जतेक पठनहूँ से आह्लादित कएनक ।

२१.श्री केदावनाथ चौधरी- ककस्केदम् अतर्मिक अद्भुत नागर, मैथिली साहित नेन ङ पौथी एकठ्ठा प्रतिमान रँनत ।

२५.श्री सलानन्द पाठक- रिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर सुकपक प्रशिसक छनहूँ । एम्बर अहाँक लिखन - ककस्केदम् अतर्मिक देखनहूँ । मोन आह्लादित भ२ उठन । कोनो बचना तवा-उपरी ।

२६.श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्पण । ककस्केदम् अतर्मिक प्रिष्टि कर्म पठि आ एकर गुणरत्ना देखि मोन प्रसन्न भ२ गेन, अद्भुत शिष्ट, एकरा नेन प्रहाज क२ बहन छी । रिदेहक उतुबोतुब प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र मा, पठना- रिदेह नियमित देखैत बँहत छी । मैथिली नेन अद्भुत काज क२ बहन छी ।

३५.श्री बामलोचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलान्स्कर रिदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भवि उठन, अंकक रिशान पविदृष्ट आसुसुकारि अछि ।

३२.श्री तारानन्द रियोगी- रिदेह आ ककस्केदम् अतर्मिक देखि चकरिदोब नागि गेन । आश्चर्य । शुभकामना आ रँपाङ्ग ।

३३.श्रीमती प्रेमनता मिश्र "प्रेम"- ककस्केदम् अतर्मिक पठनहूँ । सभ बचना उचकोष्टिक नागर । रँपाङ्ग ।

३४.श्री कीर्तिनाबायण मिश्र- रेंगुसबाय- ककस्केदम् अतर्मिक रँहु नीक नागर, आगांक सभ काज नेन रँपाङ्ग ।

३३.श्री महाप्रकाश-सहबसा- ककस्केदम् अतर्मिक नीक नागर, रिशानकाय सर्गति उतुमकोष्टिक ।



VIDEHA

३७.श्री अश्विपुष्प- मिथिलास्यव आ देवास्यव रिदेह पठन..अ प्रथम तँ अछि एकवा प्रशिसामे झुदा हम एकवा दूस्साहसिक कहरै । मिथिला चित्रकलाक सुसुकेँ झुदा अगिला अंकमे आव रिस्तुत रैनाडु ।

३९.श्री मंजव सुलेमान-दवडंगा- रिदेहक जतेक प्रशिसा कएत जाए कम हेएत । सब चाज उतम ।

३५.श्रीमती प्राफेसर रीणा ठाकुर- ककस्येवम् अंतर्मनक उतम, पठनीय, रिचावनीय । जे का देथेत छथि पोथी प्राप्त कवरौक उपाय पुष्टेत छथि । शुभकामना ।

३६.श्री छत्रानन्द सिंह ना- ककस्येवम् अंतर्मनक पठनहुँ, रँहु नैक सब तबहै ।

४०.श्री तावाकान्त ना- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- रिदेह तँ कन्ष्टेन्ट प्रागडवक काज क२ बहन अछि । ककस्येवम् अंतर्मनक अद्भुत नागर ।

४१.डा वरीन्द्र कुमार चौधरी- ककस्येवम् अंतर्मनक रँहुत नैक, रँहुत मेहनतिक परिषाम । रँपाज ।

४२.श्री अमवनाथ- ककस्येवम् अंतर्मनक आ रिदेह दुनु स्वरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मया ।

४३.श्री पंचानन मिश्र- रिदेहक रैरिषा आ निबन्धवता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना ।

४४.श्री केदाव कानन- ककस्येवम् अंतर्मनक जेन अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ रँपाज स्वीकार करी । आ नचिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागर जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेन अछि झुदा पोथी उनपैना पब ज्ञात भेन जे एहिमे तँ सब रिषा समाहित अछि ।

४७.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नैक काज क२ बहन छी । कोष्टे जैतबिमे चित्र एहि शिताईक जगतिथिक अनुसार बँहत त२ नैक ।

४७.श्री आशीष ना- अहाँक पुस्तकक सर्षमे एतरा निथरौ सँ अपना कए नहि रोकि सकनहुँ जे अ कितारै मात्र कितारै नहि थीक, अ एकठा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेरा सँ निर्वतव समूह होगत चिबजीवन कए प्राप्त कवत ।

४९.श्री शिशु कुमार सिंह- रिदेहक तपेवता आ फ्रियाशीरता देखि आलादित भ२ बहन छी । निश्चितकपेण कहन जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक अतिहासमे रिदेहक नाम सर्षकबिमे निथन जाएत । ओहि ककस्येवक घटना सब तँ अठावहे दिनमे खतम भ२ गेन बहए झुदा अहाँक ककस्येवम् तँ अशेष अछि ।



१५.डा. अजित मिश्र- अपनेक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जअरु कमे होएतेक ।
मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज हाग-हागालुब धरि पूजनीय बहत ।

१६.श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* आ *रिदेह:सदेह* पठि अति प्रसन्नता
भेल । अहाँक स्यासु ठीक बहए आ उमोह रैनन बहए से कामना ।

१७.श्री कृमाव बापावमण- अहाँक दिशा-निर्देशिमे *रिदेह* पठिन मैथिली अ-जर्नल देखि
अति प्रसन्नता भेल । हमब शुभकामना ।

१८.श्री कुनचन्द्र ना प्रदीप-रिदेह:सदेह पठने बही कदा *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* देखि
रैठ १अ देरौ नेन रौधा भ२ गेलहुँ । आरँ रिश्नास भ२ गेल जे मैथिली नहि मबत ।
अशेष शुभकामना ।

१९.श्री रिभूति खानन्द- रिदेह:सदेह देखि, ओकर रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।

२०.श्री मानेश्वर मनुज- *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* एकब भरता देखि अति प्रसन्नता भेल,
एतेक रिशील ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि देखने बही । एहिना भरिष्यमे काज
करैत बही, शुभकामना ।

२१.कुकुम्भेदम् अलुमनिक रिस्तार -कोनकाता.एम.आ.आ.आ -द्वानन्द नाश्री रि., दुपाङ्क
सर्ग गुरारता देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक धन्यवाद, कतेक रँबखसँ हम
नेयारैत छुनहुँ जे सभ पैघ शैबमे मैथिली नागरैवीक स्थापना होअए, अहाँ ओकरा
रैरँपब क२ बहन छी, अनेक धन्यवाद ।

२२.श्री अवरिन्द ठाकुर- *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* मैथिली साहित्यमे कएन गेल एहि तबहक
पठिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

२३.श्री कृमाव परन- *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* पठि बहन छी । किछु नघुकथा पठन अछि,
रैठुत मार्मिक छन ।

२४. श्री प्रदीप रिठारी- *कुकुम्भेदम् अलुमनिक* देखन, रँधाअ ।

२५.डा मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन रिनक्षण नियमित सेरासँ हमबा लोकनिक
द्वयमे रिदेह सदेह भ२ गेल अछि ।

२६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवाहनिय । दूथ हागत अछि जखन
अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क२ परैत छी ।

२७.श्री देरशैकब नरीन- रिदेहक निबन्धता आ रिशील सूकप- रिशील पाठक रञ्ज,
एकरा ईतिहासिक रँनरैत अछि ।



७१.श्री मोहन भावद्वारा- अर्थात् समस्त कार्य देखन, रूत नीक । एखन किछ परेशानीमे छी, ऊदा शीघ्र सहयोग देरै ।

७२.श्री रुजुवर बहमान हाशिया- ककश्लेदम् अतुर्मनक मे एतेक मेहनतक लेन अर्थात् साधुरादक अधिकारी छी ।

७३.श्री लक्ष्मण नारा "सागर"- मैथिलीमे चमकौबिक कर्पे अर्थात् प्रवेशी आह्लादकारी अछि । ..अर्थात् एखन आव..दुव..रूत दुवधरि जेरौक अछि । सुख आ प्रसन्न बही ।

७४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन- ककश्लेदम् अतुर्मनक पठनहुँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्ररौठनि पूर्णकपे पठि गेल छी । गाम-घबक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौठनिमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विरिधता खनलक अछि । समालोचना शास्त्रमे अर्थात् दृष्टि, वैयक्तिक नहि रबन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय ।

७५.श्री अशोक नारा-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद- ककश्लेदम् अतुर्मनक लेन रूपांग आ आर्गा लेन शुभकामना ।

७६.श्री ठाकुर प्रसाद ऊर्जा- अद्भुत प्रयास । धनुरादक सर्ग प्रार्थना जे अपन माष्टि-पानिके ध्यानमे बाधि अर्थात् समायोजन कएल जए । नर अर्थात् धरि प्रयास सवाहनिय । रिदेहके रूत-रूत धनुराद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा बहल छथि । सभैसा ग्रहणीय- पठनीय ।

७७.बृहन्नाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अर्थात् सम्पादन मे प्रकाशित 'रिदेह'आ 'ककश्लेदम् अतुर्मनक' विवरण पत्रिका आ विवरण पोथी । की नहि अछि अर्थात् सम्पादनमे ? एहि प्रयत्न से मैथिली क विकास होयत, निरसदेह ।

७८.श्री बृथेश चन्द्र तान- गजेन्द्रजी, अपनक पुस्तक ककश्लेदम् अतुर्मनक पठि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

७९.श्री पवनेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी । ककश्लेदम् अतुर्मनक पठि गदगद आ नेहार भेलहुँ ।

१०.श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- रिदेह पढैत बहल छी । धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपव आलेख पठनहुँ । मैथिली गजल कबहुँ से कबहुँ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानन-पहिचानन लोकक चर्च कएने छथि । जेना मैथिलीमे मठक पवम्पवा बहल अछि । (स्पर्शिकर्षण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे आ स्पष्ट, लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि बहरौक



द्वारे, एहिमे खान कोनो काब' नहि देखत जाय । अहाँसँ एहि विषयपर रिस्तृत खानेख सादर आमंत्रित छि । -सम्पादक)

११.श्री मंत्रेश्वर ना- रिदेह पठन आ सर्गहि अहाँक मैगनम उपस ककस्केदम् अर्तमनिक सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय छि ।

१२. श्री हरेन्द्र ना- ककस्केदम् अर्तमनिक मैथिलीमे अपन तबहक एकमात्र ग्रन्थ छि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचना कौशिल देखबामे आएन जे लेखकक फीडेडरकिसँ जूडन बहराक काब'सँ छि ।

१३.श्री सुकान्त सोम- ककस्केदम् अर्तमनिक मे समाजक अतिहास आ रतमानसँ अहाँक जूडन रँडु नीक लागत, अहाँ एहि स्केदमे आव आगाँ काज कवरँ से आशा छि ।

१४.प्राफेसब मदन मिश्र- ककस्केदम् अर्तमनिक सन कितारँ मैथिलीमे पहिले छि आ एतेक रिशीन संग्रहपर शोध कएन जा सकैत छि । भविष्यक लेन शुभकामना ।

१५.प्राफेसब कमला चौधरी- मैथिलीमे ककस्केदम् अर्तमनिक सन पोथी आरँए जे गुण आ रूप दूनूमे निम्न होखए, से रँडुत दिनसँ आकांक्षा छत, ओ आरँ जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन छि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा छि ।

१६.श्री उदय चन्द्र ना "रिनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएतहुँ छि से मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएने छत । शुभकामना । अहाँकेँ एखन रँडुत काज आव कवरँक छि ।

१७.श्री छत्रु कृमाव कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भँडै एकठ्ठा स्वर्णीय म्कण रँनि गेल । अहाँ जतेक काज एहि रँडुसमे क२ गेल छी ताहिसँ तज्जाव गुणा आव रँशीक आशा छि ।

१८.श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेन शिछ, नहि भँडैत छि । अहाँक ककस्केदम् अर्तमनिक सम्पूर्ण रूपेँ पठि गेलहुँ । ब्रह्माहृष्ट रँडु नीक लागत ।

१९.श्री हीरेन्द्र . कृमाव ना- रिदेह अ-पत्रिकाक सब अंक अ-पत्रसँ भँडैत बँहत छि । मैथिलीक अ-पत्रिका छैक एहि रँडुतक गरँ होगत छि । अहाँ आ अहाँक सब सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना ।



VIDEHA

बिदेह



मैथिली साहित्य खान्दान

(c)२००४-१२. सराधिकार लेखकाराधीन ङा जतए लेखकक नाम नहि ङडि ततए संपादकाराधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडव । सहायक संपादक: शिर कमार सा ङा झल्लारी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-संपादन: नागेश्वर कमार सा ङा पञ्चिकाव रिद्यानन्द सा । कला-संपादन: जगति सा चौधरी ङा बणि बेखा सिन्हा । संपादक-शोध-ङवर्षण: डा. जया रमा ङा डा. बाजारी कमार रमा । संपादक- नाटक-वर्गमच-चवचित्र- रैचन ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव ङा प्रिया सा । संपादक- ङवुराद रिभाग- रिनीत उपेव ।

बचनाकार ङपन मौरिक ङा ङप्रकाशित बचना (जकर मौरिकताक संपूर्ण उतबदायित्व लेखक गणक मध्य दुहि) ggajendra@videha.com के मेल ङष्टैचमैठक कपरमै .doc, .docx, .rtf रा .txt फार्मैटमे पठा सकैत दुधि । बचनाक सर्ग बचनाकार ङपन सक्किपु पबिचय ङा ङपन स्कैन कएत गेल होएते पठैतान, से ङाशि करैत दु । बचनाक ङंतमे षागप बहय, जे ङा बचना मौरिक ङडि, ङा पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङा पत्रिकारके देत जा बहन ङडि । मेल प्राप्त होयराक राद यथासंभर शीघ्र (सात दिनक भीतव) एकव प्रकाशिनक ङंकक सूचना देत जायत ।

बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङा पत्रिका ङडि ङा एहिमे मैथिली, संस्कृत ङा ङंग्रेजीमे मिथिला ङा मैथिलीसँ सरांपित बचना प्रकाशित कएत जायत ङडि । एहि ङा पत्रिकारके शीमति तस्मा ठाकुर द्वारा मासक ०१ ङा १३ तिथिके ङा प्रकाशित कएत जायत ङडि ।

(c) 2004-12 सराधिकार सुरक्कित । बिदेहमे प्रकाशित सभषा बचना ङा ङकारागरक सराधिकार बचनाकार ङा सग्रहकर्तिक तगमे दुहि । बचनाक ङवुराद ङा पुनः प्रकाशिन किरा ङकारागरक उपयोगक ङपिकाव किनराक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कर । एहि सागष्टके शीति न्ना ठाकुर, मधुनिका चौधरी ङा बणि प्रिया द्वारा डिजागन कएत गेल ।



VIDEHA



मिथिबडु

